Table of Contents

Start

एलिसन हरग्रीव्स

एक

कठिन दिन की गर्मी

छह क्लासिक उत्तर चेहरे एकल

'शायद दुनिया की सबसे बेहतरीन महिला पर्वतारोही'
ऑन द एज

अंतर्वस्तु

1. सपना और हकीकत 1
2 नॉर्थ फेसेस और अनफिनिश्ड बिजनेस 3
3 अल्पाइन मानसून 11
4 लेस कैलानक्स और लेस एक्रिन्स 19 में गियर में आना
5 महान जोरासेस 33
6 मैटरहॉर्न 47
7 आइगर 63
8 शैमोनिक्स इंटरल्यूड 81
9 पिज़ बैडिली 87
10 द डू 97
11 लारेडो की महान चोटी 107
परिशिष्ट
एक पर्वतारोहण डायरी 121
II पर्वतीय कालक्रम 123
III उपकरण और आपूर्ति 139
IV प्रायोजक और आपूर्तिकर्ता 145
V शब्दावली 151
VI ग्रंथसूची 157

विशेष धन्यवाद

'कोई भी इंसान अकेला नहीं रह सकता' और बहुत से लोगों की मदद और प्रोत्साहन के बिना यह साहसिक यात्रा और इसलिए यह किताब कभी संभव नहीं हो पाती।
सबसे पहले मैं अपने पति जिम बैलार्ड को उनके समर्थन और प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने यात्रा से पहले और पूरी यात्रा के दौरान, और बाद में शैमोनिक्स में भी मेरा साथ दिया, जब मैं बच्चों को जंगल की लंबी यात्राओं पर ले जाने के लिए कागजों से जूझ रही थी! साथ ही, मैं पर्वतारोहण साहित्य के प्रति उनके समर्पण के लिए भी उन्हें धन्यवाद देती हूँ, जिसके कारण ऐतिहासिक शोध संभव हो पाया।
मेरे माता-पिता, जॉयस और जॉन हार्ग्रीव्स, मैं उनकी सहायता और समर्पण के लिए सदा आभारी रहूंगा। मेरे पिता के वर्ड प्रोसेसर ने मेरे लिखे हुए को सुपाठ्य टाइप किए हुए अध्यायों में बदलने में कई घंटे बिताए हैं, और इस प्रक्रिया में उसका खूब इस्तेमाल हुआ है।
परिणाम को धैर्यपूर्वक समझने और संपादित करने के लिए मैगी बॉडी को विशेष धन्यवाद।
निम्नलिखित लोगों की मदद और मित्रता के बिना यह पुस्तक अस्तित्व में नहीं आ पाती: स्टीव आइसथॉर्प; डिक एलन; सू एशमोर; एरिक बेथके; पाउला बाइनर; बर्नार्ड कैस्पर; शैमोनिक्स

मौसम कार्यालय के सभी लोग; जॉन क्लियर; बेब इंग्लैंड; ओलाफ हैम्पे; बेंग्टा, रिके, हैनेस और अन्र्स्ट हैनसेन-मैग्नसन; फैमके और गेर्का हॉकस्ट्रा; स्टीव और एलेक्स हॉलैंड; मार्टिन जॉनसन; जाप लीमेइजर; शैमोनिक्स में ऑफिस डे हाउते मोंटेग्ने में नथाली मोनेट; मेके नागल; इयान पार्सन्स; डेव पेग्लर; पर्किन्स; एंड्रिया पिकार्ड; कार्लटन रीड; पीएल, कार्ला, लिंडा और मार्लोस स्कोल्टेन; रॉबर्ट और कैरिन श्रॉट; हिलेरी शार्प; डेव, कैट, क्लो और मॉर्गन शारॉक; स्प्रेवे में जॉन हंट, साइमन राइट, एनी, सैंडी, जॉन, बिल, कीथ और एंजेला; वाल्टर स्टिल; लार्स स्ट्रेब्लो। इयान (सड्स) सदरलैंड; इयान
स्पाइक साइक्स; मार्क ट्विग्ट; टॉम वैगहॉर्न; और केन विल्सन। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद, विशेष रूप से उन लोगों का जिनके नाम मैं भूल गया हूँ।
एलिसन हार्ग्रीव्स

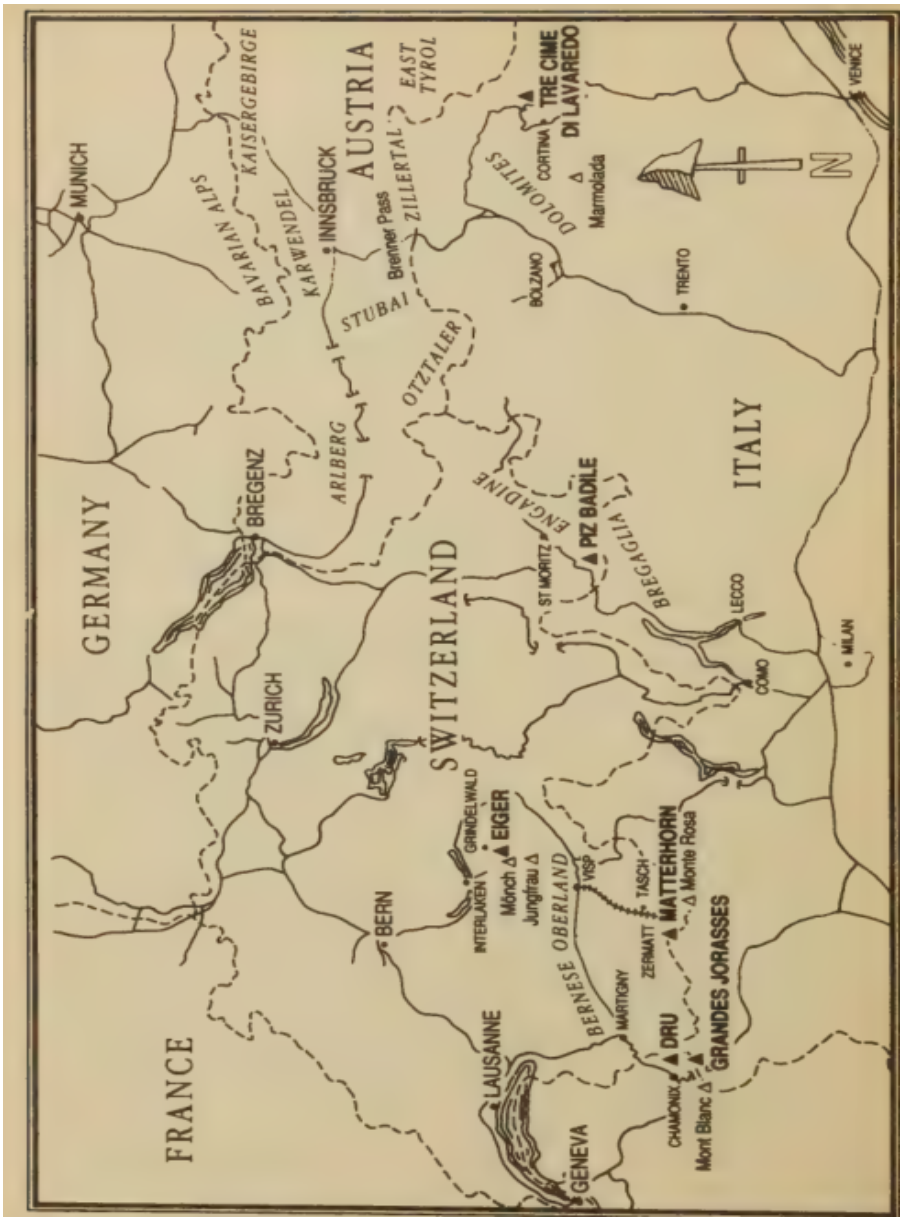

एलिसन हार्ग्रीव्स

1

सपना और हकीकत

इससे पहले मैं कभी भी इतने बड़े मिश्रित पर्वत श्रृंखला पर अकेले नहीं गया था। यह एक अद्भुत और रोमांचक अनुभव था जिसने मुझे पहले से कहीं अधिक स्वतंत्र महसूस कराया।

वाल्टर बोनाटी

मेरा सपना था कि मैं अपने परिवार के साथ, साढ़े चार साल के टॉम, दो साल की केटी और

अपने पति जिम (जेबी) के साथ, आल्प्स में पूरी गर्मी बिताऊं। मेरा उद्देश्य था कि मैं अलग-अलग क्षेत्रों में घूमकर कई तरह के पर्वतारोहण मार्गों पर चढ़ाई करूं, ताकि मुझे इतना आत्मविश्वास और अनुभव मिल सके कि मैं आल्प्स की छह महान और प्रसिद्ध उत्तरी चोटियों - ग्रांडेस जोरासेस, मैटरहॉर्न, आइगर, पिज़ बैडिली, डू और सिमा ग्रांडे - में से प्रत्येक पर एक ही मौसम में अकेले चढ़ाई करने के अपने लक्ष्य को पूरा कर सकूं।

योजना यह थी कि गर्मियों के महीनों में फिटनेस पर ध्यान दिया जाए ताकि 1992-93 की सर्दियों के अंत या वसंत के आरंभ में चढ़ाई शुरू की जा सके, जो मिश्रित मार्गों के लिए आदर्श समय होता है, और फिर मुख्य रूप से चट्टानी मार्गों वाली अंतिम तीन चढ़ाइयों को गर्मियों की शुरुआत में पूरा किया जा सके, तब तक चट्टानी रास्तों पर काफी अभ्यास हो चुका होगा। इस तरह हम अगस्त के व्यस्त मौसम से पहले ही शैमोनिक्स जैसी लोकप्रिय जगहों से दूर निकलकर आराम से अपना काम खत्म कर लेंगे।

इस आदर्श योजना में हम ब्रेगालिया और डोलोमाइट्स जैसे उन क्षेत्रों में से प्रत्येक का आनंद लेने में लगभग एक महीना बिता सकेंगे, जहां हम पहले कभी नहीं गए थे, उस क्षेत्र को जान सकेंगे और अपेक्षित उत्तरी ढलान पर चढ़ाई करने से पहले कई चढ़ाइयों का अभ्यास कर सकेंगे।

हकीकत कुछ अलग थी। अक्सर ऐसा ही होता है। हम मार्च 1993 में आल्प्स पहुंचे, जब लंबे समय से असामान्य रूप से सुहावने और शुष्क मौसम का दौर चल रहा था, और उस समय वसंत और गर्मी का मौसम सबसे खराब दौर की शुरुआत में था।

कई साल बीत गए। तारों भरी रातों में शांति की कामना करने की सारी उम्मीदें बारिश और तेज हवाओं के कारण चकनाचूर हो गईं। गर्मियों में कैंपिंग के सुखद सपने भी धराशायी हो गए, क्योंकि हर जगह कीचड़ ही कीचड़ था। रोजमर्रा की जिंदगी जीना ही एक कठिन काम बन गया था, ऐसे में फिटनेस बनाए रखने और ट्रेकिंग रूट्स पर जाने की प्रेरणा को बरकरार रखना तो दूर की बात थी।

वसंत ऋतु में देर से हुई बर्फबारी के कारण, जून के मध्य से पहले मैं चढ़ाई शुरू करने के बारे में सोच भी नहीं सका, और इसका मतलब यह था कि अगर मुझे सितंबर की शुरुआत में म्यूनिख में एक व्यापार प्रदर्शनी में भाग लेने की प्रतिबद्धता से पहले सभी छह चोटियों को पूरा करना था, तो हम उन नए क्षेत्रों का पता लगाने और उन्हें जानने के लिए बहुत कम समय बिता पाएंगे, जहां हमें जाना था।

एकमात्र राहत की बात यह थी कि बिग सिक्स पर चढ़ाई शुरू करने से पहले मुझे जून के मध्य तक का समय मिल गया था, जिसका मतलब था कि मैंने तीन महीने तक लगातार पर्वतारोहण और प्रशिक्षण किया था। परिणामस्वरूप, मेरी चढ़ाई तेज़ और आनंददायक रही। और सबसे अच्छी बात यह थी कि मैं पूरे कार्यक्रम को रिकॉर्ड समय में पूरा करने में सफल रहा।

2

उत्तर दिशा की ओर मुख और अधूरा काम

दुनिया तीर की तरह नहीं, बल्कि बूमरैंग की तरह चलती है।
राल्फ एलिसन
जब मैं किशोर था और स्कूल में पढ़ता था, तभी से मैंने हेनरिक हैरर की पहली पर्वतारोहण पुस्तक, 'द व्हाइट स्पाइडर' पढ़ी थी। तब से ही मैं जंगली और बर्फीले स्थानों से मोहित रहा हूँ। जल्द ही मैं पर्वतारोहण और उसकी तकनीक में और अधिक मग्न हो गया, जो धीरे-धीरे आल्प्स पर्वतमाला और उसकी प्रसिद्ध चोटियों के प्रति गहरी रुचि में बदल गई।
दस साल पहले स्विट्जरलैंड की अपनी पहली यात्रा पर ही मैंने पहली बार इस तरह का अनुभव किया था। 1983 में ईस्टर के मौके पर, मेरे एक अच्छे दोस्त इयान पार्सन्स और मैं दो सप्ताह के राशन से लदे हुए टैश के विशाल पार्किंग स्थल तक गाड़ी से गए और फिर ट्रेन से जगमगाते हुए ज़ेरमैट गाँव तक पहुँचे। वहाँ मौजूद कुछ बुजुर्ग स्की-टूरिस्टों ने इयान को सलाह दी कि युवा लड़कियों को पहाड़ों में ले जाना बहुत खतरनाक है, लेकिन हम फिर भी खूबसूरत गोर्नरग्रैट रेलवे से आल्प्स पर्वतमाला की ओर चल पड़े। पहाड़ी स्की और बड़े-बड़े बैग पहनकर हम एक चौड़ी खाई से होते हुए उस ग्लेशियर की ओर तेज़ी से नीचे उतरने लगे, जिस पर हमें चढ़ना था।
स्की पर्वतारोहण का मेरा पहला प्रयास शिक्षाप्रद और थका देने वाला साबित हुआ! ग्लेशियर पर ताज़ी और गहरी बर्फ़ थी, जिसका मतलब था कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे, स्की भी बर्फ़ में धंसती जा रही थीं। मैंने शौचालय जाने के लिए अपनी स्की उतारी और खुद को पलटा हुआ पाया, कमर तक बर्फ़ में धंसा हुआ। स्की को दोबारा पहनकर, मैंने पोल की मदद से खुद को संभाला और फिर से आगे बढ़ने के लिए तैयार हो गया। मैं सीख रहा था।
3
एलिसन हार्ग्रीव्स
हम धीरे-धीरे टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होते हुए विशाल बर्फीले टीलों के बीच से गुज़रते हुए अपने लक्ष्य, लिस्कैम के विशाल उत्तरी मुख की ओर बढ़ रहे थे। बाईं ओर मोंटे रोजा पर्वतमाला का विशाल विस्तार और दाईं ओर फैला लिस्कैम का विशाल इलाका, एक अद्भुत घाटी थी। हमारी योजना ग्लेशियर पर रात बिताने और फिर अगले दिन उत्तरी मुख पर चढ़ाई करने की थी।
आस-पास इतनी ताज़ी बर्फ़ थी कि हमने रात बिताने के लिए एक बर्फ़ की गुफा खोदने का प्लान बनाया। क्षैतिज रूप से और फिर थोड़ा नीचे की ओर खोदते हुए, हमने वाटरप्रूफ टॉप, बॉटम और दस्ताने पहनकर रात के लिए अपना आश्रय खोदना शुरू किया। बारी-बारी से फावड़ा चलाते हुए, मैंने पाया कि इयान आगे की तरफ खोदने में कहीं ज़्यादा कुशल था, इसलिए जैसे-जैसे हम गहराई में जाते गए, हमारी तकनीक यह हो गई कि इयान खोदता और मैं उत्सुक तिल की तरह उसके पीछे बर्फ़ को खुरचता और फैलाता जाता। थोड़ी ही देर में हमारा एक गर्म और सुरक्षित घर बन गया और हमने पतली इंसुलेटिंग मैट और कैटरपिलर जैसे गोर-टेक्स बिवाक बैग में सूखे रखे डाउन स्लीपिंग बैग जैसी विलासिता की चीज़ें तैयार करना शुरू कर दिया। भोजन और पेय हमारी प्राथमिकता सूची में अगले स्थान पर थे। हमने गैस स्टोव निकाला, बिली को गुफा की दीवारों से बर्फ़ से भरा और उसे पिघलाया। अलमारियों की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि हम बर्फीली दीवारों में चम्मच और चाकू डाल सकते थे, और हमारे सभी चढ़ाई के उपकरण बर्फ़ के स्क्रू से लटकाए जा सकते थे। हमने अपने स्की-स्टिक प्रवेश द्वार पर खड़ी कर दीं, ताकि अगर रात में भारी बर्फबारी

के कारण हम फंस जाएं, तो कम से कम बाहर किसी को तो पता चल जाए कि हम कहां दबे हुए हैं! या कम से कम हमने यही सोचा था।
चूल्हा धीमी आवाज़ में जल रहा था और मैं अपने सारे कपड़ों - डाउन जैकेट, वाटरप्रूफ, टोपी, दस्ताने - में स्लीपिंग बैग के अंदर आराम से लेटा हुआ था। मैं मुस्कुराया और मुझे शांति महसूस हुई। सादगी ही मेरी खुशी थी।
रात में बाहर तेज़ हवा की आवाज़ से मेरी नींद खुल गई। हमने अपने पुराने पैंट और बैकपैक का इस्तेमाल करके प्रवेश द्वार को बंद कर दिया और बर्फ़ की कुल्हाड़ियों से उसे सहारा दिया ताकि ठंडी बर्फ़ की लगातार बौछारें किनारों से अंदर न आ सकें। शायद यही तूफ़ान था जिसके कारण कल स्की-टूरिस्ट तेज़ी से पहाड़ से नीचे उतर रहे थे, वे दिखाई देने वाले बादलों की ओर इशारा कर रहे थे और दक्षिण हवा के बारे में कुछ बुदबुदा रहे थे, जबकि हम धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ रहे थे। काले बादलों और दक्षिण हवाओं का, जिनका मैंने बाद में सम्मान करना सीख लिया, संकेत था कि चौबीस घंटे के भीतर खराब मौसम आने वाला है। स्कीयर तेज़ी से नीचे उतर रहे थे, जबकि हम उसका अनुभव करने के लिए ऊपर जा रहे थे!
नाश्ता हो गया था - और अब चलने का समय था। उजाला हो चुका था, या लगभग हो ही गया था, लेकिन हमारी स्की कहाँ थीं? कल रात वे कम से कम चार फीट पानी से बाहर निकली हुई थीं।
4

एक कठिन दिन की गर्मी
बर्फ का तो नामोनिशान ही नहीं था! हमने अपना सारा सामान अपने बैगों में भर लिया था और सारे अतिरिक्त कपड़े पहन रखे थे। हम तब तक खोजते रहे जब तक हमें हमारी स्कीज़ नहीं मिल गईं। इतनी ताज़ी बर्फ और हिमस्खलन की गड़गड़ाहट के बीच, लिस्कैम के उत्तरी हिस्से में उस सुबह रहना खतरनाक था, इसलिए हम वापस नीचे उतर गए।
स्कीइंग का मुझे कोई अनुभव नहीं था, और भारी भरकम बैग लेकर ढलान पर उतरने का तो सवाल ही नहीं उठता था, इसलिए मुझे अपनी गति को नियंत्रित करने के लिए एक अनोखी तकनीक विकसित करनी पड़ी। हालांकि आसपास के स्की-टूरिस्ट ग्लेशियर के निचले हिस्से में स्थित छोटी लेकिन खड़ी ढलान से तेज़ी से और सटीक मोड़ लेते हुए नीचे समतल ढलानों पर पहुँच जाते थे, लेकिन मैं सावधानी से फिसलते हुए नीचे तक पहुँचा, अपनी स्की की नोकों को अंदर की ओर मोड़कर बर्फ को हटाता और अपनी गति को धीमा करता रहा, जिससे अधीर स्कीयर परेशान हो गए।
ज़र्मैट वापस आकर हमारी इयान के दोस्त जिम फोदरिंगहैम और उनके साथी से थोड़ी देर के लिए मुलाकात हुई और हमने उनसे पूछा कि मैटरहॉर्न के उत्तरी भाग पर चढ़ाई का उनका प्रयास कैसा रहा। हमारी तरह वे भी खराब मौसम के कारण वापस लौट आए थे, लेकिन उन्होंने बताया कि चढ़ाई के दौरान स्थितियाँ अच्छी थीं। अब वे कुछ दिनों के लिए ढलान पर स्कीइंग करके सुकून पाने की सोच रहे थे। इसलिए इयान और मैंने भी मैटरहॉर्न के उत्तरी भाग पर चढ़ाई का प्रयास करने के लिए हॉर्नली हट जाने का फैसला किया।

चट्टानी पहाड़ी पर दिनभर की थका देने वाली चढ़ाई के बाद, बर्फ से ढके गहरे रास्ते से भटकने के बाद, हम आखिरकार विशाल और शानदार जगह पर स्थित हॉर्नली होटल और हट पर पहुँचे। दोनों बंद थे। लेकिन ऑफ-सीज़न में, जब हट की देखरेख कोई संरक्षक नहीं करता, तो शीतकालीन कक्ष पर्वतारोहियों के लिए खुला रखा जाता है। इसलिए हमने बगल में लगी धातु की सीढ़ी का इस्तेमाल करके ऊपर की खिड़की से उस अंधेरे और रहस्यमय शीतकालीन आश्रय में प्रवेश किया।

मैंने अपने चमड़े के डबल बूट उतारे, लेकिन तभी मेरी एक एड़ी में असहनीय दर्द होने लगा, जो सालों पहले एक दुर्घटना में टूट गई थी। मेरे नए टूरिंग बूट गलत जगह पर रगड़ खा रहे थे। इयान को आखिरकार प्राथमिक चिकित्सा किट में कुछ दर्द निवारक दवा मिल गई, और फिर थोड़ी राहत मिली।

लेकिन मौसम में कोई बदलाव नहीं आया। अंततः हम नीचे उतरने लगे, पहाड़ पर होना हमारे लिए सौभाग्य की बात थी, लेकिन कुछ काम अधूरा रह गया था जिसे पूरा करने के लिए हमें वापस लौटना था।

1983 की उस शरद ऋतु में, उत्तरी ढलानों के प्रति मेरा आकर्षण जारी रहा। मैंने अपना पहला अल्पाइन मार्ग, फ्रेंडो स्पर के रास्ते एगुइल डू मिडी की उत्तरी ढलान पर चढ़ाई की। इसके बाद टूर रोंडे की उत्तरी ढलान पर चढ़ाई का लक्ष्य रखा और शानदार मौसम में अंतिम दस दिन नई और क्लासिक रॉक क्लाइम्बिंग में बिताए। अगले मई के अंत में, मैंने एक और चढ़ाई शुरू की।

5

एलिसन हार्ग्रीव्स

पार्सन्स और मैं एक बार फिर हॉर्नली हट पर थे, उत्तरी ढलान पर चढ़ाई करने के नए इरादे के साथ। हालांकि, भारी बर्फबारी और खराब मौसम ने एक बार फिर हमारे प्रयासों को विफल कर दिया।

हम चामोनिक्स वापस लौट रहे थे और घर की ओर चलने ही वाले थे कि तभी हमारी नज़र एगुइल डू मिडी टेलीफेरिक के शीर्ष स्टेशन से आई अच्छी मौसम रिपोर्ट पर पड़ी। इसका मतलब था कि हम आखिरकार एक प्रमुख मार्ग, मोंट ब्लैंक डू टैकुल पर स्थित सुपर कौलॉयर पर चढ़ाई कर सकते थे।

जून 1984 में, इयान के साथ शैमोनिक्स में वापस आकर, हमने एगुइल डू पेइग्ने पर वाउचर मार्ग पर अभ्यास किया और फिर अर्जेंटियर बेसिन के शानदार हिमनदी क्षेत्र में चढ़ाई की। अगली सुबह तड़के, हम अर्जेंटियर हट से निकले, रात भर की ठंड के बाद जमे हुए हिमनद को पार करते हुए, लेस कोर्टेस के उत्तरी भाग के आधार तक पहुँचे। हमने स्विस मार्ग से चढ़ाई की और उत्तर-पूर्व कौलॉयर से नीचे उतरे, सावधानीपूर्वक नीचे उतरते हुए हिमनद तक पहुँचे, जो झोपड़ी की ओर वापस आते-आते भूरे से गीले गुलाबी रंग में बदल गया था।

अगले दिन, भोर से पहले ही, हम हेडलाइट की रोशनी में जमी हुई ग्लेशियर पर फिर से निकल पड़े। ग्लेशियर के बीचोंबीच पहुँचकर हमने क्रैम्पोन पहने, रस्सियाँ बाँधीं और ट्रियोलेट के उत्तरी भाग पर चढ़ाई शुरू कर दी। हमें उम्मीद थी कि यह चढ़ाई पिछले दिन की तुलना में आसान होगी, लेकिन यह कहीं अधिक कठिन और चुनौतीपूर्ण साबित हुई। बर्फ काली, सख्त और अडिग थी।

हर बार जब हम पिक लगाते, तो बर्फ टूट जाती और कभी-कभी मज़बूत पकड़ बनाने के लिए दो-तीन बार कोशिश करनी पड़ती। यह एक थका देने वाली चढ़ाई थी, लेकिन हमने इसे पूरा कर लिया।

पश्चिमी ढलान से होते हुए कूवरकल हट तक और फिर घाटी तक एक लंबी और जटिल ग्लेशियर यात्रा के बाद, हमने जमकर जश्न मनाया। इयान की मुलाकात न्यूजीलैंड के एक पुराने दोस्त से हुई और उनकी मुलाक़ात देर रात तक चली। थका हुआ और बेचैन महसूस करते हुए मैं जल्दी निकल गया। मौसम अभी भी अच्छा था, हम सब तंदुरुस्त थे, और हमारे पास अभी भी समय था।

ज़र्मैट के होटल बाहनहोफ़ में फ्राउ पाउला बाइनर को फ़ोन करने पर हमें उत्साहवर्धक जवाब मिला। उन्होंने बताया कि गाइड अगले दिन उस साल पहली बार क्लासिक हॉर्नली रिज पर चढ़ाई करने वाले थे। मैटरहॉर्न पर मौसम अनुकूल लग रहा था।

हम सब बड़े उत्साह से कार में सवार हो गए। इयान की हालत खराब थी, इसलिए मैं गाड़ी चलाकर स्विट्जरलैंड और टैश के पार्किंग स्थल तक गया। जैसा वादा किया गया था, अगले दिन हॉर्नली हट पर मौसम साफ था और भोर होते ही हम बर्फ के मैदान पर काफी ऊंचाई पर पहुंच चुके थे, जहां हमने अद्भुत सूर्योदय का आनंद लिया। जब हम शिखर पर पहुंचे तो दोपहर ढल रही थी। उस पल की अपार खुशी हमारे दिल को छू गई। हालांकि, शिखर की चोटी से अभी भी 1700 मीटर की कठिन चढ़ाई बाकी थी।

6

एक कठिन दिन की गर्मी

हम हॉर्नली हट पर थे और काफी देर हो चुकी थी। हम वहां ज्यादा देर नहीं रुक सकते थे, इसलिए नीचे उतरने का फैसला किया। कुछ व्यस्त दिनों की थकान से चूर होकर, मैंने शुरुआती खड़ी चट्टानी ढलान पर बंधी बड़ी रस्सियों को कसकर पकड़ लिया, इससे पहले कि ज़मीन थोड़ी समतल और कम खतरनाक हो जाए। रात हो चुकी थी और हमें सोल्वे आपातकालीन बिवाक हट नहीं मिली थी, जो आठ लोगों के सोने के लिए पर्याप्त जगह और आपात स्थिति के लिए एक रेडियो टेलीफोन वाली एक छोटी सी लकड़ी की झोपड़ी थी। हम अगली चट्टानी कगार पर लेट गए जो हमें मिली। थका हुआ, प्यासा और भूखा, मैं अपने कागज़ के बिवाक बैग में घुस गया, जो बिल्डरों द्वारा अस्थायी आवरण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री से बना था, और गहरी नींद में सो गया। बेचारे इयान के पास बिवाक बैग नहीं था और जले पर नमक छिड़कने वाली बात यह थी कि मेरे बिवाक बैग की लगातार चरचराहट ने उसे पूरी रात जगाए रखा। अगली सुबह हॉर्नली रिज पर सीज़न के पहले गाइडों और ग्राहकों के दल द्वारा जगाए जाने पर मुझे गुस्सा आया, जबकि इयान हिल-डुल पाने और गर्म होने की खुशी से झूम उठा। हमें स्विस गाइड से किसी बधाई या शुभकामना की उम्मीद नहीं थी, शायद मेरी ही तरह, सुबह-सुबह उनका मूड ठीक नहीं था और उन्हें इस बात से खुशी नहीं थी कि दो ब्रिटिश नागरिक उनकी पेशेवर सेवाओं के बिना ही 'उनके' पहाड़ के उत्तरी हिस्से पर चढ़ाई कर रहे हैं। उनका जवाब था कि उनका बेटा तो इसे कहीं जल्दी चढ़ सकता था! तो, उनकी शुभकामना से थोड़ा उत्साहित होकर हम नीचे उतरने लगे।

झोपड़ी का रखवाला ज़्यादा विनम्र था, लेकिन हैरान भी! हम श्वार्ज़सी झील की ओर नीचे उतरे, जहाँ हम खूबसूरत पानी के किनारे, फूलों की खुशबू से महकते हरे-भरे तटों पर धूप का आनंद ले रहे थे। अब दोपहर का मौसम शानदार था। देखते ही देखते ज़र्मैट उतरने का समय आ गया और होटल बाहनहोफ़ में मुझे श्रीमती पाउला बाइनर की गर्मजोशी, मित्रता और उदारता का पहला अनुभव मिला। उनके प्रसिद्ध गाइड भाई बर्नार्ड कई पर्वतारोहियों, विशेषकर अंग्रेज़ पर्वतारोहियों के मेज़बान और मित्र रहे हैं। उनके निधन के बाद पाउला ने उनकी भूमिका जारी रखी। उनकी शुभकामनाओं ने दोपहर की चाय का रूप ले लिया, जिसका हमने विनम्रतापूर्वक आनंद लिया। अंततः, मैंने उस खूबसूरत पर्वत, मैटरहॉर्न पर चढ़ाई कर ली थी - और मेरी उत्सुकता और बढ़ गई थी। मुझे अभी और भी कई पर्वतों पर चढ़ना था। 1985 की शरद ऋतु में मैं फिर से आल्प्स में लौटा और उत्तरी ढलानों के प्रति अपने आकर्षण को पूरा करने के लिए निकल पड़ा। इस बार लक्ष्य था ग्रांडेस जोरासेस। चेरे कौलॉयर, मोंट ब्लैंक डू टैकुल पर अनुकूलन करने के बाद, इयान पार्सन्स और मैंने अपनी सारी ऊर्जा क्रोज़ स्पर की शानदार पर्वत श्रृंखला पर शरद ऋतु में चढ़ाई करने में लगा दी।

दो हिमालयी अभियानों के बाद, कांगटेगा, लोबुचे, ल्होत्से शर और अमा डबलाम - और 1987 की शरद ऋतु में मैं फिर से ग्रांडेस जोरासेस के आधार पर लौट आया। आइगर के उत्तरी मुख पर खराब मौसम के कारण निराशा हाथ लगने के बाद, फिल डिकेंस और मैं तेजी से आगे बढ़े।

7

एलिसन हार्ग्रीव्स

मैं कुछ ही दिनों में शुरू होने वाली एक फिल्म की शूटिंग से पहले पर्वतारोहण की उम्मीद में शैमोनिक्स गया था।

सुहावने मौसम की उम्मीद में हम तेजी से मेर डे ग्लेस की ओर बढ़े और शाम के लिए लेस्चॉक्स हट में ठहर गए। सुबह जल्दी शुरुआत करने के कारण हम जल्द ही बेहतरीन मौसम में श्राउड की उस शानदार बर्फीली चढ़ाई के शिखर पर पहुँच गए और शाम तक मोंटेनवर्स स्टेशन वापस आ गए।

बहुत कम ही ऐसे पर्वतारोही होते हैं जो आल्प्स में अपना सीज़न बिना कोई अधूरा काम छोड़े समाप्त करते हैं (या फिर वे बेहद भाग्यशाली होते हैं, या फिर उनमें महत्वाकांक्षा की कमी होती है)। 1987 में मेरा सीज़न आइगर पर्वत पर समाप्त हुआ था, इसलिए अगली गर्मियों में मैं स्टीव आइसथॉर्प के साथ आइगरवांड पर 1938 के मूल मार्ग की 50वीं वर्षगांठ पर चढ़ाई करने के लिए वापस गई। मैं उत्तरी मुख पर चढ़ने वाली पहली ब्रिटिश महिला थी और एक और रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया। क्योंकि तब तक मेरी शादी जिम बैलार्ड से हो चुकी थी और जब मैंने आइगर पर चढ़ाई की थी तब मैं साढ़े पाँच महीने की गर्भवती थी। टॉम का जन्म अक्टूबर में हुआ था।

1989 की अगली शरद ऋतु तक टॉम अच्छी तरह से बढ़ रहा था और मैं फिर से अपने महान उत्तरी पर्वतों की ओर लौट आया था। स्टीव आइसथॉर्प और मैंने अर्जेंटियर ग्लेशियर बेसिन पर हावी पर्वत श्रृंखला, लेस ड्रोइट्स पर चढ़ाई की। कॉर्नेउ-डावेल की ठंडी और बर्फीली चढ़ाई, जिसका समापन शी-जैक्सन से हुआ। पहाड़ ठंडा था, दिन छोटे थे और शिखर से उतरना मुश्किल

था। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उत्तरी पर्वतों के प्रति मेरा जुनून खत्म हो गया था। कुछ शानदार चढ़ाइयों और अद्भुत पहाड़ों पर चढ़ाई करने के बाद, मेरा ध्यान गर्म चट्टानों और धूप वाले दिनों की ओर मुड़ गया। फिर भी, वे उत्तरी पर्वत मेरे सपनों से विमुख नहीं हो रहे थे।
हमारी दूसरी संतान, केट, का जन्म 1991 में हुआ और जैसे-जैसे वह बड़ी हुई, मुझे एक बार फिर से पर्वतारोहण शुरू करने की तीव्र इच्छा हुई। जब बच्चे छोटे थे, तब आगे की योजना बनाना मुश्किल था और हम शामों और सप्ताहांतों में परिवार के साथ स्थानीय चट्टानों पर जाने लगे। यहीं से मैंने गंभीरता से बोल्डरिंग शुरू की और फिर धीरे-धीरे अधिक ऊँचाई और कठिनाई वाली पर्वतारोहण की कोशिश करने लगा। पीक और यॉर्कशायर ग्रिटस्टोन पर शानदार गर्मी की दोपहरों ने मेरी फिटनेस और आत्मविश्वास को बढ़ाया। वेल्स में बिताए दिन भी इसमें सहायक रहे, जहाँ मैं अपने माता-पिता के पेनमैनमावर स्थित कॉटेज में रहता था और उन उत्कृष्ट क्लासिक पर्वतारोहण का अनुभव करता था जिन्हें करने का मौका मुझे पहले कभी नहीं मिला था।
मुझे लगा कि अकेले पर्वतारोहण करना मेरे लिए उपयुक्त है। इसमें पूर्ण समर्पण की आवश्यकता होती है, जिसके लिए मैं पहले हमेशा तैयार नहीं रहता था। इससे मिलने वाली संतुष्टि ऐसी थी जिसका अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था। चट्टान और उसकी विशेषताओं के साथ एकरूप होना और सामंजस्य स्थापित करना बेहद रोमांचक और प्रेरणादायक था। इतना ही नहीं, मैं तेजी से और कुशलता से आगे बढ़ने का आनंद भी ले पा रहा था। मैं पर्वतारोहण के दौरान कभी भी धैर्यवान साथी नहीं रहा हूँ।
8

एक कठिन दिन की गर्मी
जैसे-जैसे रास्ते बढ़ते गए, वैसे-वैसे मेरी महत्वाकांक्षाएं भी बढ़ती गईं, और नए क्षितिज और विचार सामने आए। क्यों न मैं अपने नए कौशल को आल्प्स तक बढ़ाऊं?
मार्च 1992 में, मैंने अकेले ही शैमोनिक्स की यात्रा की, ताकि शीतकालीन आल्प्स पर्वतारोहण में अपना हाथ आजमा सकूँ। जैगर कौलॉयर और माज़ेउड कॉन्टामिन (दोनों मोंट ब्लैंक डू टैकुल पर स्थित) और एगुइल डी'अर्जेंटियर पर स्थित 'वाई' कौलॉयर जैसी कुछ पर्वतारोहण की सफल चढ़ाई के बाद, मैं पूरी तरह से फिट और अनुकूलित महसूस कर रहा था। अब बारी थी मैटरहॉर्न की!
हालांकि बर्फ की चादर बहुत भंगुर थी और परिस्थितियाँ आम तौर पर खराब थीं, इसलिए मैंने हॉर्नली रिज पर चढ़ाई करने का फैसला किया। साढ़े पाँच घंटे बाद और कई रस्सियों से घिरी टीमों को पार करने के बाद, मैं उस अद्भुत ऊंचे शिखर पर पहुँच गया।
योजना यह थी कि तेजी से नीचे उतरकर झोपड़ी में गरमागरम भोजन किया जाए!
लेकिन ऐसा नहीं हो सका। जिन पर्वतारोहियों से मैं मिला था, उनमें से कुछ अब वापस लौट चुके थे, क्योंकि उन्हें एहसास हो गया था कि शिखर उनकी पहुँच से बाहर है। लेकिन लंबी रस्सी न होने के कारण उन्हें नीचे उतरना और भी मुश्किल होता जा रहा था, इसलिए मैंने उनमें से पाँच को एक लंबी, ठंडी रात में नीचे उतारने में मदद की।
अगली सुबह के मध्य तक जाकर मैं उन्हें आखिरी आसान हिस्से के शिखर पर छोड़कर झोपड़ी

की ओर भागा। फिर अपने पैरों को देखकर मुझे कई उंगलियों में फ्रॉस्टबाइट के स्पष्ट लक्षण दिखाई दिए। चामोनिक्स के जिस अस्पताल में मैं चोट की जांच कराने गया, वहां के डॉक्टरों ने कम से कम बारह महीने तक अल्पाइन चढ़ाई न करने की सलाह दी! घबराकर मैं अच्छे इलाज के बाद घर लौट आया, सब कुछ ठीक होने से खुश था, लेकिन कुछ काम अधूरा रह गया था...

9

3

अल्पाइन मानसून

अबाबील और अमेज़न पक्षी सदा के लिए!

नैन्सी ब्लैकेट

मार्च 1993 के अंत में, और मेरे पहले अल्पाइन सीज़न के लगभग दस साल बाद, हम धूप से भरे शैमोनिक्स में वापस आ गए थे। हमने फरवरी के अंत तक वहाँ पहुँचने की उम्मीद और योजना बनाई थी, ताकि मुझे अपनी फिटनेस को बेहतर बनाने और वातावरण के अनुकूल ढलने के लिए पर्याप्त समय मिल सके और मैं 21 मार्च, यानी शीतकालीन मौसम के अंत से पहले बिग सिक्स में से किसी एक पर चढ़ाई कर सकूँ।

हालांकि, हकीकत यह थी कि मार्च के अंत तक ही सारी तैयारियां पूरी हो पाईं और हम आखिरकार काम शुरू कर पाए। 22 तारीख की सुबह देर से हमने आखिरकार पर्किन्स को गाड़ी में लाद दिया।

सामान और उपकरणों से भरी लैंड-रोवर। हमने कुछ बड़े नीले प्लास्टिक के औद्योगिक रसायन के बैरल खरीदे थे, जिन्हें अच्छी तरह से साफ करने के बाद, छत पर लगे रैक पर तिरछे रखने पर वे बिल्कुल फिट हो गए।

अपने माता-पिता के साथ दो दिन तक पैकिंग, लेबलिंग और सूची बनाने के बाद सत्रहों बैरल तैयार हो गए। पिताजी की मदद से मैंने आगे और पीछे की सीटें हटा दीं, जिससे एक खाली जगह बन गई, और पीछे की बेंच सीटों के नीचे बड़ी लकड़ी की अलमारियाँ लगा दीं ताकि उन्हें चौड़ा किया जा सके, सोने और बच्चों की सुरक्षा सीटों के लिए। घंटों की परेशानी और मशक्कत के बाद जेबी ने आखिरकार उन्हें सुरक्षित करने के लिए इनर्शिया सीट बेल्ट लगा दीं। बचे हुए कालीन के टुकड़ों और विलासिता के लिए ऊपर एक अतिरिक्त गलीचा बिछाकर, पर्किन्स को एक घर में बदल दिया गया। अब बस नक्शों और गाइडबुक के प्लास्टिक के डिब्बे, कटलरी, खाना पकाने के बर्तन, स्टोव, ईंधन और मसालों के प्लास्टिक के स्टैकिंग बॉक्स पैक करने, तकिए, स्लीपिंग बैग, मैट लोड करने और जाने के लिए बचे थे। लेकिन इससे पहले हमने अपने आप को किताबों से भरे बड़े-बड़े लिनन के कैर्नगॉर्म रोप बैग और बच्चों के पसंदीदा मुलायम खिलौनों से लद लिया था।

11

एलिसन हार्ग्रीव्स

बच्चों। आँसुओं और हाथ हिलाते हुए हम अपने माता-पिता के ढलानदार रास्ते से नीचे उतरकर दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क पर चल पड़े।

फ्रांस के ग्रामीण इलाकों में लगातार दो दिनों तक गाड़ी चलाने और जुरा में दूसरी रात रुकने के

बाद, हम जिनेवा पहुंचे और वहां से घाटी के रास्ते शैमोनिक्स की ओर चल पड़े। रास्ते में हमने एक बड़े बाज़ार जितना खाना खरीदा और अगले कुछ हफ्तों के लिए एक उपयुक्त ठिकाना तय करने में जुट गए।

हमने तय किया कि चूंकि रातें अभी भी ठंडी थीं और मौसम का पूर्वानुमान अनिश्चित था, इसलिए हम सभी की सुविधा के लिए पहले सप्ताह के लिए एक कारवां किराए पर ले लेंगे। स्थिर शुष्क सर्दियों का मौसम समाप्त होने वाला था, और दुर्भाग्य से हमें जल्द ही इसका पता चलने वाला था!

पहले हफ्ते में हम जल्दी ही एक तरह की दिनचर्या में ढल गए। केट हमें ठीक सात बजे जगा देती और जिम नाश्ते में दलिया बनाता और फिर अंडे तलता। हम नियमित रूप से शैमोनिक्स के मौसम स्टेशन जाते थे, लेकिन मौसम की दीर्घकालिक रिपोर्टें उत्साहजनक नहीं होती थीं। जब हम बर्फ की चादर से ढके आसमान के नीचे उठते, तो टॉम और केट को थकाने का सबसे अच्छा तरीका उन्हें लेस बॉसन्स पिस्ट पर आधे रास्ते तक स्लेजिंग पर ले जाना होता था। मैंने मन ही मन सोचा, दो बच्चों को स्लेज पर ऊपर खींचना अच्छी कसरत है।

जिन दिनों मौसम थोड़ा साफ होता, हम अपना सामान समेटकर घाटी में नीचे लेस हाउचेस की ओर जाते, जहाँ ठंडी लेकिन सूखी चट्टानों पर चढ़ाई करके अभ्यास करने से हमें थोड़ी राहत मिलती। एक दिन हमने कोल डेस मोंटेस पर नज़र डाली, लेकिन वहाँ अभी भी बहुत बर्फ थी, इसलिए हम वापस घाटी में ऊपर ला जूक्स की एक चट्टान पर चढ़ गए। बच्चे नीचे खुशी से खेल रहे थे, और मैंने सूरज डूबने से पहले पाँच रूट पूरे कर लिए। हालाँकि, मुझे एहसास हुआ कि इस भारी बर्फबारी के कारण ऊँची चढ़ाइयाँ करना संभव नहीं होगा। इसलिए, जब तक पहाड़ गर्म नहीं हो गए और बर्फ पिघल नहीं गई, मैं घाटी में ही सक्रिय रहा।

रविवार, 28 मार्च को केट का दूसरा जन्मदिन था और मौसम सुहाना था, इसलिए हम कुछ नया करने के लिए ले फायेत चले गए। जेबी बच्चों को एक खूबसूरत पार्क में ले गया जहाँ वे स्थानीय बच्चों के साथ लगभग तीन घंटे तक खेले और केट ने एक बार फिर अपना चश्मा खो दिया। जब हम वापस आए तो उसने भरोसेमंद तरीके से बताया कि उसने उसे कूड़ेदान में डाल दिया था! परिवार के साथ पिकनिक लंच के बाद हम सर्वोज़ होते हुए शैमोनिक्स की ओर वापस चल पड़े। लेकिन रविवार की भीड़ में धक्के खाने के बाद मुझे आराम की ज़रूरत थी, इसलिए हम कैंपसाइट लौट आए और मैं कुछ स्टेमिना बढ़ाने वाली कसरत की तलाश में निकल पड़ा। एक खड़ी पहाड़ी पर दौड़ते हुए लगभग 1900 मीटर की ऊंचाई पर गहरी बर्फ देखकर मैं रुक गया, लेकिन इसका इनाम कुछ और ही था।

12

एक कठिन दिन की गर्मी

मोंट ब्लैंक के शानदार नज़ारे। थका हुआ और तरोताज़ा होकर मैं जन्मदिन की चाय के लिए नीचे उतरा और केट ने मोमबत्तियाँ बुझाने की कोशिश की। उसे हम सभी का 'हैप्पी बर्थडे टू यू' गाना बहुत पसंद आया।

कारवां साइट पर हमारा एक हफ्ता अब खत्म होने वाला था और जेबी आगे बढ़ने के लिए उत्सुक था, लेकिन घाटी में अभी तक केवल दो ही निर्धारित कैंपसाइट खाली थे, जिससे हमारे पास

ज्यादा विकल्प नहीं थे। एक विकल्प यह हो सकता था कि हम किसी दूसरे इलाके में चले जाएं और हालात सुधरने पर वापस आएं। लेकिन मेरा लक्ष्य पहले से ही तय था। मुझे छह बड़े रूट और पहाड़ चढ़ने थे, जिनमें से दो यहीं थे, और मैं आसानी से यहाँ से जाने को तैयार नहीं था। कम से कम एक रूट पूरा करने तक मुझे जाने की बिल्कुल इच्छा नहीं थी। मैं बस तब तक यहीं रुकना चाहता था जब तक कि रूट तक पहुँचने के रास्ते थोड़े बेहतर न हो जाएं। साथ ही, यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई कि बच्चों को आनंद लेने के लिए एक अच्छी और सुरक्षित जगह मिल गई है।

इसलिए हम वहीं रुके रहे और लेस गैलैंड्स की सैर पर निकल गए। नज़ारा बदलने के लिए हम सर्वोज़ गए और वहाँ मैंने अमेरिका से भेजे गए एक नए उपकरण, सोलोइस्ट, से अपनी बैक-रोप तकनीक को निखारने में खूब अभ्यास किया। इससे मैं अपनी सुरक्षा के लिए एक बैक रोप का इस्तेमाल कर सकता था और घाटी में कठिन रॉक क्लाइम्बिंग करते हुए और भी फिट हो गया। मुझे उम्मीद थी कि यह उपकरण बिग सिक्स के कुछ हिस्सों में भी मेरे काम आएगा।

हर दिन मैं इनमें से किसी एक पर चढ़ाई शुरू करने के मौके के बारे में सोचता था, लेकिन मौसम ने लंबी और लगातार चढ़ाई के लिए निराशाजनक माहौल बना दिया। इसके बजाय हमने चट्टानों पर चढ़ाई जारी रखी। हमारी पसंदीदा जगह ले जू थी। हम रेलवे लाइन के पास गाड़ी खड़ी करते और टॉम दौड़कर घास के मैदानों से होते हुए उस छोटी सी पगडंडी को ढूंढ लेता जो पेड़ों के बीच से होकर चट्टान तक जाती थी। टॉम और केट के पास मनोरंजन के लिए काफी कुछ होता था, जबकि मैं खुशी-खुशी चढ़ाई के रास्तों को पूरा करता रहता था।

अप्रैल फूल डे वह दिन था जब हमने कारवां की विलासिता को त्यागकर सचमुच कैंपिंग शुरू करने का फैसला किया। हालांकि उस समय यह सब व्यर्थ लग रहा था, फिर भी मुझे सारा सामान दोबारा बैरल में पैक करके पर्किन्स पर लादना पड़ा ताकि हम अपनी यात्रा शुरू कर सकें - पहाड़ी पर 100 गज ऊपर! सुबह 11:30 बजे तक मैंने सारा सामान खाली कर दिया था और वैन को साफ कर दिया था, जबकि जेबी हमारे टेंट लगाने के लिए सबसे अच्छी जगह ढूंढने के लिए आगे चला गया था। अब वह बैरल और बक्सों से लदी पर्किन्स को उस जगह तक ले गया और हमने अपना नया घर बसाना शुरू कर दिया। चूंकि इस गर्मी में हमें आल्प्स के विभिन्न हिस्सों में अच्छे मौसम का लाभ उठाने के लिए अपनी यात्रा को लचीला रखना था, इसलिए हम कभी भी निश्चित आवास बुक नहीं कर सकते थे, इसलिए कैंपिंग ही हमारा एकमात्र विकल्प था। मैंने तय किया कि बच्चों के साथ कैंपिंग करना किसी अभियान की योजना बनाने से कहीं अधिक थकाने वाला और योजना की मांग वाला काम है।

हालांकि, मैं कुछ सामान्य सुख-सुविधाओं को बनाए रखने के लिए दृढ़ संकल्पित था। हमारा बिस्तर इसका एक उदाहरण था! मोटी इन्सुलेटेड चटाइयों की कई परतें, फिर हवा भरने वाले गद्दे, अतिरिक्त स्लीपिंग बैग की कई परतें जिन पर कंबल ओढ़े हुए थे, और फिर एक चादर आधार बनाती थी, और ऊपर साफ चादरें और हमारे अपने डाउन क्विल्ट थे, और अंत में हमारे सबसे नरम डाउन तकिए से हमारा आरामदायक बिस्तर पूरा होता था।

टॉम आमतौर पर खुद को बड़ा समझता था और अपना खुद का टेंट पसंद करता था, जिसमें लेगो, सॉफ्ट टॉयज़ और कारों के सारे बैग डालने के बाद वह एक आम लड़के के बेडरूम जैसा दिखता था। लेकिन केट अभी छोटी थी और हमने उसे उसके छोटे से 'कमरे' में रखने की कोशिश तो की, लेकिन कुछ रातों तक उसे अंधेरे में बिना कपड़ों के वापस लाने के बाद, जेबी ने फैसला किया कि अगर वह हमेशा हमारे साथ ही रहे तो ज़िंदगी आसान होगी। सौभाग्य से हमारे बड़े टेंट में एक बढ़िया सा गोल हिस्सा था, जो एक नन्ही बच्ची के लिए एक छोटा सा कमरा बन गया।
रात में बारिश बर्फ में बदल गई। मौसम विभाग ने और बर्फबारी की भविष्यवाणी की थी, और कई दिनों तक मौसम अच्छा नहीं रहने की उम्मीद थी। मौसम विभाग ने बताया कि पूरे दक्षिणी फ्रांस में भी बारिश हो रही है, इसलिए वहां जाना भी व्यर्थ होगा। वैसे भी, टेंट इतने गीले हो चुके थे कि उन्हें हिलाना भी संभव नहीं था।
बारिश में आराम से और अच्छे से कैंपिंग करने के लिए अच्छी योजना और संगठन की आवश्यकता होती है; दो छोटे बच्चों के साथ बारिश में कैंपिंग करने के लिए और भी अधिक योजना और धैर्य की आवश्यकता होती है। हमारी स्थिति तो चरम सीमा पर पहुँचने वाली थी। दो चंचल बच्चों के साथ लैंड-रोवर की पिछली सीट पर भोजन करना मेरे जैसे चिड़चिड़े स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए आसान नहीं था। हमने बर्फ के पुतले बनाए और उदास होने के लिए मौसम विभाग के कर्मचारियों से दोबारा मिलने गए।
अगली सुबह हम परिवार के साथ बॉसन्स ग्लेशियर के आधार तक टहलने गए, जो कई वर्षों से सुलभ बर्फ पर चढ़ाई के लिए एक लोकप्रिय स्थान रहा था, लेकिन मुझे वहाँ गए ग्यारह साल हो गए थे और यह आश्चर्यजनक रूप से बहुत पीछे हट गया था। अब यह उस घाटी के क्षैतिज भाग के साथ नीचे की ओर नहीं मुड़ता था जिसे इसने अपने लिए बनाया था। अब यह पीछे की ओर पत्थरों से भरी पहाड़ी पर गायब हो गया था। बच्चों के लिए यह कोई उचित जगह नहीं थी, इसलिए हम टेढ़े-मेढ़े रास्ते से वापस लेस बॉसन्स की ओर आ गए। जेबी, जिसने खाना पकाने और रसोई का काम संभाल लिया था, ने पके हुए शाकाहारी बर्गर सैंडविच का बढ़िया दोपहर का भोजन तैयार किया। मांसाहारी न होने के कारण हम बहुत आभारी थे कि पूरी गर्मी हमें हल्डेन नामक शाकाहारी खाद्य कंपनी द्वारा वितरित विभिन्न प्रकार के डिहाइड्रेटेड खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराए गए थे। इन खाद्य पदार्थों ने हमें पूरी गर्मी भर अच्छी तरह से पोषित रखा और कभी भी ऊबने नहीं दिया। यह वाकई सराहनीय था! और कई हफ्तों तक
14
एक कठिन दिन की गर्मी
जेबी सूखे मिश्रण से बर्गर और सॉसेज बनाने में माहिर हो गया था। उनका पनीर और प्याज वाला सॉसेज मिश्रण हम सभी का पसंदीदा बन गया!
वसंत ऋतु में सुहाना शिविर लगाने की हमारी सारी उम्मीदें तेज़ी से टूट रही थीं क्योंकि मौसम बद से बदतर होता जा रहा था और हमारा घर शिविर स्थल की बजाय धान के खेत जैसा लग रहा था। मैं कोई भी पर्वतीय मार्ग पूरा नहीं कर पाया और हालात पहले की तरह ही बेहद मुश्किल भरे थे, जैसा कि मेरी डायरी में दर्ज है:
सोमवार, 5 अप्रैल

बहुत तेज़ और भारी बर्फ़बारी के बाद, एक बेहद खूबसूरत, ठंडी, साफ़ और ताज़ी रात थी, जिससे हर चीज़ पर चीनी की एक सुंदर सफ़ेद परत जम गई थी। कड़ाके की ठंड थी। मैंने बच्चों को टेंट के अंदर ही कपड़े पहनाने का फ़ैसला किया। चप्पल पहनकर उठकर नाश्ता करना अच्छा होता, लेकिन यहाँ तो शौचालय जाने के लिए भी बूट, पोलारटेक और गोर-टेक्स पहनना पड़ता है! बाहर खाना खाने के लिए बहुत ठंड थी, इसलिए जेबी ने सावधानी से दलिया हमें अंदर परोसा। मैं केट को अपने साथ सुखाने वाले कमरे में ले गई ताकि कल के धुले कपड़े ले सकूँ और उसे थोड़ी गर्मी दे सकूँ, फिर सूरज निकलने और बर्फ़ पिघलने से पहले टेंट से बर्फ़ साफ़ करने के लिए वापस आ गई। जोश में आकर मैंने स्टोर टेंट का एक पैनल फाड़ दिया। इसलिए उसे खाली करके सुखाने के बाद, जेबी को अगली बार खराब मौसम आने से पहले उसकी मरम्मत करनी पड़ी।

पहाड़ बेहद खूबसूरत, बर्फीले और धूप से सराबोर दिख रहे थे। ढेर सारी ताज़ी बर्फ थी, जिस पर चलना आसान नहीं था, लेकिन वह खूबसूरती से जमी हुई थी।

दोपहर के भोजन के बाद हमने जंगल में तस्वीरें लीं और फिर लेस गैलैंड्स की यात्रा की, जहाँ मुझे कुछ सूखी चट्टानें मिलीं और मैं कुछ मीटर की दूरी तय करने में सक्षम रहा।

खराब मौसम के इस सिलसिले में एक सुखद राहत मिली है, जब सूरज निकलता है तो वह बहुत तेज और हमारी पीठ पर गर्म होता है, वाकई एक सुखद बदलाव!

मंगलवार, 6 अप्रैल

अरे बाप रे! रात भर बारिश होती रही, दिन भर बारिश होती रही। आज सुबह शहर में कुछ छोटी-मोटी खरीदारी करनी थी, लेकिन दोपहर में मौसम विभाग की रिपोर्ट देखने के बाद, हमने शैमोनिक्स के स्विमिंग पूल में जाने का फैसला किया।

बुधवार, 7 अप्रैल

बारिश, बारिश, बारिश... आज पूरे दिन बारिश रुकी ही नहीं। बच्चों के साथ लेगो खेलने के बाद, मैं दौड़ने के लिए निकल पड़ा। नदी पार करके एगुइल्स रूज की ढलानों पर पहुँचकर मैंने चढ़ाई शुरू की, पेड़ों के बीच से टेढ़े-मेढ़े रास्ते से ऊपर की ओर जाता हुआ। हाल ही में हुई गीली बर्फ ने जंगल में तबाही मचा दी थी। ऊपर की ओर 1.4 मीटर ताज़ी बर्फ गिर चुकी थी। हिमस्खलन का भारी खतरा था। शैमोनिक्स में हर जगह स्की-टूरिस्टों को ऐसी स्थिति में पहाड़ों में न जाने की चेतावनी देने वाले नोटिस लगे हुए थे। खराब मौसम की आशंका को देखते हुए मैंने आखिरकार आज का दिन यहीं समाप्त करने का फैसला किया। कहीं और जाने का समय आ गया था। अनिच्छा से ही सही, हमें अपना सामान पैक करके दक्षिण की ओर जाना पड़ा।

हम एल्प्स मैरिटाइम्स और कुछ रॉक क्लाइम्बिंग के लिए जा रहे थे। तो सब लोग पर्किन्स में सवार हो गए, जो एक बार फिर हमारा घर और वाहन बन गया। लकड़ी के वेजेज का उपयोग करके मैं बेंच सीट के कुशन को एक उचित कोण पर झुकाने में सक्षम था ताकि बच्चे लैंड-रोवर के झुकाव की परवाह किए बिना फिसले बिना लेट और सो सकें। फिर तकिए निकाले और स्लीपिंग बैग - जिन्हें हम यात्राओं के लिए हमेशा तैयार रखते थे - मैंने उन्हें पायजामे में बदल

दिया और रात को ढेर सारे मुलायम खिलौनों के साथ आराम से लेट गई। चूंकि हमने पीछे की दो सीटें हटा दी थीं, इसलिए हम उस जगह को रोज़मर्रा के इस्तेमाल की चीज़ों से भरे प्लास्टिक के डिब्बों से भर पाए - एक डिब्बा कटलरी और क्रॉकरी का, दूसरा चीनी, कॉफी, जैम, पतला पेय और नमक का। दूसरी तरफ गाइड बुक और नक्शों का एक डिब्बा था जिसमें यूरोप के उन सभी क्षेत्रों की जानकारी थी जिनकी हमें गर्मियों के दौरान ज़रूरत पड़ सकती थी, और उसके ऊपर कागज़ात का एक डिब्बा था - प्रायोजकों, मार्गों, कागज़ के पैडों से संबंधित फाइलें, और बच्चों के लिए डायरी, पेंसिल, पेन और एक बड़ा पेंसिल शार्पनर, जो बच्चों के साथ लंबी यात्रा के लिए बेहद ज़रूरी है।

इन बक्सों तक बगल के दरवाजों से आसानी से पहुँचा जा सकता था, और इसने पर्किन्स को एक ही कमरे में बेडरूम/किचन/ऑफिस बना दिया! कूल बॉक्स (जो वाकई शानदार साबित हुआ) दोनों बगल की सीटों के बीच में आसानी से फिट हो जाता था और रात होते ही इसे आसानी से बाहर निकाल लिया जाता था ताकि मैं फर्श पर एक इन्फ्लेटेबल गद्दा बिछाकर आराम से सो सकूँ।

अगर मौसम खराब होता तो जेबी आगे की सीटों पर सो जाता, और पूरी तरह से लेटने के लिए एक दरवाजा थोड़ा खुला छोड़ देता; लेकिन साफ, तारों भरी रातों में वह बाहर सोता और बाहर से हम पर नजर रखता।

पर्किन्स न केवल हमारा वाहन था, बल्कि हमारा घर भी था। बच्चे

एक कठिन दिन की गर्मी

हम उससे दोस्त की तरह घुलमिल गए और लगभग हर काम के लिए उस पर निर्भर हो गए। तो जैसे परिवार में कोई बीमारी सी फैल गई हो, जब गुड फ्राइडे की सुबह 8:30 बजे एक तीखे मोड़ पर हमारी गाड़ी का टायर फट गया; भारी भरकम लैंड-रोवर के साथ यह थोड़ा रोमांचक था! हम किसी तरह गैप तक पहुंचे, जहां हमें दो नए टायर खरीदने पड़े क्योंकि हमारे पास जो टायर थे वे फिट नहीं हो रहे थे, और हमें केटी के जन्मदिन के देर से मिले तोहफे के लिए एक शानदार प्लास्टिक का ट्रैक्टर मिल गया। इस तरह सबके आने-जाने का इंतजाम हो गया और हम आगे बढ़ सके।

हमारा अगला पड़ाव सेंट मार्टिन-वेसुबी नाम का छोटा सा गाँव था, जहाँ धूप से तपती अल्पाइन चट्टानें और सांपों का नज़ारा देखने को मिल सकता था। पिछले मौसम के बाद, कुछ हफ़्तों तक पहाड़ों पर चढ़ाई करने का विचार बहुत लुभावना लगा। हालाँकि, लंबी और थका देने वाली यात्रा के बाद, हमें बताया गया कि स्थानीय झोपड़ी के रखवाले अभी तक खोल नहीं पाए थे। वे सीने तक गहरी बर्फ में स्कीइंग करते हुए अंदर आने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उन्हें वापस लौटना पड़ा। 'हाँ, यह बहुत ही असामान्य था,' सभी ने सहमति जताई। हमने दक्षिण की ओर जितना हो सके आगे बढ़ने का फैसला किया, कोट डी'अज़ूर तक, फिर दाईं ओर मुड़कर उस जादुई इलाके की ओर जाने का, जहाँ का मौसम एकदम सही था, चूना पत्थर अद्भुत था और नज़ारा बेहद खूबसूरत था, जिसे लेस कैलांक्स के नाम से जाना जाता है। हम आल्प्स से दूर होते जा रहे थे, लेकिन कम से कम वहाँ मौसम मुझे कुछ गंभीर प्रशिक्षण चढ़ाई करने से नहीं रोक पाएगा।

17
4
लेस कैलेंक्स और लेस एक्रिन्स में गियर प्राप्त करना
अब यात्री खोज और प्राप्ति के लिए आगे बढ़ें।
वॉल्ट व्हिटमैन
समुद्रतट की हमारी यात्रा एक समझदारी भरा कदम साबित हुई। यहाँ मुझे कई दिनों तक जंगली इलाकों में लंबी चढ़ाई करने और आराम से शानदार रास्तों पर चढ़ने का मौका मिला। सर्दी और बारिश के बाद आए गर्म, धूप भरे दिनों ने मेरे उत्साह को फिर से जगा दिया, हालाँकि हम उन पहाड़ों से बहुत दूर थे जिन पर चढ़ने के लिए मैं आया था।
मैं चट्टानों पर चढ़ाई कर सकता था, तैयारी कर सकता था और सपने देख सकता था। हमने तटीय इलाकों में परिवार के साथ चट्टानों पर चढ़ाई के दिनों को पहाड़ों में लंबे समय तक जंगल में बिताए दिनों के साथ जोड़ा और जब जेबी और बच्चे समुद्र तट पर मौज-मस्ती कर रहे थे, मैं कुछ बेहतरीन क्लासिक चढ़ाइयों के लिए लंबी यात्राओं पर निकल जाता था। समुद्र से उठती विशाल चट्टानी चोटियाँ और जंगली पहाड़ी घाटियों से फूटती लंबी चूना पत्थर की चोटियाँ चढ़ाई के लिए शानदार और आनंददायक थीं।
आखिरकार धूप खिली और बच्चे ऊनी ऊन की जगह शॉर्ट्स और सैंडल पहनकर गहरे नीले समुद्र के ऊपर खड़ी चूना पत्थर की दीवारों वाली पथरीली खाड़ियों में खुशी से खेलने लगे। जहाँ तक मेरी बात है, मेरे सामने दुनिया भर के कई प्रसिद्ध पर्वतारोहण के रास्ते थे और गैस्टन रेबुफ़ैट की मोटी किताब 'कैलांक्स में 100 सर्वश्रेष्ठ मार्ग' शाम को मेरे घुटनों पर बोझ बनकर रहती थी। एन वाउ के पथरीले टावरों और दीवारों पर चढ़ाई यकीनन सबसे बेहतरीन है, भले ही वहाँ भीड़भाड़ रहती हो। मैं एक शिखर से होते हुए कई चोटियों पर चढ़ा और आगे चल रही दो टीमों के हटने का इंतज़ार करते हुए उस शानदार नज़ारे का आनंद लिया, फिर तेज़ी से शिखर की ओर बढ़ा। लेकिन भीड़ से बच निकलना भी पूरी तरह संभव था।
19
एलिसन हार्ग्रीव्स
भीड़भाड़। एक और दिन मैंने अरेट इंटीग्रल डू क्लोपोर्ट्स का भ्रमण किया और हवा में खेलते हुए चीलों के एक जोड़े को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने सोचा कि इस यात्रा में बच्चों की प्राकृतिक इतिहास की जागरूकता को बढ़ाना कितना अच्छा था, खासकर उन दूरस्थ स्थानों पर जहाँ हम गए थे, वहाँ चमोइक और मार्मोट जैसे जानवरों को देखकर। एक सुबह मुझे टॉम को उसके तंबू के अंदर एक सुंदर छोटी मकड़ी का बड़े ध्यान से अध्ययन करते हुए देखकर गर्व हुआ। मैंने एरेट डेस ह्यूट जेंडार्म्स, कैस्टेलवेल, वोई डे ला कैलांक, ग्रांडे एगुइल पर पैलॉन और पौस नॉर्मल पर चढ़ाई पूरी कर ली। जैसे-जैसे मैंने एक उचित प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया, मुझे हर दिन अपनी फिटनेस में सुधार महसूस होने लगा। कैलांक की हमारी यात्रा के अंत तक, मेरे पास 3000 मीटर से अधिक चट्टानी मार्गों का अनुभव और कई मीटर की चढ़ाई का अतिरिक्त अनुभव होना चाहिए।
हम और पश्चिम की ओर बढ़े और मैं झाड़ियों से भरी ढलानों से होते हुए गर्म, सफेद, दक्षिणमुखी

चट्टान पर चढ़ने के लिए संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ा। बोल्टेड क्लाइम्बिंग ने लेस लैम्स और रोशेर डेस गौडेस की क्लासिक चोटियों के दक्षिणी ढलानों पर कई और रास्ते और कई और पर्वतारोहियों को ला खड़ा किया है, लेकिन मैं बोल्ट और बोल्टर्स दोनों से बचते हुए एकांत के कुछ सुखद घंटे बिताने में कामयाब रहा, जो एरेट डे ला कॉर्डे पर समाप्त हुए, एक शानदार क्लासिक लाइन जो कोल डे लून से शिखर तक की रिज को पूरा करती है। जब मैं वहां बैठकर मनोरम दृश्य का आनंद ले रहा था, तभी सेंट मिशेल के दक्षिणी ढलान से ऊपर आई दो भारी टीमों ने आश्चर्यचकित होकर 'बोनजोर' कहा। फिर मैंने ऊपर से होते हुए एक संकरा रास्ता खोजा जो प्राचीन गुफाओं के पास से नीचे उतरता था। मैं एक प्रभावशाली ढंग से लटकी हुई गुफा की छत पर कुछ जोशीले रॉक क्लाइम्बर्स की हरकतों को देखने के लिए रुका, जबकि एक छिपा हुआ गिटारवादक गहराई से धुन बजा रहा था और संगीत की हल्की-हल्की खुशबू नीचे की ओर मेरा पीछा कर रही थी।

सोर्मिउ मेरी पसंदीदा जगह बन गई। रेत बहुत ही बढ़िया थी और नहाने का पानी उथला था, इसलिए बच्चों के लिए एकदम सुरक्षित था। वहीं, कोल डे सोर्मिउ के ऊपर टॉम ने नंगे पैर और शॉर्ट्स पहनकर भी कुछ चढ़ाई वाले रास्तों पर चढ़ाई कर ली। मैंने अपने स्पोर्ट्स शूज़ उतारकर रॉक शूज़ पहन लिए, चॉक बैग उठाया और टूर डे ल'एक्स्ट्रेम बेक पार बोर्ड डे ला मेर की ओर चल पड़ा। मुझसे आगे कई दल बाईं ओर से चढ़ाई शुरू कर चुके थे; उनमें से एक को छोड़कर बाकी सभी थोड़ी दूर चलने के बाद ऊपर की ओर दूसरे रास्ते पर चले गए, बजाय इसके कि समुद्र की लहरों के ठीक ऊपर बने उस खूबसूरत रास्ते पर आगे बढ़ते हुए चोटी के बिल्कुल आखिरी छोर तक जाते। चट्टान शानदार थी, और स्थिति भी बढ़िया थी। मैंने समुद्र की ओर जा रही एक नाव में सवार गोताखोरों की एक टीम को हाथ हिलाकर अभिवादन किया और चोटी के शिखर पर चढ़ना शुरू कर दिया। साठ मीटर के बाद चढ़ाई आसान हो गई और एक पथरीली पहाड़ी पर चढ़ना शुरू हो गया। पक्षियों और समुद्र को देखने के लिए दोपहर के भोजन के लिए रुकने के बाद, मैं सोर्मिउ पर्वत श्रृंखला पर उत्तर की ओर बढ़ता रहा और फिर तटीय कार पार्किंग के ठीक पश्चिम में उतर गया।

20

एक कठिन दिन की गर्मी

बच्चे बेहद खुश थे, रेत नरम थी, समुद्र गर्म था, उन्हें एक बाल्टी और कुछ रेत के सांचे मिल गए थे और वे खूब मजे कर रहे थे।

दल का एकमात्र सदस्य जो आनंद नहीं ले रहा था, वह था पर्किन्स। हमने उसे बिना बोझ के कई दर्रों पर चढ़ाया और पार कराया था। अब वह और बर्दाश्त नहीं कर सकता था। जब हम एक बार फिर कोल डी सोर्मिउ की चोटी की ओर आखिरी खड़ी चढ़ाई पर चढ़ रहे थे, तभी एक सुबह उसके गियर बॉक्स में कुछ गड़बड़ हो गई और वह गाड़ी चलाना बंद कर दिया। सौभाग्य से हम दर्रे के सही तरफ थे, लेकिन दुर्भाग्य से मुड़ने के लिए जगह बहुत कम थी, इसलिए हमें धीरे-धीरे और तेज़ी से पीछे की ओर लुढ़कना पड़ा, जब तक कि जेबी किसी तरह एक किनारे पर गाड़ी रोककर उसे घुमा नहीं पाया। नुकसान क्या हुआ? पर्किन्स के पास पहला गियर नहीं बचा था और स्थिति को और खराब करने के लिए, उसके पास रिवर्स गियर भी नहीं था। जेबी ने गियर बॉक्स

के साथ प्रयोग किया और पाया कि दूसरे, चार-पहिया और ओवरड्राइव का उपयोग करके वह अभी भी काफी हद तक संभालने लायक था, लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि कब तक। स्थिति और भी खराब हो गई जब हम कैसिस में अपने शिविर में वापस आए तो हमने पाया कि किसी ने हमारे तंबुओं में धावा बोला था और हमारी अंग्रेजी और स्विस मुद्रा चुरा ली थी, जिसे मैं अपने कमरबंद में रखना भूल गया था। ऊपर से, फिर से बारिश शुरू हो गई। स्थानीय लोगों ने बड़े दुख से विलाप करते हुए कहा, 'पिछले तीस वर्षों में सबसे खराब वसंत ऋतु।' टॉम और केट अपने फावड़ों से पानी की नहरें खोद रहे थे।

मैंने पर्किन्स की मेडिकल रिपोर्ट लेने के लिए गैराज में फोन किया। हालात निराशाजनक लग रहे थे। आस-पास कहीं भी सस्ता सेकंड-हैंड गियर बॉक्स नहीं मिल रहा था। यूके से मंगवाना धीमा काम होता, और जल्दी मंगवाना महंगा पड़ता। हो सकता है पर्किन्स तीस साल और चल जाए, या शायद वो कैंपसाइट तक वापस न आ पाए। हमने बारिश रुकने का इंतज़ार करने का फैसला किया और फिर पर्किन्स को एक मौका देने का सोचा।

अप्रैल खत्म हुआ और मई शुरू हो गई, लेकिन मैंने अभी तक बिग सिक्स में से एक पर भी चढ़ाई नहीं की थी। 3 मई को हम वापस पहाड़ों की ओर चल पड़े।

लेस एक्रिंस के सबसे नज़दीकी कैंपसाइट आधिकारिक तौर पर बंद था, लेकिन राष्ट्रीय उद्यान के एक मिलनसार व्यक्ति ने हमें भरोसा दिलाया कि सब ठीक रहेगा। नदी के किनारे वह एक रमणीय स्थान था और टॉम और केट जल्द ही रेत में खेलने और हमारे पीछे के जंगल से चीड़ के शंकु इकट्ठा करने में मग्न हो गए। हम ब्रायनकॉन के पास एक ऐसे क्षेत्र में थे, जिसके पर्यटन साहित्य में 365 दिनों में से 300 दिन धूप वाले बताए गए थे। जेबी ने कहा कि हमें बस पहले 65 दिन धूप में बैठना है और सब ठीक हो जाएगा।

मेरी डायरी में इस सीज़न के मेरे पहले अल्पाइन मार्ग पर बिताए गए समय की खुशी दर्ज है:

21

एलिसन हार्ग्रीव्स

बुधवार 5 मई

मैं खड़ी चढ़ाई पर चलकर ल'अल्पे डू लौज़ेट के छोटे से खूबसूरत पहाड़ी गाँव तक पहुँचा और टोरेंट डू रिफ़ के किनारे बर्फ़ीली रेखा की ओर बढ़ा। चिलचिलाती धूप में शांत बर्फ़ीली ढलान पर धीरे-धीरे चलते हुए, हर कदम पर बर्फ़ में धंसता जा रहा था। अचानक मेरे सामने एक ज़ोरदार चीख सुनाई दी और बर्फ़ में से एक मार्मोट निकला। फिर दूसरा, और फिर तीसरा। वे कुछ देर धूप में आराम करते रहे, फिर अपने पैरों को फैलाने के लिए तेज़ी से दौड़े। क्या वे शीतनिद्रा से बाहर आ रहे थे? क्योंकि आसपास कोई और पदचिह्न नहीं थे, मैंने यही अनुमान लगाया। बाद में मैंने देखा कि बहुत सारे मार्मोट बर्फीली ढलानों पर दिखाई दे रहे थे। पहले अपनी नाक बर्फ़ में से निकालते, फिर धीरे-धीरे बाहर निकलते और संतुष्टि से लोटपोट होते। मुझे बहुत गर्व महसूस हुआ।

गहरी बर्फ में मैं कोल डेस पोंसोनिएरेस के ऊंचे व्यूप्वाइंट तक चढ़ता रहा और फिर साल के अपने पहले अल्पाइन रूट, एरेट डे ला ब्रुयेरे पर चढ़ाई शुरू की, जो एक शानदार, नुकीली चोटी वाली पहाड़ी श्रृंखला है। वैसे तो गर्म गर्मी के मौसम में यह एक सुखद क्लासिक रॉक रूट होता है,

लेकिन मुझे सर्दियों के मौसम में भी बेहतरीन परिस्थितियां मिलीं। बर्फ इतनी थी कि रॉक बूट पहनना संभव नहीं था, इसलिए मैंने अपने पसंदीदा ब्राशर बूट्स पहने और जल्द ही अपनी स्थिति में मग्न हो गया। गीली, धूप से गर्म बर्फ में उतरना थोड़ा मुश्किल था, और दोपहर की धूप में आराम करते हुए और भी प्यारे जानवरों को देखकर मैं मन ही मन मुस्कुरा रहा था। उफनती नदी को एक सुंदर, हाथ से तराशे हुए लकड़ी के कुंड के पास से पार करने के बाद, मैंने अपने मोजे निचोड़े। अंदर से एक सुखद एहसास के साथ, मैं घाटी से नीचे ले कैसेट और परिवार की ओर लंबी चढ़ाई शुरू करने लगा। एक खूबसूरत दिन में एक शानदार जगह। इससे ज्यादा मैं और क्या मांग सकता था?

लेकिन अच्छा मौसम ज़्यादा देर तक नहीं टिका। जल्द ही फिर से पहले की तरह कोहरा, नमी और उदासी छा गई। हिमस्खलन के खतरे को लेकर चिंतित होकर, मैंने कौलॉयर डेविन पर बर्फ का जायजा लिया और पिक्स डू कैसेट के नीचे उतरते समय मुझे कमर तक गहरी बर्फ में संघर्ष करना पड़ा, कई जगहों पर तो मुझे और बर्फ में धंसने से बचने के लिए लेटना पड़ा। निराशा ही निराशा। मौसम और पहाड़ सचमुच मुझ पर हावी हो रहे थे। लेकिन अगले दिन, परिवार के साथ तबुक की सैर पर, बच्चे मरमोट्स को देखकर और उनकी चहचहाहट सुनकर रोमांचित हो गए, और पेड़ों के बीच से उतरते समय हमने घूमते हुए शैमोइक्स को देखा और सबसे खूबसूरत जंगली फूलों से ढके घास के मैदान को पार किया।

22

एक कठिन दिन की गर्मी

एलिसन हार्ग्रीव्स

बुधवार 12 मई

पोंट डी'आल्प से ऐगुइलेट लौज़ेट के आधार की ओर बढ़ा। तब तक बर्फ़बारी शुरू हो चुकी थी। चट्टान गीली थी और बादल नीचे थे। मैंने ऐगुइल के दाईं ओर की संकरी घाटी से सीधे ऊपर की ओर बढ़ते हुए 2717 मीटर शिखर तक जाने का फैसला किया। कोई उचित रास्ता न मिलने पर (वास्तव में यह बहुत ही निराशाजनक था!), मैं इस उम्मीद में उत्तर की ओर बढ़ता रहा कि मुझे शिखर तक जाने वाला वाया फेराटा मिल जाएगा। हालाँकि, भयानक बर्फीली ढलानों को पार करने के बाद मेरा हौसला पस्त हो गया। कोई वाया फेराटा नहीं मिला। मैं एक खतरनाक चट्टानी पट्टी से सीधे ऊपर की ओर बढ़ा, और जब मेरे दो में से एक सहारा टूट गया तो मैंने उसे कसकर पकड़ लिया। मैं एक डरे हुए खरगोश की तरह तेजी से ऊपर भागा और बहुत ठंडे हाथों से बर्फ की पतली चट्टान को तोड़कर शिखर की संकरी चोटी पर पहुँच गया।

और तभी मुझे पता चला कि मैं अब अकेला नहीं था बल्कि चार विशाल तंबुओं से घिरा हुआ था, चारों ओर एरियल लगे हुए थे, और एक दर्जन लोग, सभी सफेद कपड़े पहने हुए, सावधानीपूर्वक खोदे गए इग्लू आश्रयों में शरण लिए हुए थे!

अगले कुछ हफ्तों तक इलाके में अभ्यास कर रहे 15,000 सैनिक भी उनके साथ शामिल होने वाले थे। जैसे ही मैं घाटी में उतरा, मैंने देखा कि बच्चों ने सारा दिन उन ट्रकों, जीपों, हल्के टैंकों और एम्बुलेंस को देखते हुए बिताया था जो कोल डी'आर्सीन के ऊपर से पैदल मार्च करके आए

सैनिकों को लेने गए थे। हम बारिश में बैठे रहे और एक के बाद एक हेलीकॉप्टर देखते रहे। अगले कुछ दिन मनोरंजक साबित होने वाले थे। रास्तों पर 'माइन' के संकेतों के कारण पैदल यात्रा का रास्ता बदल जाता था, और नियमित रूप से पत्थरों के पीछे से एक तोप दिखाई देती थी जिस पर एक सैनिक बंधा होता था। सोमालिया में अमेरिकियों के साथ संपर्क से लौटे एक अंग्रेजी बोलने वाले अधिकारी ने हमें बताया कि इस अभ्यास में हर स्तर के सैनिक शामिल थे।

मई का मध्य था और हवा की दिशा बदल गई थी। हम सोच रहे थे कि क्या यही वह पल था जिसका हम इंतज़ार कर रहे थे। सोमवार 17 मई को, शानदार कौलॉयर डेविन पर चढ़ाई करने के बाद, मैं कोल डेस प्रेस लेस फोंट्स (3221 मीटर) पहुँचा। यह इस यात्रा का मेरा पहला बर्फीला और हिम मार्ग था और अब तक का मेरा सबसे ऊँचा बिंदु भी। बेहद खुश होकर, मैं सुहावने मौसम में, दलिया जैसी गहरी बर्फ से होते हुए एक खूबसूरत लटकती घाटी में उतरा, जहाँ चमोइक्स और हजारों अद्भुत जेंटियन और सफेद पोस्त के फूल खिले हुए थे। इसके बाद कुछ दिनों तक बारिश और गीली चट्टानें मिलीं, और फिर हम आगे बढ़ने के लिए तैयार थे।

23

गुरुवार 20 मई

अरे बाप रे! क्या दिन था! जेबी सुबह 7:30 बजे उठा और दलिया बनाने के लिए पानी गर्म करने के लिए हमारे अस्थायी रसोईघर में गया, लेकिन वहाँ उसे चूल्हा और केतली दोनों ही गायब मिले।

फिर वह आज हमारे जाने के लिए तैयार रखे हुए पैक किए हुए बैरलों को देखने गया। कुछ गायब थे? मैंने उन्हें गिना और मुझे अपना चढ़ाई का सामान नहीं मिला। हे भगवान! हमारे चढ़ाई के सामान के दोनों बैरल गायब थे। वह अंग्रेज़ी बोलने वाला लड़का जिसे हमने कल रात चाय पिलाई थी और जो अपने दोस्त से मिलने जा रहा था, वह भी गायब था। ब्रिटिश सेना की एक टीम के सदस्य के अनुसार, जो चैरिटी के लिए इटली से एल्डरशॉट तक साइकिल चला रहे थे और साइट से थोड़ा आगे डेरा डाले हुए थे, वह सुबह तड़के घाटी में बहुत तेज़ी से गायब हो गया था।

मुझे इस बात पर यकीन करना इतना मुश्किल लग रहा था कि मैंने गिनती में गड़बड़ी होने की आशंका में बैरलों को बार-बार गिना। मुझे लगता है कि सबसे मुश्किल बात यह थी कि मैंने उसे गलत समझा था। मैंने उसे पूरी तरह से गलत समझा था और किसी पर भी भरोसा करने का मेरा सारा आत्मविश्वास खत्म हो गया था।

स्थानीय पार्क में बारिश भरी दोपहर बिताकर जब हम लौटे तो मुझे अपनी छोटी सी ज़मीन पर एक शानदार कार खड़ी देखकर हैरानी और गुस्सा आया। मैंने सोचा, इतनी जगह होने के बावजूद कोई किसी की निजता में इतना दखल क्यों देना चाहेगा? तभी जैसे ही हम पर्किन्स से उतरे, एक लंबा-सा लड़का अपने स्प्रिंगर स्पैनियल कुत्ते के साथ आया और अपना परिचय दिया। उसने बताया कि उसे यहाँ कुछ लोगों से मिलना था, एक युवा परिवार वाले लड़के से; उनके टेंट हमारे जैसे ही थे, और उसने सोचा कि वे हम ही हैं। उसका सारा सामान चोरी हो गया था और स्पेन में सर्दियों में प्रशिक्षण देने के बाद वह स्कॉटलैंड लौट रहा था (उसका रंग बिल्कुल भूरा पड़ गया था)। उसे अपने एक दोस्त से विचारों का आदान-प्रदान करना था जो स्पेन में उसकी जगह लेने के लिए यूके से आ रहा था। पहली नज़र में वह ठीक-ठाक सा लड़का लगा, थोड़ा अजीब, बस

इतना ही। वह बातूनी था और हमारी और हमारी यात्रा में दिलचस्पी ले रहा था, और हमने उस इलाके, उसकी सुंदरता, शांति और पर्यटकों की कमी के बारे में बात की। हमने देखा कि उसकी कार की पिछली साइड लाइट टूटी हुई थी। उसने बताया कि जिन चोरों ने उसका सारा आउटडोर सामान चुराया था, उन्होंने ही इसे तोड़ा था। लेकिन बाद में हमें पता चला कि कार चुराते समय असल में वही चोर था!

उसके पास कोई सामान नहीं था, न ही तंबू और न ही चूल्हा। हमें उस पर दया आ गई और हमने उसे चाय पिलाई। उसने बच्चों से बातें कीं और यहाँ तक कि कुछ पेशकश भी की।

24

एक कठिन दिन की गर्मी

अगर हम रात को बाहर जाना चाहें तो वह हमारे बच्चों की देखभाल करने के लिए तैयार था, यह कहते हुए कि वह समझता है कि छोटे बच्चों के साथ बाहर गए माता-पिता के लिए आराम करना कितना मुश्किल होता है। यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि अगर हमने उसका प्रस्ताव मान लिया होता और बाहर चले गए होते तो क्या होता। न केवल और भी सामान चोरी हो जाता, बल्कि शायद बच्चे भी, अगर ले नहीं जाते तो निश्चित रूप से छोड़ दिए जाते। शायद जब हम दोपहर में बाहर थे, तब उसने हमारे बैरल खंगाले होंगे, यह बहाना बनाकर कि उसे लगा कि वे उसके दोस्त के हैं, ताकि अगर कोई उसे पकड़ ले तो वह उन्हें चुरा सके। फिर, सबके सो जाने का इंतज़ार करके, उसने सावधानी से उन दो बैरलों को निकाला जिन्हें उसने चुना था और बहुत तेज़ी से भाग गया।

मैं परेशान थी। मुझे इस बात की तसल्ली थी कि कम से कम हमने बच्चों को उसके भरोसे छोड़ने की मूर्खता तो नहीं की, लेकिन फिर भी इसका उन पर बुरा असर तो पड़ा ही था। जिस समय हमें बैरल के गायब होने का पता चला, उसी समय केटी का खिलौना खरगोश भी गायब हो गया और उसे पूरा यकीन था कि 'उस बदमाश आदमी' ने उसे चुरा लिया है। मुझे इस बात की चिंता थी कि बच्चों को इतनी कम उम्र में चोरी का सामना करना पड़ा, लेकिन कम से कम मुझे उम्मीद थी कि इसके परिणामों के बारे में जागरूकता भविष्य में उनके लिए एक सबक का काम करेगी।

तो अब हमारे पास एक बीमार पर्किन्स था, कोई चढ़ाई का सामान नहीं था और एक बार फिर से तेज बारिश हो रही थी - और हमारे समय और मेहनत के बावजूद हमें बिग सिक्स में से एक भी पर्वतारोहण देखने को नहीं मिला।

हमारी योजना लेस एक्रिंस के मध्य भाग में गाड़ी चलाकर जाने और वहाँ से खोजबीन और चढ़ाई करने की थी। इसलिए, मौसम और परिस्थितियों (पुलिस के साथ औपचारिकता पूरी करने) के कारण थोड़ी परेशानी होने के बावजूद, हम आइलेफ़्रोइड की एकांत घाटी की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचने पर दो युवा अंग्रेज पर्वतारोहियों ने हमें सतर्क रहने की चेतावनी दी, क्योंकि दो दिन पहले एक लंबे-पतले अंग्रेज लड़के ने पहाड़ियों पर उनकी कार में सेंध लगाने की कोशिश की थी!

हम घाटी की सुविधाजनक चट्टानों पर चढ़ गए और सूखी लकड़ियों की प्रचुर मात्रा से अलाव जलाया। भरपूर गर्म पानी की सुविधा का पूरा लाभ उठाया! बच्चों ने अलाव का खूब आनंद लिया। मौसम में कोई खास सुधार नहीं हुआ था, लेकिन बारिश के दिन कम होते गए और आमतौर पर सुबह का मौसम सुहाना और दोपहर में बारिश वाला हो गया। सौभाग्य से, मैंने

पर्किन्स में एक कुल्हाड़ी और एक जोड़ी क्रैम्पोन सूखने के लिए छोड़ दिए थे।
रविवार 23 मई
सुबह करीब 6 बजे उठा, उजाला और धूप खिली हुई थी। 7:25 बजे तक मैं घने जंगलों वाली घाटी से होते हुए सेज़ेन हट की ओर चल रहा था। हट के पीछे मैं पहुंचा

एक शांत चमोइस (एक प्रकार का हिरण) जूठे दानों की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था, और उससे सौ गज आगे एक सुंदर मार्मोट (एक प्रकार का हिरण) क्षण भर के लिए अचंभित हो गया जब वह मेरे और विपरीत दिशा से नीचे उतर रहे एक जोड़े के बीच फंस गया। वह जल्दी ही भाग गया। पथरीली ढलानों पर आसान ढलानों पर चढ़ते हुए, मैं जल्द ही बर्फ के स्तर पर पहुँच गया और सुबह की शिफ्ट के बाद नीचे उतर रहे सप्ताहांत स्की-टूरिस्टों की भीड़ में से पहले समूह से मेरा सामना हुआ।
सौभाग्य से सैकड़ों स्की ट्रैक ने बर्फ को इतना दबा दिया था कि मुझे ज्यादा कठिनाई नहीं हुई और मैं केवल अपने बूट के ऊपरी हिस्से तक ही बर्फ में धंसा। सुबह 10:15 बजे तक मैं रमणीय रेफ्यूज डू ग्लेशियर ब्लैंक पहुँच गया और नाश्ता और पेय लेने के बाद ग्लेशियर की ओर चल पड़ा। जल्द ही नज़ारे खुल गए और मुझे चौड़ी घाटी के शीर्ष पर स्थित अपने लक्ष्य, बैरे डेस एक्रिन्स का एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। मैं ऊपर की ओर बढ़ता रहा। रेफ्यूज एक्रिन्स की गहरी गीली बर्फ तक पहुँचने के लिए अंतिम सौ मीटर काफी मेहनत भरे थे, जिसमें मैं धंसता चला गया, लेकिन दोपहर 12:30 बजे तक मैं 3294 मीटर की ऊँचाई पर पहुँच गया, जो इस यात्रा में मेरी अब तक की सबसे ऊँची ऊँचाई थी। अद्भुत! सप्ताहांत के बाद नीचे आते समय झोपड़ी के रखवाले से मिलने और यह जानने के बाद कि झोपड़ी बंद है लेकिन शीतकालीन कक्ष खुला है, और वहाँ चूल्हा और पानी नहीं है, मुझे अपने तरल पदार्थ के सेवन के बारे में थोड़ी चिंता हुई।
हालांकि, इमारत के पीछे छानबीन करते हुए, मुझे एक बड़ा सा काला ऊर्ध्वाकार उपकरण मिला, जिसमें आम तौर पर पिघलती बर्फ को निकालने के लिए एक पाइप लगा होता था। इसलिए मैंने एक छोटा सा डिब्बा लिया और उसे उसके नीचे लगा दिया, और देखते ही देखते आधे घंटे के भीतर मेरे पास पाँच-छह लीटर ताज़ा पानी आ गया! उत्साह और इस व्यवस्था की कार्यक्षमता से उत्साहित होकर, मैंने झोपड़ी के सभी बड़े बर्तनों को भर दिया और इस तरह सभी के लिए पानी की भरपूर आपूर्ति सुनिश्चित कर दी। दोपहर तक, मेरे साथ एक उत्साही युवा इतालवी गाइडों का समूह शामिल हो गया, जो उस सुबह अपने स्की टूर से लौट रहा था, और बाद में, डोम डेस एक्रिन्स के स्की टूर के लिए उत्सुक चार इटालियनों का एक समूह, और फिर बैरे की चोटी पर जाने के लिए दो जर्मन लड़के भी आ गए।
पहाड़ी झोपड़ियाँ शानदार होती हैं और सभी एक-दूसरे से बहुत अलग होती हैं। सीज़न के चरम पर (यानी वसंत ऋतु में स्की-टूरिंग क्षेत्र में और जुलाई और अगस्त के दौरान मुख्य अल्पाइन क्षेत्रों में) वे आमतौर पर लोगों से भरी रहती हैं, और खानपान की देखरेख के लिए एक गार्ड मौजूद रहता है, जो बड़े प्रतिष्ठानों में वाइन के साथ तीन-कोर्स भोजन तक हो सकता है। इन

समयों में वे शोरगुल वाली, गर्म और बहुत मिलनसार होती हैं - लेकिन उनमें सोना काफी असुविधाजनक होता है। डॉरमेट्री-प्रकार के आवास पूरी तरह से भर जाते हैं, अतिरिक्त कंबल मिलने की कोई संभावना नहीं होती, यूरोपीय लोग ठंडी हवा के डर से खिड़कियाँ खुली रखना पसंद नहीं करते, और हमेशा ही कमरे में मौजूद व्यक्ति

एक कठिन दिन की गर्मी

बगल वाले बिस्तर से खर्राटे की आवाज़ आती है। व्यस्त मौसम में इनसे बचना ही बेहतर है। झोपड़ियों के लिए सबसे अच्छा समय ऑफ-पीक होता है, भले ही इसका मतलब यह हो कि उनके कुछ हिस्से बंद हों और जो खुले हों वे ठंडे, अंधेरे और अरुचिकर हों।

सबसे पहले, चाय या कॉफी का इंतजाम करना जरूरी है। लोग हमेशा इस बात से हैरान रह जाते हैं कि मैं पहाड़ों पर और पहाड़ों से दूर, कितना सारा तरल पदार्थ पी सकता हूँ! पहाड़ों पर, मुझे पूरा यकीन है कि इससे शरीर को बेहतर ढंग से अनुकूलन करने में मदद मिलती है, क्योंकि शरीर समुद्र तल पर भरपूर ऑक्सीजन के साथ रहने से लेकर अधिक ऊंचाई पर कम ऑक्सीजन के साथ तालमेल बिठाने में समय लेता है। इस बात के कुछ प्रमाण भी हैं, लेकिन वैसे भी पर्वतारोहण आधा मनोवैज्ञानिक होता है और अगर मैं खुद को यकीन दिला लूँ कि मैं अनुकूलन कर रहा हूँ, तो संभावना यही है कि मैं कर भी रहा हूँ!

पिछले कुछ वर्षों में मैंने शरीर में तरल पदार्थ की कमी को पूरा करने के लिए कई तरह के पेय पदार्थों का प्रयोग किया है, और सौभाग्य से हाल ही में हमारा संपर्क वांडर यूके से हुआ, जो आइसोस्टार नामक एक आइसोटोनिक पेय वितरित करते हैं। मैंने इसे पहले कभी नहीं आजमाया था, लेकिन इसे आज़माने के लिए मैं बहुत उत्सुक था। यूके में प्रशिक्षण के दौरान कुछ हफ्तों तक इसका सेवन करने के बाद, जब मैंने शरीर में तरल पदार्थ और खनिजों की कमी को पूरा करने के लिए इसका इस्तेमाल किया, तो मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यह मेरे नियमित आहार का हिस्सा बन जाएगा, जिससे आने वाले शारीरिक रूप से थकाने वाले महीनों में मैं फिट और स्वस्थ रह सकूंगा। गर्मियों के लिए हमें इसकी अच्छी-खासी मात्रा दान में मिली, जिससे मैं अपने शरीर को बेहतरीन स्थिति में बनाए रखने के लिए इसका भरपूर उपयोग कर सका।

उस दोपहर बाद पहुंचे दो बुजुर्ग इतालवी जोड़े काफी उत्साहित और खुश थे। वे एक मिश्रित समूह थे। पुरुषों के पास वर्षों का रोमांच और अनुभव था, जो उनके सामान से स्पष्ट था, लेकिन उनकी पत्नियां या प्रेमिकाएं अपेक्षाकृत कम अनुभवी थीं, उनके पास नई स्की, नया सामान था और वे मौज-मस्ती करने के लिए बाहर निकलने का आनंद ले रही थीं।

मेरी इतालवी भाषा बिल्कुल भी अच्छी नहीं थी और उनकी अंग्रेज़ी भी लगभग वैसी ही खराब थी, इसलिए बातचीत करना बहुत अच्छा होता, लेकिन हमें हाथ हिलाकर और मुस्कुराकर ही संतोष करना पड़ा। बैरे वोई नॉर्मले उनके लिए एक बड़ा लक्ष्य था और वे अकेले चढ़ाई और उतरने की मेरी योजना को समझ नहीं पा रहे थे। मैंने देखा कि वह बुजुर्ग व्यक्ति मुझे अजीब तरह से घूर रहा था।

जेबी: एलिसन इस यात्रा पर पहली बार घर से बाहर रात बिता रही है। क्या बच्चों को इसका एहसास होगा और क्या इससे उन्हें परेशानी होगी?

वसंत ऋतु का दिन बहुत ही सुहावना और लगभग परिपूर्ण था। हम सब खेलने और घूमने में व्यस्त रहे। जैसे-जैसे दिन ढलता गया, बच्चे लकड़ी इकट्ठा करने चले गए। मैंने लकड़ियों को काटकर शाम के लिए ढेर लगा दिया। उन्होंने आग जलाने में मेरी मदद की। मैंने उन्हें समझाया कि मैं बाहर, उनके तंबुओं के बीच में सोऊँगा।
रात अब तक की सबसे साफ थी। सोने से पहले कहानियां सुनाने के बाद केट सो गई।

लकड़ी ढोने की थकान से चूर होकर हम गहरी नींद में सो गए! टॉम धीरे-धीरे बातें कर रहा था। हम पीठ के बल लेटकर तारे देखने लगे। इतनी सारी बादलों भरी रातों के बाद, टूटते तारे देखना हमारे लिए एक नया अनुभव था।

सूखी चीड़ की डालियाँ आग की लपटों में चटक रही थीं और एक खूबसूरत, सादे दिन का सुगंधित अंत कर रही थीं। इसे पूरा करने के लिए बस दो लगातार अच्छे दिनों का मौसम ही काफी था। एलिसन को इस साल की अपनी पहली 4000 मीटर की चोटी पर चढ़ने के लिए बस इतना ही चाहिए था। हमारा एक दिन अच्छा बीता, क्या कल भी ऐसा ही होगा?
सोमवार 24 मई
लगभग 2:30 बजे हवा के झोंके से नींद खुल गई। पहले तो मुझे लगा कि छत पर कोई जानवर है, फिर समझ आया कि हवा शटर से टकरा रही है। अच्छा संकेत नहीं था। फिर से सो गया।
सुबह 4:30 बजे इटालियंस का अलार्म बज उठा। उठकर, पनीर, क्रैकर्स और आइसोस्टार खाने के बाद लगभग 5:20 बजे निकलने के लिए तैयार हो गया। ग्लेशियर पर उतरा और स्की ट्रैक का अनुसरण करते हुए पश्चिम की ओर ग्लेशियर पर चढ़ना शुरू किया, जब तक कि वे दाईं ओर और उत्तर की ओर मुड़कर शिखर, रोश फौरियो तक खड़ी चढ़ाई शुरू नहीं कर देते। मैं खड़ी ढलान के आधार तक आगे बढ़ता रहा, आंशिक रूप से छिपे हुए स्की ट्रैक और घुटनों तक गहरी बर्फ को पार करते हुए, ऊपर की ओर चढ़ता रहा। जल्द ही नॉर्थ फेस के नीचे पहुँचकर मैं उड़ती बर्फ में छटपटा रहा था, और गर्म कपड़े पहनने की कोशिश कर रहा था, दस्तानों की जगह गर्म मिट्टस, स्की पोल की जगह कुल्हाड़ी आदि पहन रहा था। बादल छा रहे थे, तेज़ हवाएँ चल रही थीं और लगातार बर्फ की फुहारें गिर रही थीं।
मुझे जल्दी करनी थी, इससे पहले कि हालात और बिगड़ जाएं। अब ढलान वाली ज़मीन पर, मैं अपने दो ब्लैक प्रॉफेट औजारों और क्रैम्पोन की मदद से ज़्यादा कुशलता से चढ़ सकता था, क्योंकि मैं उत्तरी ढलान पर व्हिम्पर कौलॉयर की संकरी बर्फीली रेखा का अनुसरण कर रहा था जो शिखर की चोटी तक जाती थी। दृश्यता कम थी, लेकिन मुझे पता था कि मैं चोटी पर पहुँच गया हूँ - मैं इससे ऊपर नहीं जा सकता था, बस दाईं ओर मुड़कर शिखर की ओर बढ़ना था। गहरे, गीले, भारी बर्फ के ढेर अव्यवस्थित पत्थरों पर ऊँचे-ऊँचे जमा थे, इसलिए चलना धीमा था। सुबह 9:15 बजे तक, यह सभी दिशाओं में ढलान पर उतरने लगा। यही शिखर था। कोई शानदार नज़ारा नहीं, बस हवा से उड़ती बर्फ मेरे चेहरे पर और चारों ओर धूसर बादल; नीचे उतरने

का समय आ गया था। संकरी चोटी से नीचे उतरते हुए, अपनी दिशा की जाँच करने के लिए एक बेयरिंग लेते हुए, मैं चाकू की धार जैसी चोटी का अनुसरण करते हुए एक दर्रे तक पहुँचा, जिसे मैंने ब्रेश लोरी माना - डोम डेस एक्रिन्स की बर्फीली टोपी और बैरे डेस एक्रिन्स के चट्टानी शिखर के बीच का अंतर। यहां मैंने फिर से दिशा परिवर्तन के लिए कंपास का सहारा लिया; अब चारों ओर घना कोहरा छाया हुआ था। जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, कल के स्की-टूरिस्टों के स्की ट्रैक नहीं दिख रहे थे। मैंने सावधानी से अपना रास्ता बनाया।

28

एक कठिन दिन की गर्मी

घनी बर्फ में नीचे उतरते हुए। बादलों के बीच-बीच में छींटे पड़ने से मुझे विशाल बर्फीली चट्टानों का पता लगाने में मदद मिली और मैंने याद करने की कोशिश की कि स्की ट्रैक किस रास्ते से ऊपर की ओर गए थे। कभी बाएँ तो कभी दाएँ मुड़ते हुए, मेरी गति धीमी थी; मैं सतर्क रहना चाहता था, यहाँ कुछ बड़ी-बड़ी दरारें थीं। मैंने बर्फ में खोदकर मौसम ठीक होने का इंतज़ार करने के बारे में सोचा, लेकिन तभी एक साफ जगह दिखी और मुझे कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। मुझे दाईं ओर काफी दूर जाना था। मैं जल्द ही उन दो जर्मनों के पास पहुँच गया, जो बिगड़ते मौसम के कारण मेरे उतरने के रास्ते, वोई क्लासिक, से वापस लौट आए थे, और दयनीय परिस्थितियों में हम ग्लेशियर तक उतरे। जर्मन स्की करते हुए वापस शरणस्थल पर चले गए ताकि कल फिर कोशिश कर सकें। मैं चाय पीने के लिए नीचे गया और मुझे उन दो इतालवी जोड़ों के साथ शराब पीकर जश्न मनाना पड़ा, जिन्हें झोपड़ी से देर से निकलने के कारण अपने रास्ते से लौटना पड़ा था।

अब शैमोनिक्स लौटने का समय था। हमने ऑफ-सीज़न में लेस एक्रिंस के नज़ारों का भरपूर आनंद उठाया था और जंगली कैंपिंग, भरपूर गर्म पानी, ढेरों ऑर्किड और हाल्डेन वेजबर्गर चुराने वाले मार्मोट्स की प्यारी यादें संजो रखी थीं। पर्किन्स ने हमें गर्व महसूस कराया था। बस मुझे मौसम के भी उतना ही भरोसेमंद होने की उम्मीद थी। मैंने अपना चोरी हुआ सामान वापस रखा और इंतज़ार किया। 3 जून को लंबी अवधि का मौसम पूर्वानुमान आशावादी था। मैं फिट था; यह बिग सिक्स में से किसी एक पर चढ़ने का मौका था। मैंने अपना बैग पैक किया और विकल्पों पर विचार किया। पिछले कुछ दिनों में और अधिक बर्फ गिरने के कारण मुझे ग्रांडेस जोरासेस के लंबे ग्लेशियर मार्ग और उतरने के बारे में थोड़ी घबराहट हो रही थी, इसलिए मैंने अपने पुराने पसंदीदा मैटर-हॉर्न को चुना।

हमने शानदार धूप में अपना सामान पैक किया और पर्किन्स ने अपने तीस से कुछ अधिक वर्षों के शरीर को लेकर परिवार को कोल डेस मोंटेस के ऊपर से, चिकनी स्विस सड़कों से होते हुए टैश के उस बदसूरत गांव की ओर ले गया, जहां जेबी और बच्चे कैंप लगाने जा रहे थे।

जेबी: टैश में, जो एक गांव के साथ एक कार पार्क है और रेलवे लाइन और खड़ी घाटी के बीच में स्थित है, वहां केवल एक ही शिविर स्थल के लिए जगह है।

मौसम गर्म, उमस भरा और भीड़भाड़ वाला था। एलिसन, भारी सामान से लदी हुई, उस रात होर्नली हट पहुँचने के लिए निकल पड़ी। मैंने बच्चों और उनके खिलौनों को एक छायादार पेड़ के नीचे रखा और अपना कैंपिंग का काम शुरू कर दिया।

शाम को शिविर स्थल पर लौट रहे पर्यटक और पर्वतारोही अपने बच्चों के साथ अकेले एक 'नए आधुनिक व्यक्ति' को देखकर काफी प्रभावित हुए। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था!

29
एलिसन हार्ग्रीव्स
दोपहर 2:15 बजे तक वे लोग अपने ठिकाने पर पहुँच चुके थे और मैं निकल पड़ा। मैंने कपड़े बदले, अपना बैग कंधे पर रखा और घाटी से होते हुए ज़र्मैट जाने वाली ट्रेन में चढ़ गया। शुरुआत से ही सब कुछ ठीक नहीं रहा। मैं पर्यटकों से भरी गलियों से भागता हुआ गाँव के आखिरी छोर तक पहुँचा, लेकिन वहाँ पहुँचकर पता चला कि श्वार्जसी लिफ्ट, जिससे मैं समुद्र में जाता था, 25 जून तक बंद थी। निराश होकर मैं बाहर बैठ गया और नक्शा देखने लगा कि क्या उस रात हॉर्नली हट तक पैदल जाने का समय मिलेगा या नहीं, तभी मुझे एक और लिफ्ट दिखाई दी। मैं वापस अंदर गया और पूछा कि क्या मैं फुर्ग स्टेशन जा सकता हूँ। महिला अनिच्छा से मान गई और मुझे यह कहकर दिलासा दिया कि शायद मेरी आखिरी टेलीफेरिक छूट गई है, फिर भी उसने मुझे एक टिकट बेच दिया और मैं दौड़कर टर्नस्टाइल से अंदर चला गया। वहाँ कोई नहीं था, कुछ भी नहीं, और फिर दस मिनट बाद एक टेलीफेरिक आ गई। हाँ, मैं ऊपर तो जा सकता था, लेकिन वापस नीचे नहीं आ सकता था। शाम 5:00 बजे तक मैं शिखर स्टेशन पर पहुँच गया, 5:30 बजे तक मैं श्वार्ज़सी झील पर था और घुटनों तक गहरी बर्फ में चलने के बाद, शाम 7:30 बजे मैं हॉर्नली हट पर पहुँच गया।
अकेले ही, मैंने ऊपर से गद्दे और ढेर सारे कंबल लाकर रसोई में आराम से बैठ गई। काफी बर्फ पिघलने वाली थी, इसलिए मैं रात 10:30 बजे तक चाय बनाती रही।
शनिवार, 5 जून
सुबह 3:00, 3:30 और 4:00 बजे नींद खुली। जब आप ज्यादा देर तक सोना नहीं चाहते, तो दोबारा सोना मुश्किल होता है। आखिरकार सुबह 5:00 बजे उठा, गर्म पेय बनाने के लिए चूल्हा जलाया। नाश्ता करने की कोशिश की, लेकिन जॉर्डन के दो मूसली बार ही खा पाया। पहले इनर बूट्स पहने, फिर आउटर बूट्स। बाहर से एक आवाज सुनकर मैं चौंक गया; पता चला कि वह एक गाइड था जो गर्मियों के सीजन शुरू होने से पहले ट्रेनिंग वॉक के लिए आया था।
जल्द ही मैं जाने के लिए तैयार हो गया। स्प्रेवे गोर-टेक्स आउटर और हार्नेस पहनकर, मैंने झोपड़ी के शटर बंद किए और चल पड़ा। झोपड़ी से केवल पाँच मिनट की दूरी पर ही मैं बर्फ में धंसने लगा। उत्तरी ढलान के आधार से फैले हिमनदी तंत्र को पार करते हुए मैं घुटनों तक बर्फ में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। हिमखंड को पार करना उतना मुश्किल नहीं था, बर्फ का मैदान नरम था, लेकिन बहुत खराब स्थिति में नहीं था। मैंने ब्लैक प्रॉफेट के औजारों को घुमाया और हम चल पड़े। जैसे ही मैं बर्फ के मैदान के शीर्ष और ढलान के करीब पहुँचा, मुझे एहसास हुआ कि यह सब कितना अस्थिर और असंगठित था। चिकनी चट्टानों के ऊपर गीली बर्फ जमी हुई थी। मैंने चट्टानी रिज को पार करते हुए अगले महत्वपूर्ण भाग, ढलान के निचले हिस्से की ओर कदम बढ़ाया और विचार किया। यह गीला, अस्थिर और मूर्खतापूर्ण लग रहा था।
मैंने अपनी रस्सी निकाली और एक खूंटी से पच्चीस मीटर नीचे उतरकर वापस आ गया।
30
एक कठिन दिन की गर्मी
बर्फीले मैदान को पार करके मैं गीली और भयानक बर्फ पर नीचे उतरने लगा। दोपहर 3 बजे तक

मैं टैश में अपने परिवार के पास वापस आ गया।
जेबी: अगली सुबह हम टहलते हुए शहर के बीचोंबीच बेकरी गए, जहाँ चार पाउंड स्टर्लिंग (स्विस फ्रैंक में) में हमें एक परिवार के लिए उपयुक्त आकार की रोटी मिली। मुझे, एक यॉर्कशायरवासी होने के नाते, उस सदमे से उबरने में महीनों लग गए। पर्यटक कार्यालय की चंचल लड़की ने मुझे चर्च के बगल में बने एक सुंदर खेल के मैदान की ओर निर्देशित किया। टॉम उस विशाल रेत के गड्ढे से एक गाय लेकर लौटा, लेकिन वह केवल प्लास्टिक का मॉडल था।
झूलों से स्टेशन और शिविर स्थल का शानदार नज़ारा दिखता था। शाम ढल रही थी, तभी एक छोटा-सा, भारी-भरकम व्यक्ति ट्रेन से उतरा। अब असली दुनिया में वापस जाने का समय था। ज़ाहिर है, उसे सहारा देने के लिए किसी कंधे की ज़रूरत थी।
थका हुआ और निराश, मुझे पूरी यात्रा के बारे में नकारात्मक महसूस होने लगा। मौसम जिस तरह से हमारा साथ नहीं दे रहा था, क्या मैंने अपनी क्षमता से ज़्यादा ज़िम्मेदारी ले ली थी? हम निराश होकर शैमोनिक्स लौटे। पहाड़ साथ नहीं दे रहे थे। लेस बोइस गांव में स्थित अपने पसंदीदा कैंपसाइट लेस ड्रस में वापस आकर, मैंने एक बार फिर एगुइल्स रूज में लंबी दौड़ लगाने और घाटी में रॉक क्लाइंबिंग करने में समय बिताया। मैंने कुल मिलाकर काफी दूरी तय की, लेकिन छह में से मेरा स्कोर शून्य था!
31
5
ग्रांडेस जोरासेस - 4208 मीटर
संपूर्ण आल्प्स पर्वतमाला में ग्रेनाइट की सबसे दुर्जेय दीवार।
एलेसांड्रो गोगना
ग्रांडेस जोरासेस एक विशाल पर्वत है। हालाँकि, इसकी विशाल उत्तरी सतह केवल दूर से ही दिखाई देती है, इसलिए मैटरहॉर्न, आइगर या डू की तरह यह आम जनता के बीच उतना प्रसिद्ध नहीं है।
फ्रांस/इटली की सीमा उत्तरी ढलान की चोटी से होकर गुजरती है, जिसमें छह अलग-अलग शिखर हैं। एगुइल्स रूज या मोंटेनवर्स से सीधे उत्तरी ढलान को देखने पर, ये शिखर बाएं से दाएं क्रमशः प्वाइंट वॉकर (4208 मीटर), प्वाइंट ह्विम्पर (4184 मीटर), प्वाइंट क्रोज़ (4101 मीटर), प्वाइंट हेलेन (4045 मीटर), प्वाइंट मार्गरिट (4065 मीटर) और प्वाइंट यंग (3996 मीटर) हैं। ये नाम सबसे पहले की गई चढ़ाइयों की कहानी बयां करते हैं। आल्प्स में चढ़ाई करना लगभग असंभव है, बिना उन सभी लोगों के बारे में जाने जो पहले ही वहां जा चुके हैं।
इस पर्वत पर पहली चढ़ाई एडवर्ड ह्विम्पर ने मिशेल क्रोज़, क्रिश्चियन अल्मर और फ्रांज़ बीनर के साथ 24 जून, 1865 को की थी। तीन सप्ताह बाद ह्विम्पर और क्रोज़ मैटर-हॉर्न की ओर बढ़े, लेकिन यह एक अलग कहानी है। सबसे ऊंचे प्वाइंट पर पहली वास्तविक चढ़ाई होरेस वॉकर ने जोहान जुआन, जूलियन ग्रेंज और मेल्चियोर एंडेरेग के साथ 30 जून, 1868 को, तीन साल बाद की थी। सदी के अंत तक अन्य प्वाइंट भी समाप्त हो गए। अब तक सभी शिखरों पर उनके सबसे आसान रास्तों से चढ़ाई हो चुकी थी। इसके बाद छोटी चोटियों और पर्वतमालाओं का नंबर आया। इनमें सबसे आकर्षक बाईं ओर फैली पूर्वी पर्वतमाला, हिरोंडेल्स है। यह इसी नाम के दर्रे

से ऊपर उठती है और
33

एक कठिन दिन की गर्मी

यह पर्वत के उत्तरी भाग को खूबसूरती से दर्शाता है। 1911 में ज्योफ्री विन्ध्रोप यंग के दल ने इसकी कठिनाइयों का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए इस रिज से नीचे उतरकर चढ़ाई की। वे इससे प्रभावित हुए होंगे, तभी वे दोबारा लौटे। इस पर पहली बार 1927 में चढ़ाई की गई, और तब भी एक इतालवी दल ने इस पर चढ़ाई की। उनकी सफल चढ़ाई पर तब तक संदेह बना रहा, जब तक कि आठ साल बाद दूसरी चढ़ाई करने वाले दल ने इटालियंस द्वारा सबसे कठिन भाग, फिशर रे, पर चढ़ाई के लिए इस्तेमाल किए गए पिटन (पिटॉन) का पता नहीं लगा लिया।

नॉर्थ फेस पर पॉइंट वॉकर और क्रोज़ से नीचे उतरती हुई दो प्रमुख चोटियाँ हैं। इनके आधार पर एक खड़ी बर्फीली पट्टी है, जिस पर बर्फ की पतली-पतली लकीरें ऊपर की ओर बढ़ती जाती हैं। वॉकर स्पर के बाईं ओर एक और भी खड़ी बर्फीली पट्टी और नालों का जाल है। इस सदी के कुशल पर्वतारोहियों के लिए, इन चोटियों को अलग करने वाली बर्फीली पट्टी भविष्य में चढ़ाई के लिए सबसे कमज़ोर रास्ता प्रतीत होती थी, और तीस के दशक तक सभी आल्प्स पर्वतारोहियों की निगाहें नॉर्थ फेस और इसकी अछूती बर्फीली पट्टियों और चोटियों पर टिकी थीं। इन पर चढ़ाई करने वाले पर्वतारोहियों की विस्तृत सूची के लिए परिशिष्ट II देखें।

क्रोज़ स्पर पर सबसे पहले 1935 में विजय प्राप्त की गई, और कुछ दिनों बाद दूसरी बार चढ़ाई करने वाली टीम में स्विस पर्वतारोही लुलू बोलाज़ भी शामिल थीं, जो स्पर पर चढ़ने वाली पहली महिला थीं। सभी की निगाहें वॉकर स्पर पर टिक गईं, जिस पर 1938 में इटालियंस ने विजय प्राप्त कर ली।

आगे क्या? पर्वतारोहण की हर पीढ़ी की अपनी एक आखिरी बड़ी चुनौती होती है और वॉकर स्पर के बाईं ओर स्थित खड़ी बर्फ की ढलान वाला इलाका साठ के दशक के लिए वही चुनौती थी। फ्रांसीसी पर्वतारोही ने इसे इसकी आकृति और बर्फ के गिरने के इतिहास के कारण 'ले लिंसुल' या 'कफ़न' नाम दिया था! रॉबर्ट पैरागोट, जॉन हार्लिन और डगल हैस्टन ने इस पर कई बार चढ़ाई करने की कोशिश की। हालांकि, सदाबहार और नवोन्मेषी रेने डेसमैसन और रॉबर्ट फ्लेमेटी ने 1968 की सर्दियों में इस पर चढ़ाई की। बेहद खराब मौसम और असाधारण रूप से ठंडी सर्दियों ने उनके बारह दिनों के चढ़ाई और उतरने के सफर को एक तरह की परीक्षा बना दिया।

सत्तर के दशक की आखिरी बड़ी चुनौती मध्य हिमक्षेत्र और उसकी घाटियाँ थीं, जिन पर क्रिस बोनिंगटन का दल असफल रहा, और एक जापानी टीम भी भारी मात्रा में फिक्स्ड रस्सियों से बर्फ को पूरी तरह घेरकर ही सफल हो पाई। शिखर तक पहुँचने का एक तरीका तो था, लेकिन अनुकरण करने लायक नहीं। प्रतिभाशाली लेकिन अपने अस्त-व्यस्त स्वभाव के लिए मशहूर ब्रिटिश पर्वतारोही एलेक्स मैकिंटायर ने दुनिया को दिखाया कि सफलता के लिए फिक्स्ड रस्सियों और किसी मार्ग को जानलेवा तरीके से घेरने वाली अभियान रणनीतियों की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि सिर्फ़ दृढ़ संकल्प और प्रतिभा ही काफ़ी होती है। निक कोल्टन के साथ, वॉकर स्पर के तलहटी से देर शाम को शुरू करके, उन्होंने रात भर और अगले दिन तक चढ़ाई की और अब तक का सबसे कठिन मार्ग स्थापित किया।

किसी पर्वत पर उसके अधिकांश मुख्य मार्गों से चढ़ाई हो जाने के बाद, अगला ध्यान आमतौर पर इन मार्गों पर एकल और शीतकालीन चढ़ाई पर केंद्रित होता है। वॉकर स्पर भी इसी श्रेणी में आता है।

35

एलिसन हार्ग्रीव्स

इस पर्वत पर पहली बार 1964 में सर्दियों में वाल्टर बोनाटी और कोसिमो ज़ैपेली ने तूफ़ानी मौसम में चढ़ाई की थी। रेने डेसमैसन ने रॉबर्ट फ्लेमेटी के साथ मिलकर 1968 में श्राउड पर्वत पर पहली और शीतकालीन चढ़ाई पूरी की थी। एक बार फिर, नवोन्मेषी और साहसी रेने डेसमैसन ने सर्ज गौसोल्ट के साथ मिलकर 1971 में वॉकर स्पर के विशाल चट्टानी पूर्वी ढलान पर चढ़ाई का प्रयास किया। सर्दी का मौसम बहुत कठिन था और शिखर से 150 मीटर नीचे सर्ज गौसोल्ट की डेसमैसन की बाहों में मृत्यु हो जाने के साथ ही यह प्रयास समाप्त हो गया। दस दिनों के शीतकालीन तूफ़ानों ने अपना कहर बरपाया था। डेसमैसन 1973 में जियोर्जियो बर्टोन और मिशेल क्लारेट के साथ चढ़ाई पूरी करने के लिए वापस लौटे।

एकल पर्वतारोही भी पीछे नहीं थे: एलेसेंड्रो गोगना ने 1968 में वॉकर स्पर पर चढ़ाई की और जीन अफनासीफ ने 1972 में क्रोज़ स्पर पर चढ़ाई की। श्राउड पर चढ़ाई के दावों पर 1974 की सर्दियों तक कुछ संदेह था, जब इवानो घिरार्डिनी ने निश्चित रूप से इसे एकल रूप से पूरा कर लिया।

ग्रांडेस जोरासेस ने हमेशा से मुझे विशेष रूप से आकर्षित किया है। मुझे इसकी सुंदरता और अन्य कई महान उत्तरी पर्वतों की तुलना में इसकी अपेक्षाकृत दूरस्थ स्थिति बहुत पसंद है।

हम लेस ड्रस में डेरा डाले हुए थे, और आखिरकार मौसम का पूर्वानुमान अच्छा था। मौसम विभाग ने दो साफ और धूप वाले दिनों का वादा किया था। मुझे उम्मीद थी कि पिछले दिन की ताज़ी बर्फ जम जाएगी। क्या मुझे एगुइल्स पर कुछ कोशिश करनी चाहिए? मैंने ग्रांडेस जोरासेस के लिए अपना उत्साह व्यक्त किया। उत्तरी फेस पर अकेले चढ़ाई करने की अपनी शुरुआती योजना में मैंने वॉकर स्पर या क्रोज़ स्पर में से किसी एक के बारे में सोचा था। अगर परिस्थितियाँ अनुकूल होतीं, तो मुझे रॉक बूट और चाक बैग के साथ वॉकर पर चढ़ाई करना बहुत पसंद होता, लेकिन आजकल इसकी लोकप्रियता को देखते हुए मुझे पता था कि वहाँ बहुत भीड़ होगी। क्रोज़ का राजसी केंद्रीय स्पर भी हमेशा से मुझे आकर्षित करता रहा है। इतना ही नहीं, इसकी पहली एकल चढ़ाई को इक्कीस साल हो गए थे, और अभी तक किसी महिला द्वारा इस पर एकल चढ़ाई नहीं की गई थी।

इन ऊंचे पहाड़ों में हमेशा की तरह, परिस्थितियां ही चढ़ाई के सबसे सुरक्षित और समझदारी भरे रास्ते का निर्धारण करती थीं। मात्र उन्नीस साल पहले ही ग्रांडेस जोरासेस पर वॉकर स्पर के बाईं ओर स्थित बर्फीले मैदान, श्राउड के रास्ते पहली एकल चढ़ाई हुई थी; यदि परिस्थितियां अनुकूल रहीं, तो यह मेरे लिए भी एक उपयुक्त मार्ग साबित होगा। महिलाओं द्वारा पहले कोई एकल चढ़ाई न होने के कारण यह मेरे लिए आकर्षण का केंद्र भी था। हाल के वर्षों में शुष्क मौसम के कारण यह पर्वतारोहण अनियमित रहा है। यदि सर्दियों के अंत में हुई बर्फबारी के बाद अब यह लगातार बर्फीला हो जाए, तो यह बहुत अच्छा होगा। अपनी पहचान बनाने का समय आ गया था

और मैं पूरी तरह से तैयार थी।
जेबी ने मेरे मुख्य भोजन, दो पौंड हल्डेन चीज़ और प्याज वाले शाकाहारी सॉसेज, साथ ही पेय के लिए आइसोस्टार और ऊर्जा और मिठाई के लिए जॉर्डन के फ्रूस्ली बार तैयार किए। मेरा इरादा दो दिनों से अधिक बाहर न रहने का था।

रातें। जेबी के सुझाव पर मैंने अपने प्लास्टिक के पहाड़ी जूते अपने थैले के बाहर बांधे, रीबॉक के जूते पहने और सुबह 10:30 बजे, लंबी चढ़ाई के लिए समायोज्य स्की पोल लेकर, मैं लेस बोइस से ग्रांडेस जोरासेस के उत्तरी भाग और लेस्चॉक्स हट के लिए निकल पड़ा।
जेबी: एलिसन के जाने के बाद, मेरे मन में यह सवाल उठा कि कितने शीर्ष पर्वतारोही घाटी से लेस्चॉक्स हट तक पैदल चलकर, श्राउड जैसे प्रमुख मार्ग को पार करके, हिरोंडेल्स रिज से नीचे उतरकर और फिर वापस घाटी तक पैदल आना पसंद करेंगे। पेशेवर पर्वतारोहण निश्चित रूप से ग्लैमरस नहीं है और इसमें लगातार भागदौड़ करनी पड़ती है।
मैं और बच्चे समुद्र तट की ओर चल पड़े, खैर, कम से कम अर्वे नदी के किनारे स्थित ग्रेनाइट की रेत और चट्टानों वाले इलाके की ओर। वह साफ तो होगा, लेकिन बर्फीला ठंडा होगा।
मैं जंगल में और पहाड़ी पर चढ़कर मोंटेनवर्स पहुंचा, जहां दोपहर 12 बजे मैंने पानी की बोतल भर ली। मोंटेनवर्स पहुंचकर मुझे थोड़ी घबराहट हुई! क्या योजना सही थी? हां! मैं सीढ़ियों से उतरकर मेर डे ग्लेस पहुंचा और थोड़ी देर बैठा, फिर वापसी के लिए अपने रीबॉक जूते एक बड़े पत्थर के नीचे रख दिए, प्लास्टिक के बूट पहने और गंदी बर्फ पर चल पड़ा, जो दरारों और खांचों का एक जाल थी। समतल मध्य भाग तक पहुंचने में काफी समय लगा, बीच-बीच में दरारों पर बड़े-बड़े कदम रखते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ा, फिर खड़ी ढलान वाले मध्य भाग पर चढ़कर बाईं ओर लेशॉक्स ग्लेशियर की ओर मुड़ गया।
मौसम सुहावना था। दोपहर की तेज़ धूप में ग्लेशियर के केंद्र में अक्सर जो तेज़ बहाव होता है, उसे पार करना यहाँ बस एक पहाड़ी झरने जितना ही मुश्किल था। एक ही छलांग में मैं पार कर गया और ग्लेशियर के संगम के ऊबड़-खाबड़ मोरेन की ओर बढ़ गया। बर्फ और ढीले पत्थरों पर कई उतार-चढ़ाव के बाद, सबसे अच्छा रास्ता ढूंढते हुए, मैं लेस्को ग्लेशियर के दाहिने किनारे की ओर चल पड़ा। मेर डे ग्लेस पर, एगुइल डू प्लान से उतर रहे दो गाइडों ने मुझसे मेरी मंज़िल पूछी। उन्हें कमर तक गहरी बर्फ में काफी मुश्किल हुई थी। मेरे जवाब पर उन्होंने कहा, 'शुभकामनाएँ!' अब लेस्को ग्लेशियर पर छह और पर्वतारोही तेज़ी से नीचे आ रहे थे। बिल्ली के लिए एक शब्द भी नहीं। मैं अकेले ही ऊपर की ओर बढ़ता रहा, ग्लेशियर से उतरकर झोपड़ी के रास्ते पर आने के लिए मैंने एक बड़े नरम बर्फ के टीले का सहारा लिया। एक मार्मोट मुझे देखकर बैठ गया, वहाँ सुंदर अल्पाइन फूल थे और एक चमकता हुआ बहता झरना था, जो बाद में पीने के पानी का अच्छा स्रोत था।
लेशॉक्स हट खाली थी और काफी साफ-सुथरी थी। हट की बुक में आखिरी एंट्री क्लब एल्पिन फ्रांसे (सीएएफ) के एक सदस्य की थी जो काम कर रहा था/सफाई कर रहा था।

पार्टी चल रही थी। ज़ाहिर है, उन्हें रसोई पर काम करने का समय नहीं मिला था! मैंने अपने जूते और मोज़े उतारकर धूप में फैला दिए, अपना स्टोव खोला और चलते-फिरते एक घूंट पानी पिया। एक उपयुक्त बड़ा पानी का बर्तन ढूंढकर, मैंने बढ़िया रबर के जूते पहने और पानी लाने के लिए पहली बर्फीली ढलान से नीचे रास्ते पर फिसल गया। दोपहर का समय था, धूप में बैठकर शानदार नज़ारों का आनंद लेने के लिए काफी समय था।

बाद में मेरी शांति की उम्मीद तब चकनाचूर हो गई जब मैंने अपने नीचे ग्लेशियर पर चार लोगों को धीरे-धीरे चढ़ते देखा। एक घंटे बाद दो युवा और महत्वाकांक्षी फ्रांसीसी गाइड आए, फिर एक मिलनसार फ्रांसीसी जोड़ा। मैं एक शांत, एकांत शाम बिताना चाहता था, आराम करना चाहता था, खुद को तैयार करना चाहता था और सोचना चाहता था, लेकिन कई मायनों में किसी के साथ यह ज़्यादा सुखद होता। मेरा चूल्हा ज़ोरों से जल रहा था और उसमें झटपट चाय बन जाती थी, जिसे गाइडों ने खुशी-खुशी साझा किया, हालांकि मेरी उपस्थिति से वे थोड़े हैरान थे। फ्रांसीसी जोड़ा जब पहुंचा तो इस दूरस्थ झोपड़ी तक पहुंचकर बहुत खुश हुआ और उन्होंने उदारतापूर्वक चॉकलेट बांटकर और सिगरेट देकर अपनी खुशी ज़ाहिर की। गाइडों और मेरे लिए यह सिर्फ़ शुरुआती बिंदु था, यात्रा की शुरुआत का पड़ाव, लेकिन उनके लिए यह खुद एक रोमांच था, और अंत में तीन असली पर्वतारोहियों के साथ एक झोपड़ी साझा करना उनके दिन को पूरा कर गया। मेरी फ्रेंच भाषा ठीक-ठाक थी, पर सीमित ही थी। मैं अपनी बात आसानी से समझा पाता था, लेकिन सामने वाले की प्रतिक्रिया समझना अक्सर मुश्किल होता था। हमेशा की तरह, मुझे लगता है कि गाइडों ने मान लिया था कि मैं बस घूमने आया हूँ, हालाँकि सुबह के लिए तैयार मेरा सामान देखकर उनकी दिलचस्पी ज़रूर जाग उठी थी। लेकिन जब मैंने सुना कि उनकी योजना भी श्राउड पर्वत पर चढ़ने की है, तो मुझे निराशा हुई। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई और भी उसी रास्ते पर जा रहा होगा। झोपड़ी में सिर्फ़ तीन पर्वतारोही थे, हमारे चारों ओर सैकड़ों रास्ते थे, और हम सब एक ही रास्ते पर जा रहे थे।

किसी बड़ी चढ़ाई या किसी महत्वपूर्ण मार्ग से ठीक पहले वाली रात को कैसा महसूस होता है, इसे शब्दों में बयां करना बेहद मुश्किल है, खासकर उन मार्गों को जिन्हें मैंने चुना था। ज़ाहिर है, मन में काफी घबराहट होती है। जैसे-जैसे अंधेरा छाता है, वैसे-वैसे शंकाएं भी बढ़ने लगती हैं। क्या मुझमें यह क्षमता है, क्या मुझमें इसे पूरा करने का आत्मविश्वास है? यूरोप की पर्वतारोहियों की झोपड़ियों में, इन सवालों के जवाब ढूंढने के लिए हिम्मत जुटाने के लिए अक्सर खूब शराब पी जाती है, लेकिन मेरे पास कभी भी मनोबल बढ़ाने के इस तरीके को अपनाने के लिए पैसे नहीं थे।

चढ़ाई से पहले की रात आमतौर पर छोटी होती है, क्योंकि पर्वतारोही बहुत जल्दी निकल पड़ते हैं और घबराए हुए लोग बीच के अधिकांश घंटों में करवटें बदलते रहते हैं। चूंकि अकेले चढ़ाई करना मूल रूप से एक तेज़ गति वाली गतिविधि है, इसलिए आमतौर पर मुझे सुबह सबसे पहले उठने की आवश्यकता नहीं होती है।

एक कठिन दिन की गर्मी

प्रस्थानों की लहर के कारण रात लंबी हो गई है, लेकिन प्रतीक्षा भी लंबी हो गई है। मुझे उम्मीद थी कि मैं एक ही दिन में श्राउड की चढ़ाई और उतराई पूरी कर लूंगा और तकनीकी चढ़ाई दिन के उजाले में कर लूंगा, ताकि मुझे सुबह जल्दी निकलने के लिए अंधेरे में भटकना न पड़े।

सोने से पहले आप अपना सारा सामान व्यवस्थित कर लेंगे, थैले में वह सब कुछ पैक कर लेंगे जो आप ले जाने वाले हैं और सुबह पहनने के लिए ज़रूरी कपड़े और सामान एक साफ-सुथरे ढेर में रख देंगे। बिस्तर पर आप अपने सामान की एक बार फिर से समीक्षा करेंगे और चढ़ाई के रास्ते को अच्छी तरह से समझ लेंगे। एक क्रैम्पोन भूल जाने पर उसे चढ़ाई के निचले हिस्से तक नहीं लौटाया जा सकता और रास्ते में भटक जाने से आपकी चढ़ाई विफल हो सकती है। हर छोटी से छोटी बात उतनी ही महत्वपूर्ण है, जो चढ़ाई की सफलता में योगदान देती है।

लेकिन इंतज़ार करना सबसे मुश्किल होता है। कम से कम यह रस्सियों से चढ़ाई करने में होने वाले इंतज़ार जितना बुरा नहीं है, जैसे कि बेले स्टांस पर खड़े होकर अपने साथी के आने या ऊपर की चढ़ाई पूरी करने का इंतज़ार करना। आपके पास ठंड के बारे में सोचने का समय होता है, घड़ी देखने और दिन को तेज़ी से बीतते देखने का समय होता है, स्थिति और आसपास के माहौल पर विचार करने का समय होता है। अकेले चढ़ाई करने में आपको ऐसा कुछ नहीं मिलता। आप शुरू से अंत तक पूरी एकाग्रता के साथ अकेले होते हैं, आपकी नज़रें चढ़ाई के तल से शिखर तक ही सीमित होती हैं। आप लक्ष्य को देखते हैं और सावधानी से लेकिन तेज़ी से उसकी ओर बढ़ते हैं।

लोगों ने मुझसे पूछा है कि क्या मुझे लगता है कि मैं जो करता हूँ वह लापरवाही भरा है। मुझे उम्मीद है कि ऐसा नहीं है। सबसे कठिन और सबसे संतोषजनक हिस्सा सब कुछ सही ढंग से करना है - सही रास्ता अपनाना, रास्ते में न भटकना, पहाड़ से सुरक्षित रूप से घाटी में उतरना और अच्छी यादें लेकर लौटना, लेकिन पहाड़ पर कोई निशान न छोड़ना। एक साथी अकेले पर्वतारोही ने मुझे बताया कि एक बार सर्दियों में आल्प्स में एक प्रमुख मार्ग पूरा करते समय, वह अपने साथ अतिरिक्त दस्ताने नहीं ले गया था। जब मैंने पूछा कि क्यों नहीं, तो उसका जवाब था कि कोई ज़रूरत नहीं थी और वह उन्हें पैक करना भूल ही गया था। जब मैंने उससे पूछा कि खराब मौसम की स्थिति में पहाड़ से नीचे उतरने के लिए उसके पास नक्शा और कंपास क्यों नहीं था, तो उसने कहा कि उसने सोचा था कि उसे कोई न कोई मिल जाएगा। कोई समस्या नहीं होगी। शायद यह सिर्फ पुरुषों का अहंकार था। शायद मैं थोड़ा भावुक हूँ। लेकिन मेरे लिए ये दोनों चूक लापरवाही ही थीं।

पर्वतारोही जीवन का भरपूर आनंद लेते हैं। आखिरकार, उनके पास अभी भी कई चढ़ाइयाँ बाकी हैं, इसलिए संतुष्टि का एक हिस्सा जोखिमों को कम करना है, और जैसा कि हर अच्छी गर्ल गाइड या बॉय स्काउट जानता है, सफलता का राज तैयार रहना है।

पहाड़ विशाल और भव्य हो सकते हैं, और जब आप अकेले हों तो वे बहुत डरावने हो सकते हैं।

रात के अंधेरे में झोपड़ी से बाहर निकलना

सुबह-सुबह का अनुभव अनोखा हो सकता है। लेकिन पहाड़ चढ़ने और आनंद लेने के लिए होते हैं, जीतने के लिए नहीं। मुझे लगता है कि अकेले पर्वतारोहण करते समय, प्रकृति के साथ पहले से कहीं अधिक जुड़ाव महसूस होता है और बाहरी प्रभावों का कोई प्रभाव नहीं होता, मानो एक छठी इंद्री काम करने लगती है। अगर सब कुछ ठीक रहा, तो शायद आपको अपने मनचाहे पहाड़ पर चढ़ने का मौका मिल जाए।

दो फ्रांसीसी गाइडों के आने से मेरी तात्कालिक योजनाएँ जटिल हो गई थीं। मैं दुविधा में था कि क्या उन्हें पहले जाने दूँ और उन्हें इतना समय दूँ कि मुझे उन्हें पकड़ने की ज़रूरत न पड़े, लेकिन साथ ही यह जोखिम भी उठाऊँ कि वे मुझ पर बर्फ और पत्थर गिरा सकते हैं। या क्या मुझे योजना से पहले ही निकल जाना चाहिए और उनके रास्ते से हट जाना चाहिए? लेकिन इसका मतलब होगा अंधेरे में, ताज़ा बर्फ से ढकी दरारों वाले एक जटिल ग्लेशियर से होकर चढ़ाई करना। नहीं, यह एक मूर्खतापूर्ण विचार था जो खतरनाक, बल्कि डरावना भी हो सकता था - इसलिए मैंने पहली योजना को चुना। मैंने अपनी रोलेक्स घड़ी की चमकदार सुइयों को देखा: रात के 1 बजे थे। रोलेक्स ने मुझे ये समय दिया था, जो मुझ पर दूसरों के भरोसे की एक सुखद याद दिलाता था। मैं शांत हो गया और गाइडों के उठने और जाने का इंतज़ार करने लगा, इस बात से संतुष्ट था कि मैंने एक निर्णय ले लिया था। रात के 2 बजे वे उठकर चलने लगे और 2:30 बजे तक वे जा चुके थे। मैं अपना चूल्हा जलाने के लिए उठा और फिर दस मिनट चिंतन करने के लिए वापस लेट गया।

वह खुशमिजाज फ्रांसीसी जोड़ा काफी देर तक सो चुका था और पर्वतारोहण की संभावना को लेकर उत्साहित था। वे मुझे जाते हुए देखने के लिए नीचे आए।

गुरुवार, 17 जून की सुबह 3:30 बजे, मैंने अपनी हेडलाइट जलाई और अंधेरी रात में नीचे उतरना शुरू किया। मेरे पीछे एक कैमरे की फ्लैश चमकी। उन्होंने मेरी तस्वीर खींच ली थी। मैं धीरे-धीरे पगडंडी पर आगे बढ़ा और बर्फ के टीले की ओर वापस जाने लगा, रोशनी की अपनी छोटी सी दुनिया में अकेला। स्की पोल से बर्फ को कुरेदते हुए मुझे यह देखकर खुशी और राहत मिली कि हिमस्खलन का मलबा पिछली दोपहर से काफी सख्त हो गया था। ग्लेशियर की ओर - मैं अपने रास्ते पर था!

मैं धीरे-धीरे ग्लेशियर पर चढ़ता गया, बीच-बीच में हेडलाइट बंद करके पहाड़ की बनावट देखता रहा ताकि यह सुनिश्चित कर सकूँ कि मैं सही रास्ते पर हूँ, और फिर टॉर्च चालू करके देखता कि बर्फ में गड्ढे कहाँ हैं। जैसे-जैसे मैं ऊपर चढ़ता गया, बर्फ गहरी होती गई और मेरे पैरों के निशान और भी स्पष्ट होते गए। उस समय किसी दरार में गिरना मेरी सबसे बड़ी इच्छा थी। घुटनों तक या उससे भी नीचे बर्फ में धंस जाना मेरे लिए काफी मुश्किल था, लेकिन मैं अच्छी तरह से आगे बढ़ रहा था। मैं जोश से भरा हुआ था और खुद को मजबूत महसूस कर रहा था। युवा गाइड छोटी पहाड़ी स्की का इस्तेमाल कर रहे थे और उनके स्की के निशान अच्छे थे, लेकिन पैदल चलने में वे मेरे किसी काम के नहीं थे।

एक कठिन दिन की गर्मी

कल शाम, रात होने से पहले, मैंने ग्लेशियर के आधार तक जाने का रास्ता ध्यान से नोट कर

लिया था, लेकिन हमेशा की तरह, धुंधली रोशनी में हालात बिल्कुल अलग थे। मैंने उस रास्ते का अनुसरण किया जिसके बारे में मुझे उम्मीद थी कि वह ठीक होगा, लेकिन जैसे-जैसे मैं ऊपर चढ़ता गया, वह दरारों वाले एक ऐसे क्षेत्र में ले गया जो नीचे से दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने दाईं ओर कोशिश की। मेरी स्की पोल सीधे बर्फ के नीचे एक छेद में चली गईं, जिससे पता चला कि बर्फ के नीचे एक छेद है। मैंने बाईं ओर कोशिश की। फिर से मेरी पोल ने नीचे छेद बना दिए। मैंने सोचा कि क्या बैठकर बेहतर रोशनी का इंतजार करूँ, लेकिन मैंने अपने कदम पीछे हटाकर फिर से कोशिश करने का फैसला किया। इस बार ग्लेशियर बेहतर दिख रहा था और मैं कुछ छोटे-छोटे छेदों से होते हुए, पहले दाईं ओर, फिर बाईं ओर और सीधे वॉकर स्पर के आधार तक पहुँच गया। जल्द ही, सुरक्षित और आसान ढलान वाली बर्फ मुझे उस बर्गश्रंड तक ले गई जो ग्लेशियर के शुरुआती संकरे रास्ते की रक्षा कर रहा था। लेकिन आसान ढलान का मतलब था गहरी नरम बर्फ।

पिछले दशक में आल्प्स क्षेत्रों के धीरे-धीरे सूखने के कारण, ग्लेशियर अधिक घुमावदार और टेढ़े-मेढ़े होते जा रहे हैं और जो रास्ते पहले सीधे-सादे थे, वे अब कठिन, खतरनाक और समय लेने वाले हो गए हैं, खासकर अकेले पर्वतारोहियों के लिए।

बर्फ की खाई को पार करना कोई मुश्किल काम नहीं था क्योंकि कई हफ्तों के खराब मौसम ने बर्फ से बड़े-बड़े गड्ढों को भरने में मदद की थी। बस सावधानी और सतर्कता बरतने की जरूरत थी। अब समय था अपने बर्फ के औजारों को रखने का, और आगे बढ़ने का।

सुबह सात बजे इंजन को पूरी रफ्तार में चलाने का समय था। शुरुआती खाई खड़ी ढलान वाली थी, लेकिन बर्फ पर चढ़ाई करना मज़ेदार था। अच्छी बर्फ जल्द ही खत्म हो गई और उसकी जगह खड़ी, सपाट चट्टान पर जमी पतली बर्फ ने ले ली। मुझे पिछले गर्मियों में लेस्को हट की किताब में एक निराश न्यूज़ीलैंडवासी की लिखी बात याद आई: 'श्राउड पर बर्फ नहीं है, काश कोई हिमयुग होता!'

बर्फ की छोटी-छोटी नालियाँ, जिनका मैं पीछा कर रहा था, जैसे ही चट्टान में जाकर खत्म होतीं, मैं बाईं या दाईं ओर मुड़कर दूसरी नाली की ओर चला जाता और याद रखता, जैसा कि किसी ने मुझे एक बार सलाह दी थी, कि 'लंबी कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से आप हमेशा मुश्किल हिस्सों को पार कर सकते हैं', और इस तरह मैं उस पतले हिस्से से आगे बढ़ता रहा। मैं बस आगे बढ़ते रहना चाहता था।

जैसे ही मैं खाई के खड़ी ढलान वाले हिस्से के शिखर पर पहुँचा, ढलान कम होकर मुख्य बर्फीले मैदान में बदल गई। मेरी नज़र युवा फ्रांसीसी गाइडों पर पड़ी। उनके बहुत पहले शुरू करने और स्की से पहुँचने के कारण वे अभी भी मुझसे कुछ दूरी पर थे, मेरे बाईं ओर ऊपर की ओर बढ़ रहे थे। सबसे रोमांचक तकनीकी बर्फ चढ़ाई खत्म हो चुकी थी। बर्फीला मैदान अधिक नीरस होता गया और मेरी गति धीमी हो गई क्योंकि मैं और भी सावधान हो गया। अब मुझे ऊँचाई का एहसास होने लगा था, और पुरानी कठोर सर्दियों की बर्फ पर पड़ी ताज़ी बर्फ के कारण मुझे स्कारफेस क्रैम्पोन से मज़बूत पकड़ बनाने के लिए ज़ोरदार किक मारनी पड़ रही थी। आगे के दोनों पॉइंट बर्फ में धँसे हुए थे, एड़ियाँ पाउडर बर्फ पर टिकी हुई थीं!

अब तक शैमोनिक्स का मौसम पूर्वानुमान पूरी तरह सटीक साबित नहीं हुआ था। वाकई, मौसम बहुत सुहाना था! बादल अचानक कहीं से प्रकट हो गए थे और मैं बादलों और बर्फ के मैदान के बीचोंबीच था। किसी ने एक बार श्राउड बर्फ के मैदान का वर्णन इस प्रकार किया था, "...जैसे किसी गिरजाघर की छत के बाहर चढ़ना, जिसके नीचे और ऊपर दोनों ही गायब हो गए हों।" बर्फ के मैदान की प्राकृतिक रेखा और ढलान का अनुसरण करते हुए, मैं ऊपर चढ़ता गया, अपनी ठुड्डी को तेज़ हवा से बचाते हुए जो अब अचानक उठ खड़ी हुई थी और मुझ पर बर्फीले कणों और धूल के कणों की बौछार कर रही थी। हिरोंडेल्स रिज के चट्टानी किनारे तक जाने वाली खड़ी और संकरी अंतिम खाई में मेरी मुलाकात दो फ्रांसीसी गाइडों से हुई। वे पाउडर बर्फ में जूझ रहे थे और तेज़ हवा और बर्फीले कणों से बिल्कुल भी खुश नहीं थे। मैं भी नहीं था, क्योंकि वे जितनी बर्फ हटा रहे थे, वह मुझ पर गिर रही थी! इसलिए ऊपर एक ऐसी खाई मिलने तक छिपना आसान था जहाँ कोई फ्रांसीसी गाइड न हो। मैं अपनी स्प्रेवे गोर-टेक्स जैकेट और माल्डेन फ्लीस में गहराई से घुस गया और उनके बाहर आने का इंतजार करने लगा।

चट्टान से और भी अधिक बर्फ़ झाड़ते हुए, चट्टान की मज़बूत पकड़ का आनंद लेते हुए, मैं संतुलन बनाते हुए ऊपर की ओर बढ़ा और जल्द ही हिरोंडेल्स रिज पर पहुँच गया। सुबह के 9:30 बज रहे थे। आज इटली का कोई नज़ारा नहीं दिख रहा था। बस तेज़ हवा, बादल और बर्फीली हवा। लेकिन मैं अपने छह सबसे बड़े पहाड़ों में से पहले की चोटी पर था और महीनों की मेहनत रंग लाई थी।

पिछले छह महीनों से मैं धीरे-धीरे अपनी फिटनेस को बढ़ा रही थी, छोटी-छोटी दौड़ें नियमित रूप से लगाती थी। ज़्यादातर दिन मैं नाश्ते से पहले दौड़ लगाती थी, कभी दो से तीन मील, कभी उससे भी ज़्यादा, लेकिन हमेशा कुछ चढ़ाई वाली दौड़ ज़रूर करती थी। मैंने पाया कि इससे न केवल मुझे पूरे दिन ज़्यादा आराम महसूस होता था, बल्कि यह उस मानसिक तैयारी की शुरुआत भी थी जिसकी मुझे ज़रूरत पड़ने वाली थी। सर्दियों की गीली और ठंडी सुबहों में बाहर निकलना अनुशासन की मांग करता था; मुझे हमेशा अपने आरामदायक बिस्तर की गर्माहट छोड़ना नापसंद था, लेकिन एक बार बाहर निकल आने पर सब कुछ बेहतर लगने लगता था! इस धीमी और क्रमिक रूप से समग्र फिटनेस बढ़ाने के बाद, मार्च के अंत में आल्प्स पहुँचने पर मैंने अपना प्रशिक्षण तेज़ कर दिया। जब हम शैमोनिक्स पहुँचे, तो मैंने न केवल लंबी दौड़ें शुरू कीं, बल्कि ज़्यादा चढ़ाई वाली और ज़्यादा खड़ी चढ़ाई पर भी ध्यान केंद्रित किया। अब मुझे पूरे दिन दो बच्चों की ज़िम्मेदारी नहीं उठानी पड़ती थी। जेबी इसमें मेरी मदद करता था, और मैं अपनी फिटनेस को बेहतर बनाने पर ध्यान दे सकती थी। मैंने पाया कि दो से तीन घंटे की लंबी दौड़, जिसमें एक हजार मीटर की चढ़ाई और काफी मील की दूरी शामिल थी, हर दिन बहुत ज्यादा थी, इसलिए मैं अक्सर हर दो या तीन दिन में एक बार ही ऐसी दौड़ लगाता था और बीच-बीच में घाटी में चट्टानों पर चढ़ाई करने से मैं काफी हद तक फिट रहता था।

एक कठिन दिन की गर्मी

कैलांक्स में हमारा अवकाश भी अच्छा रहा। हालांकि ऊंचाई पर चढ़ने का कोई प्रशिक्षण नहीं था,

लेकिन लंबी चढ़ाई और चट्टानों पर चलने के लंबे अनुभव ने मुझे चट्टानों पर चढ़ने का आत्मविश्वास और समग्र रूप से शारीरिक क्षमता का ऐसा आत्मविश्वास दिया जिससे मैं संतुष्ट था। अब आखिरकार मैं अपनी इस मेहनत का सदुपयोग कर पाया और पूरी शारीरिक क्षमता और आत्मविश्वास के साथ सुरक्षित और तेज़ी से चढ़ाई पूरी की।

जैसे ही मैंने चलना बंद किया, मेरा तापमान एकदम से गिर गया, इसलिए मैंने एक लीटर आइसोस्टार (पानी की कमी पूरी करने के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं!) और जॉर्डन के फ्रूस्ली बार पीकर अपनी ऊर्जा को फिर से बढ़ाया। फिर मैंने अपने पास मौजूद सभी अतिरिक्त कपड़े पहन लिए, अपने गीले ऊनी दस्तानों को गर्म ऊनी और गोर-टेक्स बाहरी दस्तानों से बदल दिया और पहाड़ी से नीचे उतरकर घाटियों से होते हुए लेस्को ग्लेशियर बेसिन में जाने की तैयारी की। मेरे ठीक बाईं ओर एक छोटी सी चट्टान के नीचे फ्रांसीसी लोग दुबके हुए थे। उन्होंने पिछली रात मुझे बताया था कि वे शिखर पर चढ़कर इटली में पास्ता की शानदार दावत के लिए नीचे उतरने का इरादा रखते हैं। हालाँकि, जैसे-जैसे हवा तेज़ होती गई और बर्फ़बारी होने लगी, उनका उत्साह कम होता गया। क्या मुझे फ्रांस जाने का रास्ता पता था? मैंने उन्हें बताया कि मुझे मुख्य हिस्सा याद है - कोल डेस हिरोंडेल्स से नीचे उतरने के बाद उतरने वाली खाई का ऊपरी हिस्सा ढूँढना। कुछ मिनट बाद उन्होंने पास्ता खाने का अपना इरादा छोड़ दिया और मेरे साथ नीचे जाने का फैसला किया।

हमने तेज़ी से उतरने के लिए मेरी 100 मिमी और उनकी दो 50 मिमी रस्सियों को एक साथ मिला लिया और रस्सी से उतरते हुए नीचे की ओर बढ़ने लगे। मैकिंटायर/टॉड मार्ग का शिखर अविश्वसनीय था। एक चट्टानी दरार के ऊपर एक विशाल चट्टानी शिखर था जो हवा से उड़ाई गई बर्फ से ढका हुआ था और सुंदर और अद्भुत आकृतियाँ बना रहा था।

दाईं ओर बर्फ की खाई से नीचे उतरकर, बाईं ओर चोटी तक चढ़ाई की और खड़ी चट्टानी दीवारों (हिरोंडेल्स रिज की चढ़ाई के सबसे कठिन हिस्से) से कुछ और रस्सियों से नीचे उतरकर हम कोल डेस हिरोंडेल्स के किनारे पर पहुँच गए। हमने रस्सियाँ खींचीं और कोल के ठीक बीच में उतर गए। घूमते बादलों के बीच और तेज़ हवा और बर्फ के झोंकों का सामना करते हुए, हम तब तक खोजते रहे जब तक मुझे लेस्को ग्लेशियर तक जाने वाली मुख्य उतरने वाली खाई का ऊपरी सिरा नहीं मिल गया। वहाँ स्पष्ट बट्रेस और प्रवेश स्लैब तो था, लेकिन बड़ा चमकदार एबसेल बोल्ट कहाँ था? कोई फायदा नहीं, आज वह कई मीटर बर्फ और हिम से ढका हुआ था।

हम खाई में नीचे उतरते गए जब तक कि हमें कई रस्सियों से उतरने के लिए पहली रस्सी लगाने के लिए साफ़ चट्टान नहीं मिल गई। पर्वतमाला की चोटियों के बाद एक सीधी खाई थी जिससे सीधे ग्लेशियर तक बहुत तेज़ी से और कुशलता से उतरा जा सकता था। बस रस्सियाँ लगाएँ, सभी रस्सी से नीचे उतरें, रस्सियाँ खींचें और दोहराएँ, जल्द ही हम लेस्को ग्लेशियर पर वापस आ गए। जैसे ही हम

बर्फ पर आगे बढ़ते हुए हम बादलों से बाहर आ गए और समतल जमीन पर आकर राहत महसूस करते हुए हमने बातचीत की, अपना बचा हुआ खाना खाया और अपने उपकरण उतार दिए।

उतरने का अगला हिस्सा थोड़ा मुश्किल लग रहा था। ताज़ा गिरी बर्फ़ गहरी थी और उसने ज़्यादातर दरारों को छिपा रखा था। हल्की-फुल्की खाइयाँ और गड्ढे ही वो संकेत थे जिनसे सावधान रहना था। मैं चल पड़ा। दाएँ, बाएँ, दाएँ, बर्फ़ में घुटनों तक धंसता हुआ। मैं नीचे की ओर बढ़ता गया। हल्की मुस्कान लिए दो फ़्रांसीसी लोगों ने अपनी विशेषज्ञ पर्वतीय स्की पहनकर तेज़ी से मज़ेदार तरीके से नीचे उतरना शुरू किया। अरे बाप रे! उन्हें पता चला कि बर्फ़ इतनी चिपचिपी और मुलायम थी कि उनकी स्की पर बर्फ़ चिपक गई और हर मोड़ पर वे गिर पड़े! ज़ाहिर है, कम उत्साह और ज़्यादा सावधानी वाली स्की तकनीक की ज़रूरत थी। अपने मज़बूत पैरों और स्की पोल की मदद से मैं बर्फ़ की ढलान कम होने तक उनके साथ चल पाया। अब वे बिना मुड़े नीचे फिसल सकते थे, लेकिन उनके पैर इतने थक चुके थे कि वे आराम करने और पानी पीने के लिए बार-बार रुकते रहे। हमने बातें कीं और फिर अच्छी रफ़्तार से हम ग्लेशियर के आसान हिस्से से एक साथ नीचे उतरे। स्की करने लायक बर्फ अब कम हो रही थी, इसलिए हमने इस बार काफी देर तक आराम किया, इससे पहले कि हम लेस्चौक्स ग्लेशियर के घुमावदार मोरेन से होते हुए वापस मेर डे ग्लेस तक उतरने की मुश्किल यात्रा शुरू करते।

गंदी बर्फ पर लंबी, थका देने वाली चढ़ाई के बाद मोंटेनवर्स की सीढ़ियाँ उतरीं। मैंने एक बड़े पत्थर के नीचे झाँका और मुस्कुराते हुए अपने रीबॉक जूते निकाले। बड़े आनंद से मैंने अपने प्लास्टिक के जूते उतारे और घाटी में वापस उतरने के लिए तैयार हो गया, अपने पैरों को उतरने की थकान से राहत दी। पानी की सख्त ज़रूरत थी, इसलिए मैं सीढ़ियों से तेज़ी से मोंटेनवर्स स्टेशन की ओर भागा, लेकिन वहाँ सिर्फ़ स्टेशन की छत से बहकर आने वाला पानी ही था। सब कुछ बंद था। हम एक पेय पदार्थ बेचने वाली मशीन के पास से गुज़रे, लेकिन मेरे पास पैसे नहीं थे और फ्रांसीसी लोगों को भी थोड़ी देर बाद एहसास हुआ कि उनके पास सही खुले पैसे नहीं हैं। जंगल से गुज़रते हुए अच्छी तरह से बने रास्ते पर चलते हुए हम नीचे की ओर चल पड़े। आधे रास्ते में, मैं बंद बुवेट पर रुका ताकि अलविदा कह सकूँ, लेकिन दस मिनट बाद मुझे लगा कि वे लोग शायद ऊपर शैमोनिक्स की ओर चले गए होंगे।

मैं एक बार फिर अकेले ही चल पड़ा, इतना थका हुआ कि हर पत्थर आराम करने की जगह लग रहा था। तेज़ी से छा रहे अंधेरे और चीड़ के पेड़ों के घने जंगल के कारण रास्ता देखना मुश्किल हो रहा था। नीचे, नीचे, नीचे। मुझे लगा कि मैं रास्ता भटक गया हूँ, लेकिन समय रहते समझ गया कि अंधेरे की वजह से सब कुछ कितना अलग लग रहा था! लेस ड्रस में शिविर स्थल तक जाने वाली समतल सड़क के आखिरी दो सौ मीटर भी बहुत लंबे लग रहे थे। रात के 10:10 बज रहे थे। मैंने अपना बैग पर्किन्स के पास रखा और बड़े तंबू की ज़िप खोली। केट गहरी नींद में सो रही थी। मैंने दूसरे तंबू में झाँका, टॉम भी गहरी नींद में सो रहा था। मेरा मन कर रहा था कि उन्हें गले लगा लूँ और प्यार कर लूँ। मैं थककर स्लेज पर बैठ गया। मुझे जेबी की बहुत याद आ रही थी, मुझे पता था कि मैं रो दूँगा!

एक आकृति अंधेरे से शांत और धीमी गति से बाहर आई। उसने मुझे गले लगाया, चाहे मैं चढ़ाई

पूरी कर पाया था या नहीं, मुझे देखकर वह प्रसन्न था। उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैं सुरक्षित वापस आ गया था। गर्व से फूला हुआ मैंने उसे बताया। बिग सिक्स को पूरा करने में कई लोगों का अथक परिश्रम लगा था और महीनों के खराब मौसम के बाद, एक शानदार पर्वतीय दीवार पर, कम समय में, एक शानदार चढ़ाई मैंने पूरी कर ली थी।
इतनी थक गई थी कि हिल भी नहीं पा रही थी, इसलिए मैंने जेबी को मुझे लाड़-प्यार करने दिया। उसने मुझे हाइड्रेट करने के लिए कई लीटर गर्म और ठंडा आइसोस्टार पिलाया और फिर मैकेरल सॉस के साथ एक बड़ा पास्ता बनाया, जिसके ऊपर कद्दूकस किया हुआ पनीर था। लाड़-प्यार मिलना कितना शानदार था! खाना-पीना हो जाने के बाद, नींद मुझ पर हावी होने लगी। मुझे गर्म पानी से नहाना था, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी, शावर बंद कर दिए गए थे। जेबी ने मेरे ऊपर कटोरे भर-भरकर गर्म पानी डाला। थकान हावी होने लगी। मेरा शरीर अनियंत्रित रूप से कांपने और थरथराने लगा। मुझे आराम और नींद की ज़रूरत थी। माल्डेन फ्लीस के कई गज के कंबल में लिपटी हुई मैं अपने बिस्तर में घुस गई, आराम किया और सो गई।
उस समय अपने प्रदर्शन का आकलन करना कठिन था। मैं लेस बोइस (1083 मीटर) से लेस्चॉक्स हट (2431 मीटर) तक पैदल चली, श्राउड (750 मीटर लंबा) पर 3010 मीटर से 3760 मीटर तक चढ़ाई की, हिरोंडेल्स रिज और कोल से उतरी, और फिर वापस लेस बोइस तक पैदल आई। साधारण चढ़ाई 2677 मीटर है, और उतराई भी उतनी ही है; कुल दूरी लगभग 33 किलोमीटर है। बिना रस्सी के मेरी एकल चढ़ाई, जो सवा दो घंटे में पूरी हुई, यानी कुल मिलाकर ढाई घंटे में, शायद अब तक की सबसे तेज़ चढ़ाई है और किसी महिला द्वारा की गई पहली एकल चढ़ाई है!
जेबी: किसी पर्वतारोही द्वारा किसी विशेष मार्ग को पूरा करने में लगने वाला समय उसके प्रदर्शन के बारे में बहुत कुछ बताता है। मीडिया, विशेष रूप से यूरोप में, की बढ़ती रुचि के कारण, इसे मापने के लिए अलिखित लेकिन स्पष्ट रूप से समझे जाने वाले नियम विकसित हुए हैं। आपका चढ़ाई का समय तकनीकी चढ़ाई शुरू होने से लेकर उसके समाप्त होने तक गिना जाता है। इसमें विश्राम का समय भी शामिल है, लेकिन अन्य पर्वतारोहियों द्वारा वास्तविक रूप से रोके जाने आदि को चढ़ाई में लगने वाले कुल समय से घटा दिया जाएगा।
जब तक आपके अहंकार को लगातार संतुष्ट करने की आवश्यकता न हो, तब तक समय को अगले पंद्रह मिनट तक पूर्णांकित करना एक अच्छा विचार है।
एलिसन के श्राउड पर्वत पर बिताए गए समय ने शैमोनिक्स के अय्याशों में अविश्वास की लहर दौड़ा दी। किसी महिला द्वारा अब तक का सबसे तेज़ समय, और वह भी फ्रांसीसी नहीं! हालांकि, शैमोनिक्स की एक युवा गाइड, जिसे उसने पीछे छोड़ा था, ने कम से कम उसकी प्रशंसा में साहस और सटीकता दिखाई: 'हम उससे बहुत पहले स्की पर निकले थे, हम फिट हैं और अच्छे पर्वतारोही हैं। हमने नीचे देखा और वह हमारे ठीक पीछे थी।'
45
मुझे ठीक होने में कई दिन लगे और ज़ाहिर है, मौसम इस साल के अपने सामान्य खराब मौसम में लौट आया था। मैंने कुछ देर घाटी की चट्टानों पर चढ़ाई की ताकि मौसम ठीक रहे और एक सुबह मौसम अच्छा होने पर, मैंने एगुइल्स रूज में एगुइल डे ला ग्लियर के दक्षिण-दक्षिण-पूर्व

ढलान पर चुपके से एक छोटी सी अल्पाइन क्लासिक रॉक सोलो चढ़ाई का आनंद लिया। फिर हमने सुपरमार्केट से खाने-पीने का सामान और सस्ता डीजल दोबारा खरीदा और 24 जून को स्विट्जरलैंड के लिए रवाना हो गए। क्या हमें मैटरहॉर्न के उत्तरी भाग (नंबर 2) पर चढ़ाई के लिए अच्छा मौसम और अनुकूल परिस्थितियां मिलेंगी? एक चढ़ाई पूरी हुई, पांच बाकी!

6

मैटरहॉर्न –

4478 मीटर

इस क्षेत्र का सबसे खूबसूरत नजारा मैटरहॉर्न की गौरवशाली और विशाल चोटी है।

होरेस बेनेडिक्ट डी सॉसर, 1789

मैटरहॉर्न निःसंदेह दुनिया का सबसे प्रसिद्ध पर्वत है। बच्चों द्वारा बनाए गए इसके मनमोहक चित्र ने अन्य किसी भी पर्वत की तुलना में कहीं अधिक कैलेंडर, किताबों के कवर, पहेलियाँ, पोस्टकार्ड, चाय के तौलिए, वीडियो, टी-शर्ट, ऐशट्रे और टोपी की शोभा बढ़ाई है। मैटरहॉर्न ही आधुनिक ज़र्मैट का एकमात्र कारण है, जो स्विट्ज़रलैंड में स्थित एक आलीशान और महंगा रिसॉर्ट है। स्विट्जरलैंड और इटली की सीमा पर स्थित इस पर्वत का एक लंबा और उतार-चढ़ाव भरा इतिहास रहा है और पहली चढ़ाई का नाटकीय घटनाक्रम हॉलीवुड की किसी फिल्म या किसी लोकप्रिय थ्रिलर की कहानी जैसा लग सकता था।

अंग्रेज, फ्रांसीसी और इतालवी सभी उस प्रारंभिक प्रयास में सक्रिय थे जिसे जॉन रस्किन ने 'यूरोप की सबसे उत्कृष्ट चट्टान' कहा था। 1862 में अंग्रेज मैटरहॉर्न के दक्षिण-पश्चिम सहायक शिखर पिक टिंडल तक पहुंचे और उसका नामकरण किया।

हालांकि, मुख्य खिलाड़ी जीन-एंटोइन कैरेल और एडवर्ड व्हिम्पर थे, जो कभी सहयोग करते थे तो कभी प्रतिस्पर्धा करते थे। जुलाई 1865 तक व्हिम्पर आठ अलग-अलग प्रयास कर चुके थे और अपने प्रस्तावित नौवें प्रयास के लिए उन्हें पता चला कि कैरेल उनके साथ नहीं आ सकते क्योंकि उन्हें आओस्टा घाटी में एक ज़रूरी काम था। वास्तव में, जीन-एंटोइन कैरेल और उनके साथी मैटरहॉर्न के इतालवी हिस्से में स्थित ब्रेउइल की ओर तेज़ी से बढ़ रहे थे ताकि वे अपना खुद का प्रयास कर सकें! व्हिम्पर ज़्यादा देर तक मूर्ख नहीं बने और वे पूरी गति से ज़र्मैट की ओर चल पड़े। वहाँ उन्हें जो मिला, वह यह था कि...

The Schmid route on the North Face
of the Matterhorn (4478m)
HÖRNLI RIDGE
HÖRNLI HUT

ज़र्मैट में प्रतिस्पर्धा ज़्यादा थी, लेकिन इस बार ब्रिटिश पक्ष से। चार्ल्स हडसन अपने युवा साथी डगलस हैडो के साथ लॉर्ड फ्रांसिस डगलस के सहयोग से आगे बढ़ने का इरादा रखते थे, जिन्होंने चामोनिक्स के प्रमुख गाइड मिशेल क्रोज़ की सेवाएं प्राप्त कर ली थीं। क्रोज़ पहले भी व्हिम्पर के साथ कई पर्वतारोहण और प्रथम आरोहण कर चुके थे, जिनमें ग्रांडेस जोरासेस पर स्थित बैरे डेस एक्रिंस (4101 मीटर) और प्वाइंट व्हिम्पर (4184 मीटर) शामिल थे। व्हिम्पर इस दल में शामिल हो गए और 13 जुलाई, 1865 को, पीटर टौगवाल्डर सीनियर और उनके बेटे पीटर जूनियर के साथ, जो ज़र्मैट से कुली के रूप में आए थे, वे मैटरहॉर्न की हॉर्नली रिज पर चढ़ाई करने के लिए रवाना हुए।

उन्होंने रात में डेरा डाला और मिशेल क्रोज़ ने पीटर टौगवाल्डर जूनियर के साथ शाम को एक सर्वेक्षण किया और यह खुशखबरी लेकर लौटे कि उन्हें कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई है।

14 जुलाई को उजाला होते ही दल ने चढ़ाई शुरू कर दी, जो आखिरकार बेहद साफ दृश्यता वाला एक शानदार चढ़ाई का दिन साबित हुआ। कंधे तक पहुँचने तक वे मुख्य रूप से रस्सियों से बंधे जोड़ों में चढ़े। यहाँ रस्सियों से बंधे लोगों का क्रम क्रोज़, व्हिम्पर, हडसन, हैडो, डगलस था, और दोनों टाउगवाल्डर सबसे आखिर में थे।

उन्हें कंधे पर स्थित चट्टान कुछ हिस्सों में बर्फ से ढकी हुई मिली, जिस पर पिछली आंधीयों से कुछ बर्फीली परत जमी हुई थी। क्रोज़ ने नेतृत्व किया और रिज की चोटी से उतरकर उत्तरी ढलान पर चले गए, जहाँ से उन्हें खड़ी चट्टान पर चढ़ाई करनी पड़ी, जो काफी चुनौतीपूर्ण थी। इसके बाद उन्हें एक छोटी, आसान बर्फीली ढलान मिली जो शिखर रिज तक जाती थी।

क्रोज़ और व्हिम्पर अपने साथियों से अलग हुए और शिखर की ओर तेज़ी से बढ़े, जो व्हिम्पर के अनुसार दोपहर 1:40 बजे बराबरी पर समाप्त हुआ। मैटरहॉर्न पर पहली बार चढ़ाई की गई थी, या नहीं?

शिखर की चोटी पर दो ऊँचे बिंदु हैं, एक दूसरे छोर पर। एक स्विट्जरलैंड में है और दूसरा इटली में, जिस तरफ से कैरेल चढ़ाई कर रहे थे। इनमें से सबसे ऊँचा बिंदु कौन सा था और क्या कैरेल और उनकी टीम ने इटली को पछाड़कर दूसरा स्थान हासिल कर लिया था? व्हिम्पर अधीर होकर इटली की ओर चोटी पर दौड़ पड़े। दूसरे छोर पर पहुँचकर उन्होंने नीचे झाँका। उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, उन्हें नीचे कैरेल और उनकी टीम दिखाई दी। उन्होंने क्रोज़ को बुलाया, दोनों ने कैरेल को अपनी सफलता की खबर दी, और जब इटली वालों ने कोई जवाब नहीं दिया तो व्हिम्पर ने शिखर की चोटी से पत्थर उठाकर अपने प्रतिद्वंद्वी पर लुढ़का दिए। कैरेल और उनकी टीम ने जल्दबाजी में पीछे हटना शुरू कर दिया, निस्संदेह वे पहली चढ़ाई में हारने और व्हिम्पर के जीत के निशान से बिल्कुल भी खुश नहीं थे!

वापस स्विस शिखर पर पहुंचकर उन्होंने एक पत्थर का ढेर बनाया और क्रोज़ ने अपनी जीत के प्रतीक के रूप में उस पर अपनी कमीज के साथ एक तंबू का खंभा लगाया। यह था

ज़र्मैट और ब्रेउइल में भी यही नज़ारा देखने को मिला, जहाँ देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने गलत अनुमान लगाया कि कैरेल विजयी हो गए हैं। फिर व्हिम्पर और उनकी टीम ने इटली की चोटी पर एक और पत्थर का ढेर बनाया, मानो उन्हें चिढ़ाने के लिए। वहाँ से उन्होंने एक अद्भुत नज़ारा देखा, जो व्हिम्पर के अपने वर्णन के अनुसार वाकई आश्चर्यजनक रहा होगा। वे बर्निस ओबरलैंड में फिनस्टेरारहॉर्न, डिस्ग्राज़िया, ऑर्टलर, माउंट विसो (लगभग 100 मील या 160 किलोमीटर दूर), आल्प्स मैरिटाइम्स, लेस एक्रिंस, ग्रैयन्स और अंत में, एकदम सही रोशनी में चमकता हुआ, पश्चिमी यूरोप की सबसे ऊँची चोटी, मोंट ब्लैंक को स्पष्ट रूप से देख पा रहे थे - क्या शानदार नज़ारा रहा होगा!

वे एक घंटे से अधिक समय तक शिखर की चोटी पर रहे। अब लौटने का समय हो गया था। व्हिम्पर और हडसन ने प्रस्तावित उतरने की योजना और रस्सियों से बंधे लोगों के क्रम पर चर्चा की। वे अलग-अलग रस्सियों से बंधे जोड़ों के रूप में नीचे उतरने लगे, लेकिन लॉर्ड फ्रांसिस डगलस ने अनुरोध किया कि वे सात लोगों की एक ही रस्सी के रूप में फिर से जुड़ जाएं। उन्होंने ऐसा ही किया और उतरने का क्रम क्रोज़, हैडो, हडसन, डगलस, टौगवाल्डर सीनियर, व्हिम्पर और अंत में टौगवाल्डर जूनियर था।

सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन एक मुश्किल चट्टानी दीवार पर, जहाँ मिशेल क्रोज़ कम अनुभवी हैडो को पैर जमाने में मदद कर रहे थे, हैडो फिसल गए और क्रोज़ को भी उनके पैरों से गिरा दिया। रस्सी पर उनके संयुक्त भार के कारण हडसन अपने कदमों से गिर गए और उन्होंने बदले में डगलस को भी नीचे खींच लिया। पहले चार लोगों का गिरता हुआ भार संयुक्त रूप से टौगवाल्डर्स और व्हिम्पर पर पड़ा। तीनों ने अपनी जगह पर डटे रहे, लेकिन टौगवाल्डर सीनियर के नीचे रस्सी टूट गई और उन्होंने दहशत के साथ अपने साथियों को उत्तरी ढलान की ओर फिसलते और तेजी से नीचे गिरते हुए देखा, जहाँ उनकी निश्चित मृत्यु हो गई। व्हिम्पर ने लिखा, 'इस प्रकार हमारे साथी मारे गए।'

जो कुछ उन्होंने देखा था, उससे स्तब्ध तीनों जीवित बचे लोग कम से कम तीस मिनट तक वहीं जमे रहे। व्हिम्पर ने उनके उतरने की व्यवस्था शुरू की, लेकिन पहले तो टौगवाल्डर्स में से कोई भी टस से मस नहीं हुआ। हालांकि, कुछ प्रोत्साहन के बाद युवा पीटर अपने पिता और व्हिम्पर के साथ नीचे उतर आया। वे साथ खड़े हुए, व्हिम्पर ने टूटी हुई रस्सी के बचे हुए हिस्से को समेटा (जो आज भी मौजूद है और ज़र्मैट संग्रहालय में कुछ कीमत देकर देखा जा सकता है) और उन्होंने घबराते हुए नीचे उतरना शुरू किया। उनकी बेचैनी को और बढ़ाने के लिए, माउंट लिस्कैम के ऊपर आकाश में एक विशाल रंगहीन चाप बन गया। इससे टौगवाल्डर्स और भी घबरा गए, जिसे उन्होंने देवताओं की नाराजगी का संकेत समझा। वे धीरे-धीरे नीचे उतरे और निश्चित रूप से वे बेहद थके-हारे और परेशान दल रहे होंगे, जिन्हें रात होने के कारण पहाड़ी की चोटी पर ही सोना पड़ा। व्हिम्पर ने लिखा, 'एक उबड़-खाबड़ चट्टान पर छह कष्टदायक घंटे बिताने के बाद', वे अगली सुबह ज़र्मैट की ओर नीचे उतरना जारी रखा।

50

एक कठिन दिन की गर्मी

अगले दिन व्हिम्पर, अन्य ब्रिटिश पर्वतारोहियों और उनके गाइडों के साथ, अपने साथियों को

वापस लाने के लिए फिर से ऊपर चढ़े। क्रोज़, हैडो और हडसन उनके गिरने के क्रम में पाए गए। उनकी कब्रें और स्मारक ज़र्मैट चर्चयार्ड में हैं। लॉर्ड फ्रांसिस डगलस का शव कभी नहीं मिला। इस दुर्घटना ने उस समय के अखबारों में खूब हंगामा मचाया। वैलिस सरकार की जांच में विवाद और बढ़ गया, जब पीटर टौगवाल्डर सीनियर ने व्हिम्पर के बयान से अलग बयान दिया, और फिर बार-बार पूछताछ के दौरान अपना बयान और कहानी बदल दी। कई वर्षों तक स्थानीय स्तर पर यह अफवाह और संदेह बना रहा कि टौगवाल्डर सीनियर ने अपने और नीचे के चार लोगों के बीच की रस्सी काट दी थी। मैटरहॉर्न की प्रसिद्धि और आकर्षण उसी दिन से पैदा हुआ और आज भी कायम है।

जीवन की तरह पर्वतारोहण भी कभी स्थिर नहीं रहता और कैरेल और उनकी टीम कुछ दिनों बाद इतालवी पर्वतमाला पर चढ़ाई करने के लिए लौट आई। महत्वाकांक्षी पर्वतारोहियों ने तब शेष दो पर्वतमालाओं पर ध्यान केंद्रित किया और 1879 में महान ए.एफ. मम्मेरी, अलेक्जेंडर बर्गेनर, जोहान पेट्रस और ऑगस्टिन जेंटिनेटा ने ज़मट पर्वतमाला पर चढ़ाई की, और अंततः 1911 में मारियो पियासेंज़ा, जीन-जोसेफ कैरेल और गिउसेप्पे गैस्पर्ड ने फुर्गेन पर्वतमाला पर विजय प्राप्त की। अगले कुछ वर्षों में धीरे-धीरे पर्वतमालाओं पर चढ़ाई पूरी होती गई, लेकिन 1920 के दशक के अंत तक महत्वाकांक्षी जर्मन भाषी पर्वतारोहण जगत की निगाहें आल्प्स की महान उत्तरी पर्वतमालाओं की ओर मुड़ गईं।

गैस्टन रेबुफ़ैट ने अपनी पुस्तक "मेन एंड द मैटरहॉर्न" में नॉर्थ फेस का वर्णन इस प्रकार किया है: मैटरहॉर्न के चार मुखों में से उत्तरी मुख सबसे कठोर, सबसे सुंदर और सबसे विस्मयकारी है; यह हॉर्नली शिखर और ज़मट शिखरों के बीच स्थित है और इसकी ऊंचाई 3500 फीट है। सामने से, ज़िनालोथॉर्न से देखने पर, यह एक पूर्ण त्रिभुज की तरह सरल दिखता है। ज़र्मैट से देखने पर यह पत्थर के एक विशाल, मुड़े हुए कुंडल की तरह प्रतीत होता है। इसे देखना कठिन लगता है, लेकिन सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह खतरनाक है। चट्टान कठोर है, उस पर जमी बर्फ कांच की तरह चिकनी है, तूफान की स्थिति में रुकने या बचाव के लिए कोई जगह नहीं है, लेकिन सबसे बढ़कर, यहां चट्टानों के हिमस्खलन का खतरा रहता है... मैटरहॉर्न विचित्र और हमेशा रहस्यमय है। कई लोगों ने इसका सपना देखा है, फिर भी कुछ ही लोगों ने इस पर चढ़ने का साहस किया है।

बेशक पर्वतारोही आए। 1923 में ऑस्ट्रियाई पर्वतारोही फ्रांज पिएकिएल्को और अल्फ्रेड होरेशोव्स्की (आधुनिक बर्फ हथौड़ों के जनक) ने हॉर्नली रिज से उत्तरी ढलान पर चढ़ाई का प्रयास किया। दो स्विस गाइड,

कास्पर मूज़र और विक्टर इम्बोडेन ने 1928 में इस बर्फीले मैदान पर चढ़ाई का प्रयास किया, लेकिन दाहिनी ओर से। मूज़र 1930 में बाईं ओर के बर्फीले मैदान पर चढ़ाई करने के लिए वापस लौटे, लेकिन भारी बर्फबारी के कारण उन्हें जल्द ही वापस लौटना पड़ा।

जुलाई 1931 में म्यूनिख के दो जर्मन भाई साइकिल से ज़र्मैट पहुंचे। वे फ्रांज़ और टोनी श्मिड थे। उन्होंने 31 जुलाई को भोर से पहले बाईं ओर के बर्फीले मैदान से अपना प्रयास शुरू किया।

जाहिर है, ठंड बहुत थी, जैसा कि टोनी श्मिड ने लिखा, 'मीटर दर मीटर हम आगे बढ़ते गए, हमारी उंगलियां छिल गईं, खून बह रहा था। हमें उस भयानक बर्फ की दीवार से दूर जाना था। पाले से सख्त हो चुकी रस्सियों को संभालना मुश्किल हो गया था। बढ़ती कठिनाई के साथ मैं आगे बढ़ता रहा...' उन्होंने दो पिटन से लटककर एक लंबी ठंडी रात बिताई। दूसरी सुबह टोनी ने आगे बढ़कर चढ़ाई शुरू की, लेकिन बर्फीली चट्टान ने उनकी प्रगति रोक दी। फ्रांज़ ने कोशिश की और पीछे हटने का सुझाव भी दिया, लेकिन कुछ बातचीत के बाद उन्होंने आगे बढ़ने का फैसला किया और धीरे-धीरे वे आगे बढ़ते गए। मौसम और खराब होता गया और दोनों एक-दूसरे को और तेज़ी से चढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे। शिखर से ठीक नीचे तूफान आ गया और जब वे आखिरकार शिखर पर पहुंचे, तब तक वह अपने पूरे ज़ोर पर था। 'खुले आसमान के नीचे की ठंड से क्या फर्क पड़ता है?'

हम शिखर की चोटी पर दौड़ते हुए आयरन क्रॉस (इतालवी शिखर) के पास अपनी बर्फ की कुल्हाड़ियों को छिपाने के लिए आगे बढ़े और कुछ मीटर नीचे, तूफान के चरम पर पहुँचने के ठीक बाद, एक चट्टानी आवरण के नीचे शरण ली। वहाँ, अपने बिवाक शीट की सुरक्षा में, हमारे हाथ मौन रूप से एक दूसरे से मिल गए। तूफान थम गया और उन्हें हॉर्नली रिज से नीचे उतरने की अनुमति मिल गई। शोल्डर पर एक दूसरे तूफान ने उन्हें घेर लिया और वे संघर्ष करते हुए सोल्वे आपातकालीन आश्रय झोपड़ी तक पहुँचे। अगले पूरे दिन वे सोते रहे जब तक कि तूफान शांत नहीं हो गया और 3 अगस्त को वे ज़र्मैट में विजयी स्वागत के साथ उतरे। उत्तरी आल्प्स की महान चोटियों में से पहली चोटी पर चढ़ाई की गई, और वह भी बिल्कुल अनजान लोगों द्वारा! हमेशा महत्वाकांक्षी और प्रतिभाशाली पर्वतारोही होते हैं, जिनकी उपलब्धियाँ आगे का रास्ता दिखाती हैं।

22 जुलाई, 1959 को, डाइटर मार्चार्ड ने बिना किसी शोर-शराबे या दिखावे के, आइगर पर्वत की उत्तरी दीवार पर अकेले चढ़ाई करने वाले पहले पर्वतारोही बनने की कोशिश में अपनी जान गंवा दी। दुर्भाग्य से, आइगर की उत्तरी दीवार पर अकेले चढ़ाई करने वाले पहले पर्वतारोही बनने के प्रयास में उनकी जल्द ही मृत्यु हो गई।

उपकरण और वस्त्रों में सुधार हुआ और सर्दियों में चढ़ाई करना अधिक आरामदायक हो गया। मीडिया की दिलचस्पी बढ़ी और अचानक सर्दियों में उत्तरी दीवार पर चढ़ाई करना आकर्षण का केंद्र बन गया। 1961 में तीन अलग-अलग प्रयास हुए। 1962 में और भी टीमें सक्रिय हुईं। पहली टीम में टोनी किंशोफर, टोनी हीबेलर (सर्दियों में आइगर की उत्तरी दीवार पर चढ़ाई करने वाली पहली टीम का हिस्सा), एरिक क्रेम्पके और पियरे माज़ौद (फ्रांसीसी सांसद और अंग्रेजी प्रतिस्पर्धा के कट्टर विरोधी: 'वे मेरा नहीं बल्कि पूरे फ्रांस का अपमान कर रहे हैं!') शामिल थे। वे अत्यधिक संगठित थे और

उन्होंने अच्छी चढ़ाई की, लेकिन अंततः खराब मौसम के कारण उन्हें पहाड़ से उतरकर होर्नली रिज पर जाना पड़ा। जनवरी के अंत में, कम प्रसिद्ध तिकड़ी एडॉल्फ और फ्रांज ह्यूबर तथा ह्यूबर्ट सेडलमेयर ने एक साहसिक प्रयास किया, लेकिन एक बार फिर सर्दियों के मौसम ने अपना कहर

बरपाया और उन्हें एक बार फिर होर्नली रिज पर लौटना पड़ा।
1961 में प्रयास कर चुके हिल्टी वॉन ऑलमेन और पॉल एटर वापस लौटे और पर्वत पर रस्सियाँ बाँधीं, फिर 3 फरवरी को शिखर पर चढ़ने के लिए निकल पड़े। उनके ठीक पीछे ऑस्ट्रियाई पर्वतारोही लियो श्लोमर और एरिक क्रेम्पके थे, जिनके ठीक पीछे जर्मन टीम के वर्नर बिटनर, पीटर सीगर्ट और रेनर कौश्के थे। गौरतलब है कि हिल्टी वॉन ऑलमेन और पॉल एटर सबसे पहले शिखर पर पहुँचे और अखबारों और टीवी ने दर्शकों को उत्सुकता से इंतज़ार करवाया।
अन्य पर्वतारोहियों के लिए डायरेक्टिसिमा मार्ग का जो व्यापक आकर्षण था, वह यहाँ पूरी तरह विफल रहा क्योंकि यहाँ केवल एक ही प्राकृतिक या स्पष्ट मार्ग है - श्मिड मार्ग। तो इस उत्तरी चेहरे पर कौन सी उपलब्धियाँ रह गईं? पहली महिला आरोहण यवेटे वाउचर ने की, जिन्होंने 1963 में अपने पति मिशेल वाउचर और मिशेल डारबेले (आइगर की उत्तरी दीवार पर पहली एकल आरोहण और पिज़ बैडिली के उत्तरी चेहरे पर पहली शीतकालीन आरोहण) के साथ श्मिड मार्ग पर चढ़ाई की। फरवरी 1965 में वाल्टर बोनाटी ने गीगी पानेई और अल्बर्टो टैसोटी के साथ उत्तरी चेहरे के दाहिनी ओर से शुरू करते हुए मूज़र/इम्बोडेन मार्ग को पूरा करने का प्रयास किया। उन्होंने चार दिन इस चेहरे पर बिताए, लेकिन बोनाटी की खराब मौसम की वजह से अंततः उन्हें नीचे उतरना पड़ा।
बोनाटी ज़र्मैट में ही रुके रहे और 19 फरवरी को वे उत्तरी ढलान पर वापस गए, उसी रास्ते पर जिस पर उन्होंने पहले कोशिश की थी। इस बार वे सफल रहे और 23 फरवरी को शिखर पर पहुँच गए। साहसिक पत्रकारिता में संन्यास लेने से पहले यह उनकी आखिरी बड़ी चढ़ाई थी। यह सर्दियों में की गई पहली एकल चढ़ाई थी और इस ढलान पर दूसरा मार्ग था। चेक और जापानी पर्वतारोहियों ने मूल मार्ग में नए शुरुआती बिंदु जोड़े हैं, लेकिन वे वास्तव में अर्थहीन हैं, क्योंकि ढीली चट्टानों के इस लगातार बदलते ढलान पर कोई भी दो टीमें एक ही मार्ग का अनुसरण नहीं कर सकतीं।
क्षणभंगुर बर्फ। हालाँकि, नॉर्थ फेस पर अभी तक किसी महिला ने अकेले चढ़ाई नहीं की थी। कई अन्य लोगों की तरह, मुझे भी दस साल पहले मैटर-हॉर्न को देखते ही पहली नज़र में प्यार हो गया था। इसकी आदर्श पर्वतीय आकृति ने मेरे साहसिक स्वभाव को आकर्षित किया और, चूंकि इस पर चढ़ने के मेरे प्रयास कभी भी आसान नहीं रहे, इसलिए इसका विशेष आकर्षण आज भी बरकरार है। मेरी पहली (और रस्सी से बंधी) चढ़ाई

इयान पार्सन्स के साथ इसके विशाल उत्तरी भाग पर चढ़ाई के प्रयास में हमें अंततः तीन बार जाना पड़ा और हम शिखर तक पहुँच पाए।
मिश्रित चेहरों की स्थिति में काफी बदलाव आया है, खासकर पिछले कुछ वर्षों में, और मुझे इस बार चेहरे की स्थिति का कोई अंदाजा नहीं था। मौसम अनुकूल हो सकता है और परिस्थितियाँ शानदार हो सकती हैं - या फिर हालात खराब हो सकते हैं और चेहरा सूखा पड़ सकता है। मुझे बस इंतजार करके देखना होगा।
हमने ज़र्मैट जाने और वहाँ तब तक रुकने का फैसला किया जब तक कि चढ़ाई के लिए अनुकूल

स्थिति न हो जाए। हमारे पास इतने संसाधन नहीं थे कि हम बार-बार घाटी में आते-जाते रह सकें, खासकर जब एक पाउंड स्टर्लिंग के मुकाबले सिर्फ दो स्विस फ्रैंक ही मिल रहे थे। इसलिए जितना हो सके उतना सामान पैक करके, हमने पर्किन्स को विस्प स्टेशन पर पार्क किया और उत्साहित बच्चों के साथ ट्रेन से ज़र्मैट में बने छोटे से कैंपसाइट की ओर चल दिए।

इस बार मुझे ज्यादा देर इंतजार नहीं करना पड़ा। हम दोपहर में ही वहाँ पहुँच गए और मैं दोपहर 3 बजे ज़र्मैट की मुख्य सड़क पर निकल गया।

जेबी: ज़र्मैट का कैंपसाइट साधारण है, लेकिन शहर से बस कुछ ही मिनट की दूरी पर है। टॉम, केट और मैं शहर गए ताकि एलिसन चुपके से निकल सके। केट को अपनी माँ का जाना बिल्कुल पसंद नहीं था, लेकिन उनके चले जाने से उसे कोई परेशानी नहीं थी।

शहर हर आकार, कद और राष्ट्रीयता के पर्यटकों से भरा हुआ था। बच्चों का खेल का मैदान टेनिस कोर्ट और अस्थायी डाकघर के बगल में बना हुआ था। खेल के मैदान में ज़्यादातर मेहमान कामगारों के बच्चे खेल रहे थे, जो पहले पुर्तगाली हुआ करते थे, लेकिन अब उनकी जगह युगोस्लावियाई लोगों ने ले ली थी। बीच वाली बेंच पर तीन गंभीर माताएँ बैठी थीं, बुनाई कर रही थीं और आने वाले सभी लोगों को घूर रही थीं। वे मुझे मैकबेथ की तीन चुड़ैलों की याद दिला रही थीं, बस उतनी आकर्षक नहीं थीं। उनके बच्चे बेजान थे और स्विस बच्चों के साथ खास तौर पर सख्ती बरत रहे थे। मुझे समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों था! टॉम और केट की आपस में अच्छी बनती थी, जब तक कि छोटी लड़कियों की आँखों में रेत फेंककर उन्हें रुलाने का खेल शुरू नहीं हुआ। टॉम परेशान होकर पूछता है कि क्या करे। मैं उसे कहता हूँ कि वह भी ऐसा ही करे, लेकिन रेत से नहीं। मैंने अब तक का सबसे ज़ोरदार मुक्का मारा और सबसे बड़ा बदमाश अपनी खून बहती नाक के साथ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। उसकी माँ को यह सब अच्छा नहीं लगा और वह और चुड़ैलें टॉम पर टूट पड़ीं। मैंने बीच-बचाव किया और उन्हें टॉम पर हमला करने से रोकने के लिए मुझे अपने यॉर्कशायर के सारे आकर्षण का इस्तेमाल करना पड़ा। कौन कहता है कि अकेले पर्वतारोहण करना ही सारा रोमांच है। इससे अतिथि श्रमिकों के बीच मेरी लोकप्रियता में कोई इजाफा नहीं हुआ, लेकिन बाकी अभिभावकों को इससे बहुत आनंद मिला।

ज़र्मैट में खिलौनों की एक बहुत ही शानदार दुकान है। हमने घंटों उन खिलौनों को निहारने में बिताए जिन्हें हम खरीद नहीं सकते थे। दुकान के सहायकों ने दो अच्छे व्यवहार वाले अंग्रेज़ बच्चों के प्रति उदारता दिखाई और उन्हें ढेर सारे पर्चे दिए, जिससे वे बहुत खुश हुए।

एक कठिन दिन की गर्मी

मैं ढाई घंटे बाद हॉर्नली हट पर पहुँचा। इस बार मेरे साथ एक चिड़चिड़ा जर्मन था जो हॉर्नली रिज के लिए साथी की तलाश में था, और जब मेरे जैसा एक अप्रत्याशित साथी खिड़की से अंदर आया तो वह बिल्कुल भी खुश नहीं हुआ। पूरी शाम वह हेलीकॉप्टरों, अपनी मौत की इच्छा (उसकी) और अगले दिन आने वाले तूफान के बारे में बड़बड़ाता रहा! लेकिन जब मैंने नीचे तीन पर्वतारोहियों को धीरे-धीरे ऊपर आते देखा तो मेरा मनोबल बढ़ गया। इतने सारे पर्वतारोहियों का मतलब मौसम का पूर्वानुमान बहुत खराब नहीं होगा, या हो सकता है? जब वे पहुँचे तो उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें मौसम के बारे में कुछ भी पता नहीं था। वे दो ब्रिटिश भाई और उनमें से एक

की प्रेमिका थे। उनकी यात्रा महीनों पहले तय की गई थी, वे फिर भी आ गए थे।
मैं सुबह 2 बजे उठा और मौसम का जायजा लेने और तैयारी करने के लिए नीचे गया। कोई जल्दी नहीं थी, मैं भोर से पहले चढ़ाई शुरू नहीं करना चाहता था, लेकिन बिस्तर पर वापस जाने में बहुत देर हो चुकी थी। सुबह 3:30 बजे मैं निकला। ठंड थी और बहुत तेज़ हवा चल रही थी। इससे मुझे चिंता हुई। मैंने सोचा कि तेज़ हवा मौसम में बदलाव लाएगी। मैंने बादलों को तेज़ी से गुज़रते देखा और उत्तरी ढलान और बर्फ़ के मैदान की ओर चल पड़ा।
तेज़ हवा में बर्फ़ और छोटे-छोटे पत्थर उड़ रहे थे। क्या मुझे आगे बढ़ना चाहिए? मुझे एक और असफलता का डर सता रहा था। दूसरी ओर, बर्फ़ और पत्थरों के तेज़ झोंकों के साथ-साथ शिखर और उतरते समय बादल और तूफ़ान का सामना करना भी मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। मैंने तीन बार अकेले ही बर्फ़ के मैदान के निचले कुछ हिस्सों पर चढ़ाई और उतराई की। मैं रुका और तेज़ी से बदलते बादलों के आकार को देखा। मैं हिचकिचाया, और फिर नीचे उतरने लगा; मैं सचमुच आगे जाना चाहता था, लेकिन मेरे अंदर कुछ मुझे नीचे जाने के लिए कह रहा था।
झोपड़ी में वापस आकर मैंने अपने हथियार उतारे, पानी पिया और वापस बिस्तर पर चला गया। अभी सुबह का समय था। आज का दिन लंबा होने वाला था। मैंने अगली सुबह तक रुकने का फैसला किया। घबराया हुआ जर्मन चौंक गया। उसने पूछा, "क्या हुआ है?"
हमने नाश्ता किया, खूब चाय-कॉफी पी और बातें कीं। हवा तेज़ होती जा रही थी। चिड़चिड़ा जर्मन नाराज़ था और उसने कहा कि वह नीचे जा रहा है। अच्छा हुआ! ब्रिटिश तिकड़ी ने वहीं रुकने का फैसला किया, क्योंकि वे हॉर्नली पर्वत पर चढ़ाई करने के लिए उत्सुक थे। मैटरहॉर्न से उठते बादल तूफानी, घूमते हुए और अद्भुत थे। बर्फ के क्रिस्टल बन रहे थे, इतनी ठंड थी।
जून का महीना था, और मैं धूप में भी रेशम, ऊनी अंडरवियर, ऊनी सैलोपेट्स और मोटी ऊनी जैकेट पहने हुए थी! ब्रिटिश टीम और मैंने मिलकर एक बढ़िया शाम का खाना बनाया, और हमने उनकी जश्न वाली शैम्पेन की बोतल पी ली ताकि उसे वापस ले जाने की ज़रूरत न पड़े! बादल एकदम नीचे आ गए थे। लेकिन जलाने के लिए लकड़ी की कोई कमी नहीं थी।
55
एलिसन हार्ग्रीव्स
खूब सारी चाय और एक गर्म झोपड़ी। हमने बादलों और बर्फ के बवंडर को देखा।
मैं सुबह 3:30 बजे उठा। हे भगवान! क्या पता मौसम अच्छा ही हो और मैं उसका इस्तेमाल करने के लिए तैयार ही न होऊं? मैंने झोपड़ी से बाहर देखा तो तारे, साफ आसमान और कोई बादल नहीं थे। बूट पहनकर मैं बाहर निकला। झोपड़ी के चारों ओर घूमते ही हवा का एक झोंका आया और मैंने देखा कि मैटरहॉर्न की चोटी गायब थी, बादलों में खो गई थी। मैं वापस अंदर आ गया। आधे घंटे बाद बादल तेजी से नीचे आ गए और हवा तेज हो गई। मैटरहॉर्न नहीं चाहता था कि मैं आज चढ़ाई करूं! मैं थोड़ी देर के लिए बिस्तर पर लौट आया और खिड़की से देखता रहा कि आसपास की सभी 4000 मीटर ऊंची चोटियों पर मंडराते छोटे-छोटे हवा के बादल धीरे-धीरे एक धुंधली और धूसर सुबह में बदल गए। मैंने अपना सामान पैक किया और दोपहर के भोजन के बाद तक रुकने वाले तीन ब्रिटिश साथियों को अलविदा कहा। उन्होंने मुझसे ब्लैक डायमंड आइस हैमर उधार लेने की ज़िद की, क्योंकि मेरा वाला चोरी हो गया था, जो उनकी बहुत बड़ी

मेहरबानी और भरोसे की बात थी। (सितंबर में एक पर्वतारोहण व्यापार प्रदर्शनी में मैं इसे व्यक्तिगत रूप से उन्हें लौटाने में सक्षम रहा।) ज़र्मैट वापस आकर मुझे निराशा हुई, लेकिन मैं मौसम के पैटर्न का पता लगाकर फिर से शुरुआत कर पाऊंगा।

ज़र्मैट ने पर्वतारोहियों और उनकी दुनिया में व्यावसायिक रुचि के अलावा बाकी सब कुछ छोड़ दिया है। मैं पहाड़ की स्थिति और मौसम के पूर्वानुमान के बारे में पूछने के लिए मुख्य सड़क पर स्थित गाइड कार्यालय में जाता था, लेकिन हर बार मुझे एक भावहीन चेहरा मिलता था जो विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता से मुझे सड़क के दूसरी ओर स्थित दो प्रतिस्पर्धी कतारों में बने कम्प्यूटरीकृत मौसम केंद्रों की ओर इशारा कर देता था।

लेकिन अभी भी उम्मीद बाकी है, क्योंकि स्विस पर्वतारोहण की महापुरुष, फ्राउ पाउला बाइनर अभी भी जीवित हैं और पर्वतारोहियों के असली घर, होटल बाहनहोफ में अपना जलवा बिखेर रही हैं। चाहे आप पहली बार आ रहे अल्पाइन पर्वतारोही हों, कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति हों या विश्व स्तरीय पर्वतारोही, सबका स्वागत हमेशा एक जैसा ही होता है। वर्षों से उनकी मदद और सलाह की बहुत मांग रही है और लोग इसकी सराहना करते हैं, जो उनके दिवंगत भाई बर्नार्ड की लंबी परंपरा को आगे बढ़ा रही है।

मैं फ्राउ बाइनर से मिलने के लिए बानहोफ गई और हमेशा की तरह मददगार, उन्होंने मेरे लिए फोन करके पता लगाया कि क्या हो रहा है। दोपहर तक मैं कैंपसाइट पर वापस आ गई, और जेबी का एक नोट मिला जिसमें लिखा था कि वे सब पार्क में हैं। जैसे ही मैं कोने से मुड़ी, उसने मुझे देखकर मुस्कुराया। वह तुरंत समझ गया कि मैंने ऐसा नहीं किया था, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। टॉम दौड़कर आया और मुझसे लिपट गया। केट झूलों पर बैठी रही, बेफिक्र। जेबी बात करना चाहता था, टॉम को ध्यान चाहिए था और मुझे सांत्वना और आश्वासन की ज़रूरत थी। बाद में हम ज़र्मैट में घूमे और बच्चों ने मुझे खिलौनों की दुकानों की सभी खूबसूरत खिड़कियां दिखाईं।

56

एक कठिन दिन की गर्मी

क्या मुझे उसी दिन वापस ऊपर जाना चाहिए? जेबी का मानना था कि मुझे आराम करना चाहिए और कल फिर जाना चाहिए। हालाँकि मुझे डर था कि कहीं मौसम अच्छा न हो, फिर भी मुझे लगा कि टॉम और केट के साथ रात बिताना मेरा फर्ज है। आखिरी टेलीफेरिक छूट जाने के बाद, मुझे बहुत खुशी हुई।

अगली सुबह टॉम, केट और मैंने पार्क में खूब मज़े किए। उन दोनों ने घंटों तक मुझे झूले झुलाते हुए देखा। हम दोपहर के भोजन के लिए कैंपसाइट लौट आए, जहाँ जेबी ने हम सबके लिए ढेर सारा पास्ता बनाया था (रात के खाने में ब्रेड और जैम मिलेगा) और मुझे कल के लिए ऊर्जा भी मिल गई! फिर जेबी बच्चों के साथ पार्क चला गया और आधे घंटे बाद मैं तैयार होकर निकल पड़ी। दोपहर 3:45 बजे तक मैं फिर से हॉर्नली हट पहुँच गई थी।

उस सुबह से ही तीन स्कॉटिश डॉक्टर हॉर्नली रिज पर मौजूद थे और तीन स्लोवाक झोपड़ी के बाहर छत पर थे, जिनके साथ मैंने चाय के कई बड़े कटोरे साझा किए।

मंगलवार 29 जून

सुबह करीब 3:15 बजे नींद खुली। मैंने पॉलिसॉक्स पॉलीप्रो इनर के ऊपर गेटर नियोप्रीन मोज़े पहने थे, और बूट भी पहने हुए थे। मैंने कंबल मोड़े और चूल्हा जलाने के लिए नीचे गया। फिर मैंने अपने प्लास्टिक के जैकेट पहने और मौसम देखने और शौचालय जाने के लिए खिड़की से बाहर निकला।

ठंड नहीं थी, आसमान एकदम साफ था और हवा भी बहुत कम चल रही थी। वाह! वापस आकर आइसोस्टार और उबले अंडे खाए। फिर हॉर्नली रिज की ओर जा रहे स्लोवाक लोगों को उनके नाश्ते के लिए छोड़कर, मैंने अपना सामान उठाया और रात में निकल पड़ा। सुबह के 4 बज चुके थे। उजाला होने लगा था और हेडलाइट की हर समय ज़रूरत नहीं थी। मुझे ठीक से पता था कि कहाँ जाना है और मैं रिज पर चढ़ गया, फिर उसे पार करके चढ़ाई के शुरुआती बिंदु तक नीचे उतरा।

बर्फ की ढलान तक पहुंचने के लिए थोड़ी नरम बर्फ थी, जिसे मैंने अपने वजन को संतुलित करने के लिए सावधानीपूर्वक हाथों और घुटनों के बल पार किया।

सुबह 5 बजे के कुछ ही देर बाद मैं चढ़ाई कर रहा था। पिछली बार जब मैंने कोशिश की थी तो मैं बर्फ पर आसानी से चढ़-उतर सकता था, लेकिन अब बर्फ थोड़ी दब गई थी जिससे ऊपरी परत थोड़ी पतली हो गई थी, इसलिए नीचे की पुरानी बर्फ पर पैर जमाना थोड़ा मुश्किल हो रहा था। सावधानी से मैं ऊपर चढ़ने लगा। जैसे-जैसे मैं ऊपर चढ़ता गया, मुझे डोम, टैशहॉर्न और अल्फुबेल की ऊँची चोटियों के ऊपर से सूर्योदय दिखाई देने लगा।

मैंने अपनी स्थिति पर मुस्कुराया और इस विचार से प्रसन्न हुआ कि आखिरकार मैं

मैं अपने रास्ते पर था। जैसे-जैसे मैं विशाल बर्फीले मैदान की चोटी की ओर बढ़ता गया, मैंने वहाँ से अपना मार्ग तय करने का विचार किया। मुझे एक दाहिनी ओर ढलान वाली सड़क पर जाना था जो पहाड़ के मध्य भाग से होते हुए सीधे ऊपर की ओर जाती। लेकिन वहाँ पहुँचना ही असली चुनौती थी।

मुझे 1984 में इयान पार्सन्स के साथ की गई अपनी चढ़ाई याद आ गई, जब एक गहरी सांस लेने के बाद मैंने बर्फ से उतरकर एक खड़ी ढलान पर चढ़ने की कोशिश की, और तभी मुझे बहुत राहत मिली जब मैंने देखा कि वहां एक खूंटी लगी हुई थी जिससे मैं इयान को सहारा देकर ऊपर खींच सकता था।

अब हालात बिलकुल अलग थे। शुष्क गर्मियों के कारण बर्फ की चादर सिकुड़ गई थी, जिससे रैंप तक पहुँचने से पहले पतली, मिश्रित बर्फ वाली एक लंबी पट्टी पार करनी पड़ती थी। मैंने थोड़ा नीचे जाकर फिर ऊपर चढ़ने के विकल्प पर विचार किया। हालाँकि रास्ता काफी ढलान वाला था, लेकिन चट्टान काफी ठोस और मजबूत लग रही थी। लेकिन, जिस चट्टान पर मैं था, उस पर जमी पतली बर्फीली पट्टियों पर नीचे उतरना मुझे ठीक नहीं लगा। इसलिए मैंने सीधे ऊपर चढ़ने का विकल्प चुना।

चट्टान पर बिछी एक बर्फीली पट्टी से दूसरी तक पहुँचने के लिए कुछ मुश्किल चालें चलनी पड़ीं, फिर मैं ढलान पर जम गया। आराम करने का समय नहीं था। वहाँ से चढ़ाई कठिन और जोखिम

भरी लग रही थी। चट्टानी स्लैब के ऊपर बर्फ की एक बहुत पतली परत बिछी हुई थी और मैं सावधानी से, हर औजार को धीरे-धीरे रखते हुए ऊपर चढ़ रहा था। ज़ोर से मारने पर पिक के आसपास की बर्फ टूट जाती और वे बेकार हो जाते। पिक को सही जगह पर गाड़ना तो मुश्किल था ही, लेकिन पैर जमाने के लिए मज़बूत जगह ढूँढना उससे भी ज़्यादा कठिन था। मेरे क्रैम्पोन के आगे के सिरे बर्फ में धंस रहे थे, लेकिन नीचे की चट्टान पर रगड़ खा रहे थे। मुझे खुशी थी कि मैं एक नाज़ुक पर्वतारोही था और मेरा वज़न दो किलो ज़्यादा नहीं था!

इस असुरक्षित चढ़ाई ने बेहद तनावपूर्ण और थका देने वाला काम बना दिया। मैं रैंप की प्राकृतिक रेखा का अनुसरण करते हुए दाएं-बाएं मुड़ता रहा, इस सोच के सहारे आगे बढ़ता रहा कि जैसे ही मैं रैंप के शीर्ष पर पहुंचूंगा, मैं दीवार का दो-तिहाई हिस्सा तय कर चुका होऊंगा। वहां से दीवार का कोण कम हो जाएगा, इसलिए सैद्धांतिक रूप से मुझे चीजें आसान लगनी चाहिए और मैं अपनी धीमी गति बढ़ा सकूंगा।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जैसे ही मैं रैंप लाइन और बर्फ की नालियों से बाहर निकला, मैं बेहद सूखी पथरीली ज़मीन पर आ पहुँचा, जिस पर पाउडर बर्फ की एक मोटी परत जमी हुई थी। सभी चट्टानी पकड़ को इस्तेमाल करने से पहले साफ़ करना पड़ा और सब कुछ बहुत असुरक्षित लग रहा था। रिकॉर्ड समय में, बेहतरीन बर्फ की स्थिति में, आसानी से पहाड़ पर चढ़ने की मेरी उम्मीदें चकनाचूर हो गईं। यह एक समय लेने वाला और श्रमसाध्य काम बन गया।

बादल घिरते जा रहे थे और हवा तेज़ होती जा रही थी। जैसे ही मैंने देखा...

एक कठिन दिन की गर्मी

जैसे-जैसे मैं ऊपर चढ़ता गया, ज़मट रिज दाईं ओर से धीरे-धीरे सामने आने लगी। मुझे एहसास होता गया कि मैं शिखर के और करीब पहुँच रहा हूँ। उत्तरी ढलान के अंत में, ज़मट और हॉर्नली रिज क्रमशः दाईं और बाईं ओर से करीब आने लगीं। मुझे बाईं ओर हॉर्नली रिज पास ही दिखाई देने लगी और राहत की सांसें थमने लगीं।

सोल्वे आपातकालीन आश्रय स्थल अब काफी पीछे छूट चुका था। दाईं ओर मुड़कर अंतिम घाटी प्रणाली को पकड़ने का याद रखते हुए, मैं जल्द ही वहाँ पहुँच गया, शिखर पर बना क्रॉस मेरे सामने था। मेरी आँखों में आँसू आ गए। मैंने आखिरकार मैटरहॉर्न के उत्तरी भाग को अकेले ही फतह कर लिया था।

न जाने क्यों, मुझे इस पर्वत से एक विशेष जुड़ाव महसूस हुआ। मैटरहॉर्न ने आखिरकार मुझे इसके उत्तरी भाग पर चढ़ने की अनुमति दे दी थी, लेकिन इससे मुझे कोई दृश्य देखने को नहीं मिला। मेरी दृष्टि जहाँ तक जाती थी, सीमावर्ती पर्वत श्रृंखला की लंबाई ही दिखाई दे रही थी। सुबह के लगभग 10:30 बज रहे थे, आसमान में बादल छाए हुए थे और गर्मी तेज़ी से बढ़ रही थी, अपनी इस ऊँचाई का आनंद लेने का समय नहीं था। इटली में दूर-दूर तक मुझे कभी-कभार बिजली की चमक दिखाई दे रही थी और गरजते बादलों की तेज़ आवाज़ मेरी ओर बढ़ती सुनाई दे रही थी। मुझे जितनी जल्दी हो सके नीचे उतरना था, और अपने पिछले दो अनुभवों से मुझे याद था कि यह उतरना कितना लंबा और समय लेने वाला हो सकता है।

मैंने अपनी गति को स्थिर और निरंतर बनाए रखा। चट्टान का पहला खड़ी ढलान जल्द ही मेरे हाथ

से निकल गया। मैं पहाड़ी की समतल सतह पर तेज़ी से आगे बढ़ा और पहली चढ़ाई की भयावहता को याद करते हुए एक पल रुककर दाईं ओर, ढलान से नीचे बर्फ की गर्म और गीली ढलानों पर उतर गया। निर्देशित चढ़ाई को आसान बनाने के लिए चट्टान में गहराई तक गाड़े गए बड़े धातु के खूंटों का सहारा लेते हुए, मैं बीच-बीच में रस्सी से उतरता जा रहा था। जैसे ही मेरे चारों ओर बिजली चमकने लगी और हल्की बारिश तेज बौछारों में बदलने लगी, मुझे इस बात पर मुस्कान आ गई कि एक बार फिर मुझे किसी भी चीज़ को हल्के में नहीं लेना चाहिए।
पहाड़ी की चोटी से थोड़ा नीचे और दाईं ओर जाते हुए, मैंने किनारे पर सीधे जाने का फैसला किया। लेकिन जैसे ही मैं चोटी पर पहुँचा, मुझे एक अजीब सी झुनझुनी महसूस हुई और मुझे एहसास हुआ कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं - यह अच्छी स्थिति नहीं थी। इसलिए मैं तुरंत वापस उसी सुरक्षित रास्ते पर लौट आया जिस पर मैं पहले चल रहा था। अब मुझे नीचे दूर हॉर्नली हट दिखाई दे रही थी।
मैं मानसिक और शारीरिक रूप से थका हुआ था और यह एहसास कि मैं उस रात घाटी तक नहीं, बल्कि केवल झोपड़ी तक ही पहुँच पाऊँगा, ने स्थिति की गंभीरता को कम कर दिया, और यद्यपि मेरे चारों ओर तूफान चल रहा था, मैं शांत महसूस कर रहा था।
सत्रह सौ मीटर आगे बढ़ने के बाद, शाम के 6 बज रहे थे और मैं पहाड़ी की समतल चोटी पर था और झोपड़ी की ओर बढ़ रहा था। यह मानकर कि मैं

जब मैं झोपड़ी में अकेला था, तो चिमनी से लकड़ी के धुएं की हल्की सी खुशबू आना मेरे लिए अत्यंत सुखद अनुभव था।
उत्साह से भर कर मैं झोपड़ी के चारों ओर दौड़ा और खिड़की से अंदर चढ़ गया। मेरे तीन मित्रवत स्लोवाक, पीटर, लैटोर और मारियन, वहाँ मौजूद थे; उनमें से एक दिन में हॉर्नली रिज पर चढ़ाई करने के दौरान बीमार पड़ गया था, जिसके बाद वे वापस आ गए थे। साथ ही, एक युवा स्विस लड़का भी था, जो पहाड़ पर मौसम के बारे में जानने के लिए उत्सुक था। उन्होंने मुझे जश्न के तौर पर एक ड्रिंक पिलाई और एक शानदार, तनावमुक्त शाम के दौरान कई तरह की बियर भी पिलाईं।
अगली सुबह मैं पहली टेलीफेरिक से विंकरमैटन के लिए रवाना हुई और शैम्पू खरीदने के लिए ज़र्मैट को-ऑप के खुलने का बेसब्री से इंतज़ार करने लगी। बेकरी से मैंने तीन बादाम क्रोइसैन्ट खरीदे, क्योंकि मेरे पास चार खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। फिर मैं होटल बाहनहोफ़ गई और वहाँ अपने कुछ दस्ताने छोड़ दिए जो मुझे उतरते समय मिले थे, मुझे लगा कि वे स्कॉटिश डॉक्टरों के होंगे। फ्राउ बाइनर यह देखकर हैरान और खुश दोनों थीं कि ऐसे मौसम में भी मैं अकेले नॉर्थ फेस पर चढ़ने वाली पहली महिला बन गई थी और वो भी साढ़े पाँच घंटे से भी कम समय में। उन्होंने कहा कि उन्हें ब्रिटिश लोगों के लिए बहुत खुशी है और पूछा कि क्या मैं बाद में परिवार के साथ बर्नार्ड बाइनर की किताब में लिखने के लिए वापस आऊँगी।
जेबी: आज सुबह देर तक सोई रही और सारी कहानियाँ पढ़ डालीं। तभी आँखों में आँसू लिए एक मुस्कुराता चेहरा तंबू के प्रवेश द्वार से अंदर आया। आखिरकार शौच हो गया। अब चाय-

कॉफी के लिए एमएसआर चलते हैं और एलिसन, टॉम और केट को अपने जश्न के क्रोइसैन्ट्स का लुत्फ़ उठाते हुए देखने का आनंद लेते हैं।
डच मानवविज्ञानी यॉप और रॉय, एलिसन के लिए कुछ वाइन खरीदते हैं और मैं पास्ता का एक बड़ा भोजन तैयार करता हूँ जो दोपहर भर के भोज में बदल जाता है। हम भले ही गरीब हों और विनिमय दर खराब हो, लेकिन हम जश्न मनाना और आनंद लेना जानते हैं।
दोपहर के भोजन के बाद हम फ्राउ बाइनर के पास लौट आए। बर्नार्ड बाइनर की किताब पढ़ने और अपने बचपन के सभी नायकों के नाम ढूंढने के बाद मेरा हाथ पसीने से तरबतर हो गया था। अपनी किताब लिखते समय मुझे रुमाल से स्याही के धब्बे रोकने पड़े। बाद में पाउला के साथ चाय पीते हुए, पिछली प्रविष्टियों पर चर्चा करते हुए, बर्नार्ड के सुनहरे दिनों को याद करते हुए उनकी खुशी देखना बहुत अच्छा लगा।
अब मुझे कुछ दिनों के लिए आराम करने और तरोताजा होने की जरूरत थी, साथ ही एक

60

एक कठिन दिन की गर्मी

टॉम और केट के लिए एक खेल का मैदान और एक छोटा स्विमिंग पूल, और मेरे लिए हल्की कसरत करने के लिए एक स्विमिंग पूल। विस्प कैंपसाइट इसके लिए आदर्श था, जबकि मैं सोच रहा था कि आगे क्या करना है।

तार्किक दृष्टि से देखा जाए तो यह आइगर ही होना चाहिए था।

61

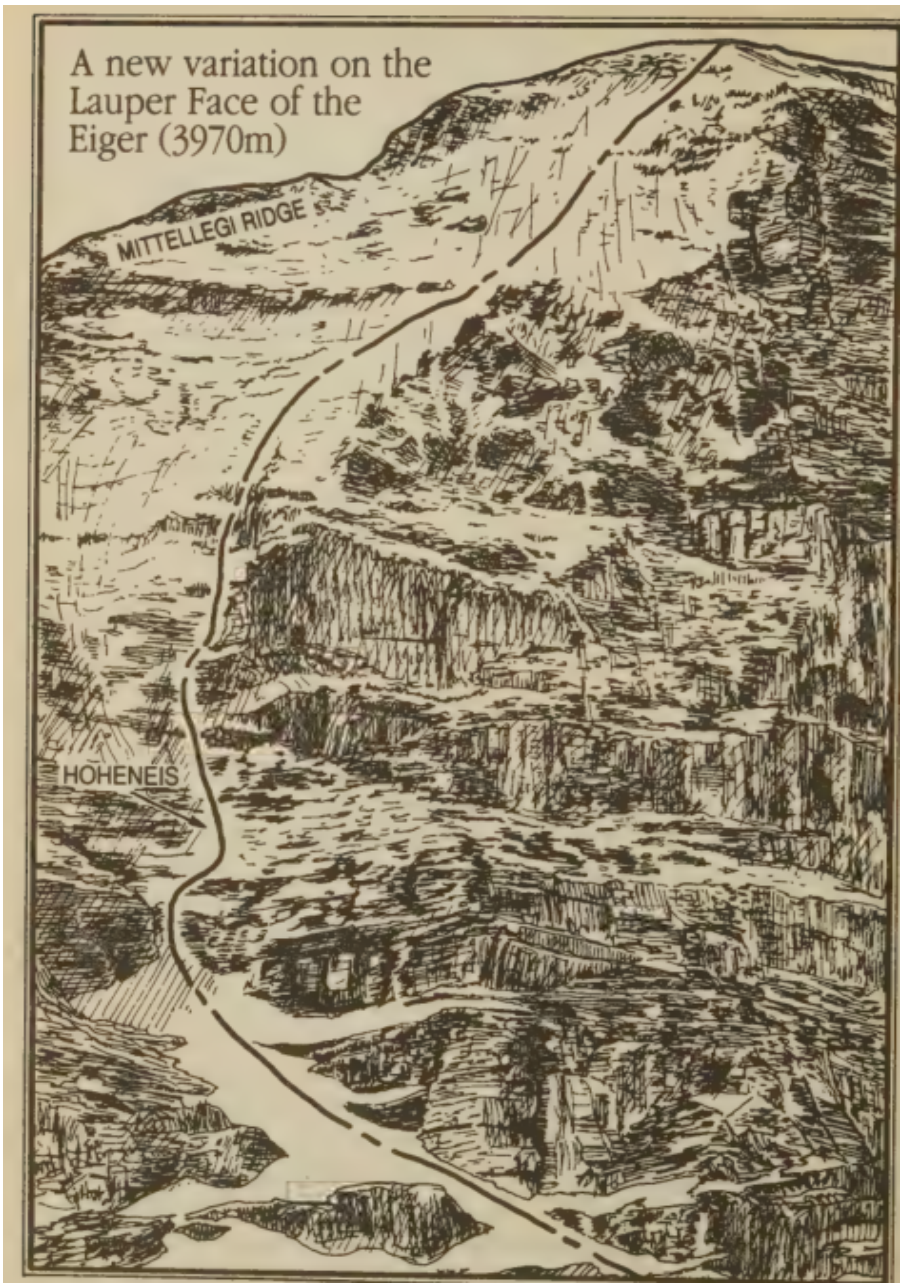

आइगर पर्वत – 3970 मीटर

मैटरहॉर्न और ग्रांडेस जोरासेस के उत्तरी ढलानों पर पहली बार चढ़ाई की तुलना में, आइगरवांड का पर्वतारोहण की दृष्टि से महत्व नगण्य या नगण्य कहा जा सकता है। आइगर के उत्तरी ढलान पर चढ़ाई का सही मार्ग 1932 में खोजा गया था।

अल्पाइन जर्नल, 1938

आइगर पर्वत और इसके उत्तरी ढलानों के बारे में दुनिया के किसी भी अन्य पर्वत की तुलना में कहीं अधिक लिखा गया है। इसकी प्रसिद्ध ढलानों के नीचे से एक रेलवे लाइन गुजरती है जो क्लीने शेइडेग स्टेशन और जंक्शन तक जाती है। यहाँ से एक लाइन वेंगेन की ओर नीचे जाती है और दूसरी ऊपर की ओर एक छोटे से स्टेशन, आइगरग्लेशियर तक जाती है, जहाँ हस्की कुत्ते रखे जाते हैं, और फिर पहाड़ के बीचोंबीच से गुजरने वाली लंबी सुरंगों से होते हुए यूरोप के सबसे ऊंचे स्टेशन, जुंगफ्राउजोच तक पहुँचती है। इस रेलवे का निर्माण 1912 में शुरू हुआ था और उस समय यह दुनिया की सबसे महंगी रेलवे लाइन थी। आइगर पर्वत को देखना बेहद आसान है; क्लीने शेइडेग में तो सिक्का डालकर चलने वाले टेलीस्कोप भी लगे हैं, जिससे पर्यटक कुख्यात आइगरवांड पर पर्वतारोहियों को देख सकते हैं।

उत्तरी भाग का बायां हिस्सा कई खंभों द्वारा मुख्य भाग से अलग किया गया है। घाटी से देखने पर, चढ़ाई के लिए एक प्राकृतिक मार्ग दिखाई देता है। 20 अगस्त, 1932 को हैंस लौपर और अल्फ्रेड ज़ुर्चर ने ए. ग्रेवन और जे. नुबेल के साथ मिलकर इस पर चढ़ाई की थी। लेकिन उत्तरी भाग, यानी उत्तरी भाग, जो कि चौड़ा है, बिल्कुल अलग मामला था। इस दीवार को लेकर इतना नाटक और विवाद हुआ है, इस पर इतनी क्लासिक किताबें लिखी गई हैं कि मैं यहाँ केवल मुख्य बिंदुओं पर ही चर्चा करूँगा।

पहाड़ की चोटी पर कुछ दूरी तक पहुंचने का पहला वास्तविक प्रयास अगस्त 1935 में जर्मन पर्वतारोहियों मैक्स सेडलमेयर और कार्ल मेहरिंगर द्वारा किया गया था।

63

एलिसन हार्ग्रीव्स

उन्होंने आइगरवांड के मध्य से शुरुआत की और सीधे ऊपर की ओर चढ़ाई शुरू की। डगल हैस्टन, जिन्होंने 1966 में कहीं बेहतर उपकरणों के साथ इस मार्ग के इस हिस्से को पार करने का प्रयास किया था, इसकी कठिनाई से दंग रह गए थे। सेडलमेयर और मेहरिंगर अंततः तीसरे हिमक्षेत्र के ऊपर स्थित उस स्थान पर रुक गए जिसे बाद में मृत्यु पड़ाव के नाम से जाना गया। एक तूफान आ गया और वे पीछे हटने लगे। इसके बाद वास्तव में क्या हुआ, यह अलग-अलग विवरणों में भिन्न-भिन्न है। इतना निश्चित है कि वे नॉर्डवांड (उत्तरी दीवार) के पहले शिकार बने, या जैसा कि जर्मन समाचार पत्रों ने बाद में इसे नाम दिया, मोर्डवांड (हत्या की दीवार)।

स्विस अधिकारियों में घबराहट फैल गई और उन्होंने पर्वतारोहियों को उनकी दीवार पर चढ़ने से रोकने वाला कानून पारित कर दिया। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि यह कानून लागू नहीं किया जा सकता, इसलिए उन्होंने इसे रद्द कर दिया। इसके अलावा, कई पर्वतारोहियों के जर्मन और ऑस्ट्रियाई होने और संभवतः नाज़ी समर्थन प्राप्त होने को लेकर स्विस अधिकारियों में

स्वाभाविक रूप से घबराहट थी। इस बारे में आगे विस्तार से चर्चा करेंगे।
1937 में आइगर पर्वतमाला को देखने वालों के लिए एक रोमांचक घटना घटी, जिसे खूब प्रचारित किया गया। दो ऑस्ट्रियाई पर्वतारोही, एडी रेनर और विली एंगरर, दो जर्मन पर्वतारोहियों, एंड्रियास हिंटरस्टोइसर और टोनी कुर्ज़ के साथ मिलकर आगे बढ़े। उन्होंने रेनर और एंगरर द्वारा पहले से तय किए गए मार्ग का अनुसरण करते हुए रोटे फ्लुह तक चढ़ाई की, और फिर हिंटरस्टोइसर ने उन्हें एक पथ पार करके बर्फीले मैदानों तक का रास्ता खोलने में मदद की। उन्होंने पहले, दूसरे और तीसरे बर्फीले मैदान पर चढ़ाई की और उनका उच्चतम बिंदु डेथ बिवाक के ठीक नीचे था। विली एंगरर घायल हो गए थे और नीचे से देखने वालों को लगा कि पूरी टीम ने नीचे उतरने का फैसला कर लिया है, और वे तेज़ी और कुशलता से पहले बर्फीले मैदान की चोटी तक पहुँच गए। जैसा कि उम्मीद थी, मौसम खराब हो गया और एक भयंकर तूफान ने पहाड़ को बुरी तरह प्रभावित किया। अगली सुबह वे हिंटरस्टोइसर के पथ के अंत तक नीचे उतरते रहे। लेकिन इस बार न तो हिंटरस्टोइसर और न ही कुर्ज़ उल्टी दिशा में चढ़ाई कर सके। अंत में उन्होंने रस्सी के सहारे सीधे नीचे उतरने का फैसला किया। यह प्रयास विनाशकारी साबित हुआ। हिंटरस्टोइसर की गिरकर मौत हो गई;
एंगरर रस्सी से गला घोंटकर मर गया और रेनर, जो अभी भी रस्सी से बंधा हुआ था, ठंड से जम कर मर गया। केवल टोनी कुर्ज़ ही जीवित बचा था। स्थानीय स्विस गाइडों ने उसे उस रेलवे सुरंग से बचाने का प्रयास किया जो चट्टान की ओर जाती थी। कुर्ज़ किसी तरह नीचे उतरने में कामयाब रहा जहाँ तक कि वे उसे देख सकें, लेकिन दीवार के उस हिस्से के अत्यधिक लटके होने के कारण, वे उस तक पहुँचने में असमर्थ रहे। वह अपनी रस्सी से लटकते हुए मर गया।
हालांकि, इस साहसी प्रयास ने दूसरों के लिए रास्ता दिखाया, भले ही एल्पाइन जर्नल के प्रतिक्रियावादी संपादक एडवर्ड स्ट्रट ने सभी प्रयासों को 'मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों का जुनून' कहकर उपहास किया हो। 1937 में किए गए अन्य प्रयासों में रैंप तक का मार्ग अपनाया गया और मृतकों की संख्या में एक और मौत जुड़ गई।
64
एक कठिन दिन की गर्मी
1938 की शुरुआत दो और मौतों के साथ हुई, लेकिन अल्पीग्लन, ग्रिंडेलवाल्ड और क्लेइन शाइडेग में अभी भी कई पर्वतारोही मौजूद थे, जिनमें हर स्तर के पर्वतारोही शामिल थे। अफवाहें फैल रही थीं कि जर्मन और ऑस्ट्रियाई पर्वतारोहियों को नाजियों का संरक्षण प्राप्त था। पूरी दुनिया इस पर नजर रख रही थी। यह वही साल था जब ब्रिटिश प्रधानमंत्री चैंबरलेन म्यूनिख के लिए विमान से गए और एक कागज का टुकड़ा लेकर लौटे।
अब ऑस्ट्रियाई हेनरिक हैरर और फ्रिट्ज कास्पारेक सबसे आगे थे। उनके पीछे दो और ऑस्ट्रियाई, रूडी फ्रैसल और लियो ब्रांकोव्स्की थे। उनके लिए एक आश्चर्य इंतजार कर रहा था, क्योंकि उनसे ठीक ऊपर जर्मन एंडरल हेकमायर और लुडविग वोर्ग थे। यह मुलाकात कम से कम दिलचस्प तो रही ही होगी। एंडरल हेकमायर ने लिखा, 'हम छह लोग खड़े होकर इस संयोग पर थोड़ी बनावटी हंसी हंसे।'
सभी छहों ने एक ही स्थान पर रात बिताई और सुबह मौसम खराब हो गया। हेकमायर और वोर्ग

ने पहले ही तय कर लिया था कि मौसम ठीक होने वाला है और वे नीचे उतर गए, अल्पीग्लन तक गए जहाँ उन्होंने मौसम का पूर्वानुमान देखा, पाया कि वह गलत था, और अगले दिन फिर से पर्वतारोहण करने का संकल्प लिया।

वे बहुत तेज़ी से ऊपर चढ़े होंगे, क्योंकि सुबह 11:00 बजे तक वे दूसरे हिमक्षेत्र के ऊपरी हिस्से में पहुँच गए थे। 11:30 बजे वे हैरर और कास्पारेक से मिल गए। (फ्रैसल पिछले दिन एक पत्थर गिरने की चपेट में आ गए थे और वे और ब्रांकोव्स्की सुरक्षित रूप से नीचे उतर आए थे।)

हेकमायर याद करते हुए कहते हैं, 'यह एक पेचीदा मामला था। हमारे सामने एक गंभीर निर्णय था कि क्या हम उन्हें उनके हाल पर छोड़कर आगे बढ़ जाएं। मैं ऐसा करने ही वाला था, लेकिन वोर्ग नहीं, जो कहीं अधिक समझदार थे। उन्होंने ही समझदारी भरे शब्द कहे: 'तो चलो एक दल बनाते हैं और साथ-साथ रस्सी से जुड़ते हैं।' इस तरह पर्वतारोहण के इतिहास में सबसे नाटकीय संयोगों में से एक की शुरुआत हुई।'

वे दो अलग-अलग रस्सियों के सहारे चढ़ाई करते रहे और जल्द ही हेकमायर और वोर्ग, जो आगे चल रहे थे, पिछले उच्चतम बिंदु को पार कर गए, जहाँ वोर्ग पिछले वर्ष मैथियास रेबिट्श के साथ पहुँचे थे। वे रैंप पर चढ़ते गए और शाम 7:00 बजे उन्होंने रात बिताने का फैसला किया।

हेकमायर ने डिब्बाबंद सार्डिन खा ली और रात भर इसका खामियाजा भुगता। अगली सुबह वे हेकमायर के नेतृत्व में रैंप पर चढ़ाई जारी रखी। कुछ कठिन चढ़ाई के बाद वे चार रस्सियों में से एक रस्सी से जुड़ गए, लेकिन जैसे ही उन्होंने दाईं ओर लंबा मार्ग पार करना शुरू किया, जिसे देवताओं का मार्ग कहा जाने लगा, वे फिर से दो अलग-अलग रस्सियों के सहारे चढ़ाई करने लगे, स्पाइडर तक पहुँचने और आगे का रास्ता खोजने के लिए उत्सुक थे। लेकिन आइगर पर्वत उन्हें आसानी से छोड़ने वाला नहीं था और एक भयंकर तूफान आ गया। स्पाइडर, शिखर की बर्फ तक जाने वाली घाटियों के तल पर स्थित एक खड़ी बर्फीली जगह, रहने के लिए बिल्कुल भी सुरक्षित स्थान नहीं था।

बारिश, ओले, बर्फ, गरज और बिजली ने चढ़ाई को रोमांचक बना दिया होगा। वे आगे बढ़ते रहे। एक हिमस्खलन हेकमायर की चपेट में आ गया, लेकिन उन्होंने सूझबूझ दिखाते हुए अपनी कुल्हाड़ी बर्फ में गाड़ दी। 'मैंने एक हाथ से कुल्हाड़ी पकड़ी और दूसरे हाथ से विगरल [वोर्ग] की गर्दन पकड़ ली, मुझे पूरा यकीन था कि हमारे साथी बह गए हैं।'

वे लगभग गिर ही गए थे, लेकिन कठिन चढ़ाई, रस्सी के दांव-पेच और किस्मत के चलते वे सभी एक ही रस्सी पर एकजुट हो गए। उन्होंने आगे बढ़ना जारी रखा और मौसम में थोड़ा सुधार हुआ। उन्होंने फिर से रात बिताई, इस बार चट्टान और बर्फ पर। यह असुविधाजनक और असुरक्षित था। रात भर हिमस्खलन उनके ऊपर से होते रहे। बर्फबारी जारी रही। वे एग्जिट क्रैक्स पर चढ़ते रहे। रास्ता कठिन था, चट्टान बर्फ से चिपकी हुई थी। एक लटकती चट्टान ने समस्या खड़ी कर दी और हेकमायर अपनी पूरी ताकत लगा रहे थे।

'जिस बर्फ के नुकीले औजार को मैं अपनी जान बचाने के लिए पकड़े हुए था, उसका सिरा केवल थोड़ा सा ही अंदर गया और मेरी बर्फ की कुल्हाड़ी का नुकीला हिस्सा भी।'

अचानक पिटन बाहर निकल आया, और उसी क्षण मेरी कुल्हाड़ी टूट गई।
रास्ता। फिर मैं उतर गया...
'जैसे ही मैं गिरा, मैं बाहर की ओर मुड़ गया। विगरल ने रस्सी छोड़ दी और मुझे अपने हाथों से पकड़ लिया, और मेरे क्रैम्पोन का एक सिरा उसकी हथेली में घुस गया।'
हेकमायर वापस ऊपर चढ़े और इस बार लगातार ऊपर की ओर बढ़ते रहे। अब उन्हें कोई नहीं रोक सकता था और हालांकि शिखर का बर्फीला मैदान खड़ी ढलान वाला और रोमांचक था, वे शिखर तक पहुँच गए। यहाँ वे लगभग फिसलकर दक्षिण की ओर गिरने ही वाले थे। थकान और कम दृश्यता दोनों ही समान रूप से हावी थे, दक्षिण-पश्चिम रिज और फ्लैंक से नीचे उतरना किसी बुरे सपने से कम नहीं था। तूफान अभी भी जारी था, लेकिन आखिरकार वे खराब मौसम से बाहर निकल आए और सोचने लगे कि क्या वे मिलकर किसी होटल के कमरे का किराया जुटा सकते हैं। नहीं, वे ऐसा नहीं कर सके और भविष्य अंधकारमय लग रहा था।
लेकिन क्लीने शेइडेग पहुँचते ही सब कुछ बदल गया। उस समय के नायकों के लिए कमरे, भोजन और स्नान की व्यवस्था की गई। बर्न स्थित जर्मन दूतावास ने उनके जश्न के भोज में नाज़ी प्रचार सामग्री भर दी और एडॉल्फ हिटलर से मिलने के लिए रीचस्कान्ज़लेई का निमंत्रण भी भेजा गया। हेकमायर ने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'इससे बचना नामुमकिन था।'
वे गए और उस व्यक्ति से आमने-सामने मुलाकात की जो यूरोप का नक्शा बदलने और दुनिया को युद्ध में धकेलने वाला था। उनकी चढ़ाई की तारीखें 21-24 जुलाई, 1938 थीं। भविष्य में एक किताब लिखी जाएगी जिसमें इस बात का वर्णन होगा कि राष्ट्रीय समाजवाद और नाजियों के उदय ने नॉर्डवांड्स की चढ़ाई में क्या भूमिका निभाई।
66
एक कठिन दिन की गर्मी
अटकलें लगाई जा रही हैं कि अगर ये जबरन जश्न न मनाया जाता, तो क्या हेकमैर और वोर्ग ग्रैंड जोरासेस पर्वत श्रृंखला पर स्थित अछूते वॉकर स्पर पर चढ़ाई करने के लिए फ्रांस चले जाते। आखिरकार, कुछ ही दिनों बाद इटली के रिकार्डो कैसिन और उनकी टीम ने ठीक यही किया था। आइगर नॉर्डवर्ड की पहली चढ़ाई अधिकांश पर्वतारोहियों के लिए बेहद कठिन और चुनौतीपूर्ण थी। युद्ध के वर्षों का प्रभाव पड़ा और दूसरी चढ़ाई 1947 में महान फ्रांसीसी गाइड और पर्वतारोहियों लुई लाचेनल और लियोनेल टेरे द्वारा ही संभव हो पाई। धीरे-धीरे सर्वश्रेष्ठ अल्पाइन पर्वतारोहियों ने इस चुनौती को स्वीकार किया और 1957 तक तेरह चढ़ाइयाँ हो चुकी थीं।
इस चट्टान पर शीतकालीन चढ़ाई के बारे में अभी तक किसी ने सोचा भी नहीं था। 1961 में ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी टोनी हीबेलर ने एंटोन किंशोफर, एंड्रियास मानहार्ट और वाल्टर अल्मबर्गर की अपनी टीम को बेहतरीन उपकरणों और कपड़ों के साथ इकट्ठा किया। हालाँकि उन्होंने रेल सुरंग में जाने वाली गैलरी का उपयोग करते हुए इसे दो हिस्सों में चढ़ाई की, लेकिन उन्होंने आल्प्स शैली में चढ़ाई की और पर्वतारोहण जगत में एक नया ही अध्याय लिख दिया।
इसी वर्ष एडॉल्फ मेयर की मृत्यु के साथ पहला एकल पर्वतारोहण प्रयास भी हुआ। इसके बाद 1962 में एडॉल्फ डेरंग्स और डाइथर मार्चार्ड दोनों ने एकल पर्वतारोहण का प्रयास किया, लेकिन दोनों असफल रहे। महान इतालवी पर्वतारोही वाल्टर बोनाटी 1963 में पहुंचे और सुरक्षित रूप से

नीचे उतर आए, लेकिन उसी दिन मिशेल डारबेले ने अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए अठारह घंटे की चढ़ाई में पहला एकल पर्वतारोहण पूरा किया।

लूलू बोलाज़ यवेटे वॉचर के साथ उस चट्टान पर चढ़ चुकी थीं, लेकिन डेज़ी वूग, जिन्हें प्रेस ने 'म्यूनिख की सचिव' का नाम दिया था, 1964 में उस चट्टान पर चढ़ने वाली पहली महिला बनीं, जब उनके साथ वर्नर बिटनर भी थे।

केवल दो ऊर्ध्वाधर मार्गों वाली इतनी विशाल पर्वत श्रृंखला को पार करना एक बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य था। सेडलमेयर और मेहरिंगर द्वारा शुरू किया गया यह स्पष्ट रूप से अधूरा सीधा मार्ग, एक सीधे अंत मार्ग के साथ समाप्त होना ही था। साठ के दशक के सर्वश्रेष्ठ और सबसे नवोन्मेषी पर्वतारोहियों ने इस पर खोजबीन शुरू की, जिनमें अमेरिकी जॉन हार्लिन भी अग्रणी थे। 1965 में उन्होंने डगल हैस्टन के साथ मिलकर गहन सर्वेक्षण किया और अंततः ऐसा लगा कि अब कुछ प्रगति होने वाली है।

1966 की सर्दियों में एक अमेरिकी और एक जर्मन टीम ने डायरेक्ट रूट पर चढ़ाई के लिए कड़ी टक्कर दी। अंत में उन्होंने सहयोग किया, लेकिन जॉन हार्लिन की मृत्यु हो गई जब जिस रस्सी पर वे जंपिंग कर रहे थे वह टूट गई। हार्लिन रूट कहे जाने वाले इस मार्ग पर पहली चढ़ाई डगल हैस्टन, सिगी हूपफॉयर, जोर्ग लेहने, गुंथर स्ट्रोबेल और रोलैंड वोटेलर ने की थी।

एलिसन हार्ग्रीव्स

इसके ग्यारह साल बाद एलेक्स मैकिंटायर और टोबिन सोरेनसन ने हारलिन मार्ग पर अल्पाइन शैली में पहली बार चढ़ाई की, जो प्रतिभा के अद्भुत प्रदर्शन का एक बेहतरीन उदाहरण है। तब से लेकर अब तक, हर तरफ नए मार्ग खुल गए हैं। कुछ मार्ग बोल्टों से लैस होकर बेहद चुनौतीपूर्ण बन गए हैं, जबकि कुछ कठिन चट्टानी चढ़ाई वाले मार्ग हैं, जिनमें मुश्किल चढ़ाई और मुक्त चढ़ाई दोनों ही उपलब्ध हैं।

आइगरवांड पर पहली सफल एकल चढ़ाई को तीस साल हो चुके थे। अब उस शानदार चट्टान पर अकेले लौटने की मेरी बारी थी, जहाँ मैंने मूल मार्ग की पचासवीं वर्षगांठ पर हुई चढ़ाई में भाग लिया था। मेरे पास दो विकल्प थे - या तो 1938 के मार्ग से अपनी चढ़ाई को दोहराना, या फिर नया मुकाम हासिल करना और उत्तरी चट्टान के लौपर वाले हिस्से पर चढ़ाई करना।

घाटी के दूसरी ओर स्थित पहाड़ों से इस दृश्य का अध्ययन करने पर, एक स्पष्ट और तार्किक रेखा दिखाई दी - एक नए चंद्रमा के आकार का चाप अल्पीग्लन के ऊपर घास से ढकी ढलानों से लेकर अंतिम शिखर तक भव्यता से घुमावदार मार्ग बनाता हुआ। रेखा निरंतर प्रतीत हो रही थी - और यदि परिस्थितियाँ अनुकूल हों, तो आधार से शिखर तक लगभग पूरी तरह बर्फ और हिम पर घुमावदार मार्ग बनाना संभव होगा, जो विभिन्न चट्टानी टीलों के बीच के अंतरालों को जोड़ता है। इसलिए मेरे पास दो विकल्प थे। मैं कौन सा चुनूंगा यह मौसम और परिस्थितियों पर निर्भर करेगा - हमें बस इंतजार करना होगा और देखना होगा।

मुझे उम्मीद थी कि आल्प्स में गर्मियों की छुट्टियां बिताने से मेरी फ्रेंच और थोड़ी-बहुत जर्मन भाषा सुधर जाएगी, और टॉम और केट भी कुछ शब्द सीख लेंगे। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। मैंने दुकानों में तो फ्रेंच का इस्तेमाल किया, लेकिन फ्रांस में बिताए सभी महीनों में कैंपसाइट पर

सबसे आम भाषा अंग्रेजी ही थी। जब हम आखिरकार स्विट्जरलैंड पहुंचे और ग्रिंडेलवाल्ड की गलियों में घूमे, तो केट ने बड़े ही शानदार तरीके से 'बोनजोर' कहा, लेकिन जर्मन बोलने वाले स्थानीय लोगों ने उसे इतनी घूरकर देखा कि उसके बाद से उसने ज्यादा कोशिश ही नहीं की! स्विट्ज़रलैंड डचों से भरा हुआ था। जिधर भी देखते, डच टेंट और कारवां दिखाई देते थे। ज़र्मैट और ग्रिंडेलवाल्ड में कैंपिंग के दौरान हमें एक भी फ्रांसीसी नहीं मिला, और बाद में पता चला कि फ्रांसीसी, हालांकि हमारे पड़ोस में रहते हैं, स्विट्ज़रलैंड बहुत कम आते हैं। जर्मन भी काफी संख्या में मौजूद थे। लेकिन वे, डचों की तरह, बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलते थे और उसका इस्तेमाल करने के लिए बहुत उत्सुक थे, जिससे हमें अभ्यास करने का बहुत कम मौका मिला!
फिर भी, टॉम और केट के लिए शिविर स्थलों पर खेलने के लिए ढेर सारे साथी मिलना बहुत अच्छा था। डच लोग अपने साथ अच्छी तरह से तैयार होकर आए थे।

68

एक कठिन दिन की गर्मी

छुट्टियाँ - बड़े-बड़े तंबू, बड़े-बड़े शामियाने और ढेर सारा उत्साह और टेलीफेरिक पर खर्च करने के लिए पैसे। इतनी बारिश के कारण हम अक्सर कैंप में ही फंसे रहते थे और अलग-अलग तरह के तंबू होने से सभी युवा परिवारों को काफी मदद मिली! एक बेहद बारिश वाली सुबह, पर्किन्स के शामियाने के नीचे आठ बच्चे थे, सभी खुशी-खुशी उन तस्वीरों में रंग भर रहे थे जिनकी हमने आने से पहले बड़ी संख्या में फोटोकॉपी करवाई थी! जापानी, डच, जर्मन, सभी तरह के लोग थे, टॉम और केट भी सबके साथ घुलमिल गए; कोई भेदभाव नहीं था।
हम सुहावने मौसम के एक छोटे से दौर के अंत में पहुँचे। कैम्पिंग आइगर नॉर्डवांड की ओर गाड़ी चलाते हुए, जो मुझे अपनी पिछली यात्राओं से याद था, हमने शेफ डी'इक्विप की निगरानी में पर्किन्स को सावधानीपूर्वक एक उपयुक्त जगह पर पहुँचाया और अपना कैंप लगाया। बहुत गर्मी थी! इतनी गर्मी कि कुछ भी करना असंभव था और जैसा कि एक स्थानीय व्यक्ति ने भविष्यवाणी की थी, जब तापमान तेजी से बढ़ता है तो मौसम बदल जाता है। ऐसा ही हुआ - शाम के समय तक, जब हम ग्रिंडेलवाल्ड के खुले पूल की ठंडक में नहा रहे थे, जो गाँव में रहने वाले सभी लोगों के लिए निःशुल्क था। गरज, अविश्वसनीय बिजली और मूसलाधार बारिश की रात ने कुछ पर्यटकों को बुरी तरह भीग दिया और मुझे एक बार फिर धैर्य से इंतजार करने के लिए मजबूर कर दिया। जबकि आइगर पूरी तरह से खराब स्थिति में था, मैं मॉन्च और जुंगफ्राउ के नोलेन स्पर पर कुछ अभ्यास चढ़ाई कर सका, लेकिन इन व्यस्त पड़ोसी चोटियों से मुझे दक्षिण से आता हुआ और खराब मौसम ही दिखाई दिया। और उस तूफान के बाद तापमान में आए बदलाव के कारण 1300 मीटर की ऊंचाई तक भारी ताजा बर्फबारी हुई। धूप पड़ने पर यह दृश्य शानदार लग रहा था, लेकिन जुलाई में आल्प्स जैसा नहीं! हमने परिवार के साथ भीगी हुई सैर की और चाय के लिए बड़े-बड़े जंगली स्ट्रॉबेरी तोड़े।
मौसम के विपरीत, हमारे संसाधन तेज़ी से कम होते जा रहे थे। अपने नए आलीशान शौचालय ब्लॉक के लिए शेफ डी इक्विप (टीम का प्रमुख) ऊँची दरें वसूल रहा था। हमने अपने विकल्पों पर विचार किया। मेरी बाकी तीन चढ़ाइयाँ शैमोनिक्स क्षेत्र में, उत्तरी डोलोमाइट्स और दक्षिणी ब्रेगालिया में थीं। यहाँ से जाने का मतलब लंबी और महँगी यात्राएँ और उतनी ही महँगी वापसी

यात्रा होती। वास्तव में, यहाँ रुककर अच्छे मौसम का इंतज़ार करना ज़्यादा सस्ता पड़ता। हमने दाँत पीसते हुए शिविर स्थल को भरते और खाली होते देखा, क्योंकि परिवार मौसम से निराश होकर आगे बढ़ रहे थे। बारिश के बीच, हमने ऊँचाई पर चढ़ने के लिए पोस्टबस नेटवर्क का भरपूर इस्तेमाल किया और ग्रिंडेलवाल्ड के आसपास की घास वाली ढलानों पर परिवार के साथ कुछ शानदार हाइकिंग का आनंद लिया। जैसा कि चार साल के टॉम ने बादलों में काफी ऊपर चढ़ते हुए कहा, 'क्या हम आसमान को छू पाएँगे?'

69

एलिसन हार्ग्रीव्स

मंगलवार 20 जुलाई

बारिश!

बुधवार 21 जुलाई

बारिश!

गुरुवार 22 जुलाई

आज शिविर स्थल से आधे से ज़्यादा लोग गायब हो गए हैं। सुबह-सुबह सूरज निकलने की उम्मीद में मैन्लिचेन तक दौड़ने गया। वापस कीचड़ में आकर दोपहर का खाना खाया।

चमत्कारिक रूप से, जैसे ही कारें और काफिले गायब हुए, बादल भी छंट गए। सूरज निकल आया, हमें विश्वास ही नहीं हुआ। किराने का सामान खरीदने के लिए शहर जाते समय मैंने मुख्य सड़क पर बने पुराने जमाने के मौसम स्टेशन पर एक नज़र डाली। शुक्रवार और शनिवार के लिए मौसम ठीक लग रहा था।

मौसम का मिजाज कुछ इस तरह था: एक दिन गर्म, फिर एक दिन उमस भरा, उसके बाद तूफान और तुरंत बाद ठंड और बारिश, फिर मौसम दोबारा गर्म हो जाता था। हाल के तूफानों ने खूब बर्फ गिराई थी। दो दिन सूखे रहने का मतलब था बीच में एक साफ रात और हल्की हवा। असली चुनौती बर्फ पिघलने से पहले पहाड़ पर पहुंचना था। यह विचार तो ठीक था, लेकिन कई दिनों से हमें पहाड़ दिखाई नहीं दिया था।

चाहे कुछ भी हो जाए, मैंने अगले दिन इसे आजमाने का फैसला किया।

जेबी: मैं बड़ा सा बैग लेकर स्टेशन तक जाती हूँ। एलिसन बच्चों का हाथ थामे चल रही है। इस बार हमें उसे विदा करना ही है। स्टेशन पर इतनी भीड़ है और इतने सारे जापानी और कोरियाई लोग केट की तस्वीरें खींचना चाहते हैं कि उसे अपनी माँ को जाते हुए देखने का समय ही नहीं मिलता।

धीरे-धीरे दोपहर की भीड़ कम हो जाती है। हम चाय के लिए शिविर स्थल पर वापस लौटते हैं।

70

एक कठिन दिन की गर्मी

शुक्रवार 23 जुलाई

एक विशाल बैग लेकर मैं दोपहर की ट्रेन में सवार हुआ, अपने परिवार को अलविदा कहा और अल्पीग्लन की ओर घास के मैदानों पर सवार होकर निकल पड़ा।

फिर जंगल से होते हुए सीधे ऊपर की ओर बढ़ते हुए, मैं चट्टानी ढलानों पर चढ़ गया जो पहाड़ की तलहटी में स्थित थीं। मैं जितना हो सके उतना करीब जाना चाहता था, लेकिन यह ऐसी जगह होनी चाहिए थी जहाँ से चढ़ाई पूरी करने के बाद ग्रिंडेलवाल्ड लौटते समय मैं आसानी से वापस आ सकूँ। साथ ही, मुझे एक समतल जगह चाहिए थी जहाँ मैं आराम से लेट सकूँ और जहाँ पर्याप्त पानी उपलब्ध हो। मुझे एक सुंदर घास का टीला दिखाई दिया और मैं उसके पीछे जाकर पहाड़ से बहकर आने वाले पानी के स्रोत का पता लगाने लगा।

ग्रिंडेलवाल्ड की जगमगाती पहाड़ियों के नज़ारे के साथ, मैं शाम बिताने के लिए आराम से बैठ गया। मौसम नम था, आसमान में बादल मंडरा रहे थे, लेकिन ऊपर आसमान साफ और तारों से जगमगा रहा था। अपने गोर-टेक्स बिवाक बैग के तंग प्रवेश द्वार से बाहर देखते हुए मैंने टूटते तारों को गिरते देखा और कल के बारे में सोचने लगा।

शनिवार 24 जुलाई

रात में दो-तीन बार नींद खुली। पहली बार तो बगल में दबे कदमों की आहट सुनकर मैं बुरी तरह घबरा गया। डर के मारे मैं उठ बैठा, और फिर जैसे ही वो जानवर भागा, मुझे एहसास हुआ कि वो एक जिज्ञासु चमगादड़ था जो घुसपैठिए का पता लगाने आया था।

सुबह 4 बजे के बाद मैंने चूल्हा जलाने का फैसला किया। कोई जल्दी नहीं थी, चढ़ाई शुरू करने से पहले मुझे प्राकृतिक रोशनी चाहिए थी। मैंने खुद को मानसिक रूप से तैयार करना शुरू कर दिया।

जेबी: मैंने सुबह 6 बजे का अलार्म लगाया और बच्चों को डिस्टर्ब न करने के लिए सावधानी से टेंट से बाहर निकला। मैं सामान रखने वाले बक्सों के पास बैठ गया और लीट्ज़ दूरबीन से चेहरे पर फोकस किया। सुबह बहुत ठंडी और चुस्त थी। मुझे कोई दिखाई नहीं दे रहा था। मेरे पीछे एक और दूरबीन पहले से ही इस्तेमाल में थी। हमने आपस में बात की और अपने-अपने बिस्तरों पर लौट गए। एलिसन अपनी योजना पर अड़ी हुई थी। ऐसा लग रहा था कि मौसम एक शानदार दिन के लिए तैयार है।

मैंने शिविर का सामान, स्लीपिंग बैग, चटाई, स्टोव आदि बड़े बैग में और चढ़ाई के लिए आवश्यक सामान एक छोटे, हल्के बैग में पैक कर लिया।

फिर उसने बड़े से थैले को सावधानीपूर्वक एक झाड़ी से बांध दिया ताकि जिज्ञासु गायें उसे ढलान पर न सूंघ सकें।

ऊपर की ओर फैली ढीली चट्टानों पर अपना रास्ता बनाते हुए, मैंने कुछ छोटी-छोटी चट्टानी संरचनाओं को पार किया और इसी तरह होहेनीस हिमक्षेत्र से नीचे गिरने वाली प्रमुख हिम ढलान के आधार तक पहुंचा।

जेबी: लॉपर मार्ग वास्तव में उत्तरी स्तंभों के ठीक नीचे दाईं ओर से शुरू होता है और एक चट्टानी श्रृंखला को दाईं से बाईं ओर काटता है। यह होहेनीस हिमक्षेत्र के आधार को पार करते हुए बाईं ओर एक लंबे पथ से होते हुए उस स्थान तक पहुँचता है जहाँ से आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए मिट्टेलेगी रिज तक जाने वाला पुराना सीधा मार्ग जाता था। फिर यह दाईं ओर मुड़कर

होहेनीस के ऊपर और महत्वपूर्ण लॉपर गली के तल तक पहुँचता है।
क्रैम्पोन पहने, ब्लैक प्रॉफेट के औजार निकाले, मेरी एबसेलिंग रस्सी मेरे रकसैक में मजबूती से बंधी हुई थी - मैं चल पड़ा।
हालांकि नीचे जमी पुरानी, गंदी बर्फ को ताजी बर्फ की एक परत ने ढक रखा था, लेकिन इस संकरी बर्फीली ढलान का ऊपरी आधा हिस्सा दरारों से फटा हुआ था। पहले दाईं ओर और फिर बाईं ओर मुड़ने के बाद, मैं किसी तरह होहेनीज़ के बिल्कुल संकरे सिरे तक पहुँच गया।
जेबी: सुबह के 7:30 बजे मैंने पहली बार एलिसन को चढ़ाई करते देखा। वह एक छोटी काली मकड़ी की तरह खड़ी बर्फ पर उछल-कूद कर रही थी; जैसे ही वह होहेनीस की गर्दन बनाने वाली चट्टानों पर चढ़ी, वह मेरी नजरों से ओझल हो गई। होहेनीस खुद एक सिर की तरह दिखता है, लेकिन उसके दाहिनी ओर तीन कान हैं।
लेकिन ठंड ने होहेनीज़ की खूबसूरती को पूरी तरह से नहीं दर्शाया था। पानी अभी भी पीछे से एक विशाल झरने की तरह बह रहा था। इस समय भीगने से बचने के लिए मैं थोड़ा दाहिनी ओर एक बर्फीली ढलान पर चढ़कर एक नाले में चला गया। चट्टानी शिलाओं और किनारों पर जमी ताज़ी गीली बर्फ पर फिसलते हुए, मैं ऊपर चढ़ा और फिर होहेनीज़ की गर्दन के ऊपर बाईं ओर मुड़ा। यहाँ से सीधा ऊपर चढ़ना था। सीधे चढ़ाई करने से मैं लॉपर मार्ग के लंबे रास्ते से बच गया, जो होहेनीज़ और उसके बर्फीले हिस्से से बचता है।
अब मैंने अपने मार्ग का विवरण देखा ताकि यह पता लगा सकूँ कि वह रेखा कहाँ से शुरू होगी और आगे कहाँ जाना है। मेरे ठीक ऊपर एक बर्फीली चट्टान से नीचे गिरती हुई एक शानदार खड़ी बर्फीली ढलान थी। लेकिन जैसे ही मैंने देखा

यह ढह रहा था और कभी-कभी बर्फ के बड़े-बड़े हिमस्खलन सीधे बर्फ से नीचे आ रहे थे। निराश होकर मैं एक अस्पष्ट ढलान का अनुसरण करते हुए ऊपर की ओर बढ़ा और जल्द ही उसके नीचे पहुँच गया और ऊपर मिट्टेलेगी रिज से नीचे आ रही एक विशाल फ़नल प्रणाली में प्रवेश कर गया। मेरे ठीक ऊपर विशाल ठोस चट्टानी आधार को देखते हुए मैं दाईं ओर मुड़ा और एक असंगठित और अथाह खाई से ऊपर चढ़ते हुए, एक स्पष्ट नाले में पहुँचने में कामयाब रहा जो सीधे ऊपर की ओर जा रहा था।
गाइड बुक में विशाल ठोस चट्टानी टीले के पीछे स्थित एक गहरी खाई में सीधे जाने के बारे में बताया गया है।
जेबी: बच्चे हमारे जर्मन मित्र, हैंसन-मैग्नसन परिवार के साथ उनके कारवां में नाश्ता करने चले गए थे। मैंने आइगर/एलिसन को देखने वालों की कतार को समझाया कि वह बड़ी चट्टान के पीछे गायब हो जाएगी और शायद कुछ समय तक दोबारा दिखाई नहीं देगी, दाईं ओर एक चट्टानी किनारा है जहाँ आराम करने के लिए एक बढ़िया जगह है। वे चाय और देर से नाश्ता करने के लिए चले गए, और दूरबीन वगैरह अपनी सीटों पर छोड़कर अपनी जगह पक्की कर ली।
राइके हैनसेन-मैग्नसन मेरे लिए होलमील टोस्ट और एक बड़ा मग गर्म कॉफी लेकर आई। मैं अकेला खड़ा था और यूं ही चेहरे को देख रहा था। तभी एक हल्की सी हलचल ने मेरा ध्यान

खींचा। दूरबीन से मैं साफ देख पा रहा था कि एलिसन लॉपर हिडन की गली के बाईं ओर मिश्रित चट्टानी टीले पर चढ़ रही थी। शायद उसे ऊपर से चढ़ने के लिए किसी ऊंचे रास्ते की जरूरत थी? नहीं, वह सीधे चट्टान पर चढ़ रही थी। यह शानदार लग रहा था! धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ते हुए, एक कदम दाईं ओर, एक कदम बाईं ओर, ऊपर, वह सचमुच अपनी पूरी ताकत लगा रही थी। देखने वाले जल्दी से अपनी जगह पर वापस आ गए। उनकी उंगलियां सफेद पड़ गई थीं। हम इतिहास बनते देख रहे थे। एलिसन आल्प्स की सबसे ऊँची चोटियों पर अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही थी। वह एक नई चढ़ाई बना रही थी, लॉपर से ऊपर और बाईं ओर रास्ता काटते हुए। अब वह आगे कहाँ जाएगी? टोस्ट और कॉफी ठंडी ही खत्म हो गई।

मैंने चढ़ाई जारी रखने का फैसला किया। ढलान की प्राकृतिक स्थिति का अनुसरण करते हुए, गीली बर्फ और हिम से ढकी एक कठिन चट्टान से गुजरते हुए, मैं सावधानीपूर्वक ऊपर की ओर बढ़ता गया। ऊपर खड़ी बर्फ पर मुझे एहसास हुआ कि मिट्टेलेगी रिज बाईं ओर से संकरा होने लगा था और मुझे नीचे दूर एक झोपड़ी दिखाई दे रही थी। मुझे एहसास हुआ कि मैं सीधे उस चट्टानी पट्टी की ओर बढ़ रहा था जो दाहिनी ओर से क्षैतिज रूप से चट्टान को पार करती है। मुझे पता था कि बर्फ पर आगे बढ़ने का सबसे अच्छा रास्ता इसके दाहिनी ओर से ही है। इसलिए, ऊपर और दाहिनी ओर चढ़ते हुए मैं एक ऐसे बिंदु पर पहुँचा जहाँ से मैं आगे बढ़ सकता था।

खुशी-खुशी चढ़ाई करते हुए आगे बढ़े। यहाँ से चढ़ाई अच्छी हो गई। स्थिति बेजोड़ थी और मैं बहुत अच्छा महसूस कर रहा था।

मुझे पता था कि अगर मैं तापमान बढ़ने और सूरज की तेज गर्मी से बर्फ के अपरिहार्य क्षरण से बचने के लिए लगातार आगे बढ़ता रहूं, तो मैं चढ़ाई पूरी करके शिखर की ओर बढ़ पाऊंगा।

जेबी: उसे रॉक बैंड पर चढ़ते देखना शानदार था। लॉपर और पोलिश नॉर्थ पिलर का रास्ता यहीं से होकर गुजरता है। अब वो आगे क्या करेगी? उसने तथाकथित नैरो के ऊपर रुककर सीधे ऊपर की ओर चढ़ाई शुरू कर दी। एक बार फिर नया मुकाम हासिल किया। बच्चे प्रभावित नहीं हुए और उन्हें समझ नहीं आया कि आखिर इतनी चर्चा किस बात की हो रही है। बस माँ चढ़ाई कर रही थी! टॉम ने कहा कि जब वो चोटी पर पहुँच जाएगी तो वो उसे देख लेगा।

लेकिन अगला भाग थोड़ा थकाऊ हो गया, अब बर्फ बेहतर थी। चढ़ाई अभी भी खड़ी और खुली थी, लेकिन पहले जैसी रोमांचक नहीं रही और मेरी पिंडलियों में थकान महसूस होने लगी। जैसे-जैसे मैं ऊपर चढ़ता गया, मुझे दाईं ओर नीचे लॉपर मार्ग पर चट्टान और नॉबक्रैक का आधार दिखाई देने लगा।

मेरी आखिरी बाधा एक त्रिकोणीय चट्टान थी जो नीचे की ओर फैलकर शिखर के बर्फीले मैदान से चट्टान के मुख को अलग करती थी।

मेरे ठीक ऊपर पतली लेकिन अच्छी बर्फ से ढकी चट्टान पर एक खाई से होते हुए, मैंने अपना रास्ता बनाया और फिर बर्फीली चोटी तक पहुंचा जो सीधे शिखर की ओर जाती थी। दोपहर 1 बजे, मैं आखिरकार वहां पहुंच गया। मैं खुश होना चाहता था, लेकिन जैसे ही मैंने अंतिम शिखर

की चोटी पर नजर डाली, मेरा दिल बैठ गया। हाल ही में हुई ताज़ी बर्फबारी और हवाओं के कारण, चोटी पर मेरिंग्यू जैसी विशाल बर्फ की चट्टानें फैली हुई थीं।
रस्सी से बंधे होने के बावजूद भी यह हमेशा एक चिंताजनक प्रस्ताव होता है, मुझे पता था कि अतिरिक्त सावधानी बरतने और रिज के शीर्ष और मेरिंग्यू कॉर्निस से काफी नीचे चढ़ने से, खड़ी जमीन पर फिर से आगे बढ़ना बहुत समय लेने वाला होगा।
केट: 'पापा, मुझे शौच करना है!'
जेबी: तो मैं उसे पहाड़ की आखिरी खड़ी चढ़ाई करते हुए देखने से चूक गया। उसने लॉपर डायरेक्ट फिनिश के आखिरी बेहद खड़ी हिस्से पर चढ़ाई की, जिस पर सबसे पहले एरिक फ्रीडली और रुएडी होम्बर्गर ने चढ़ाई की थी, और वास्तव में वह शिखर तक पहुँच गई।
74
एक कठिन दिन की गर्मी
दोपहर 12:55 बजे। साढ़े पाँच घंटे से भी कम समय में, एक नया और महत्वपूर्ण मार्ग और शायद मिट्टेलेगी रिज की ओर भटके बिना अकेले नॉर्थ फेस पर चढ़ाई करने वाली पहली पर्वतारोही। क्या कमाल का प्रयास है! वह ज़रूर बहुत खुश और उत्साहित होगी।
दोपहर 2:00 बजे और शिखर पर पहुँच गए - 3970 मीटर की ऊँचाई पर, यह मेरी अब तक की सबसे ऊँची चढ़ाई तो नहीं थी, लेकिन कम से कम इस बार मैं दूर-दूर तक देख सकता था।
बिना कहीं रुके, मुझे नीचे उतरने की तीव्र इच्छा हो रही थी। ताज़ी सुबह तेज़ी से गर्म दिन में बदल गई थी। सूरज की तेज़ गर्मी से नीचे उतरने का रास्ता बेहद मुश्किल होने वाला था।
मैं आगे बढ़ा, हर कदम पर अपने क्रैम्पोन के नीचे जमा बर्फ को झाड़ता हुआ। चट्टानी शिलाओं पर जमी ताज़ी बर्फ की मोटी परत बहुत डरावनी थी। कभी-कभी मैं फिसल जाता और खुद को संभाल लेता।
वेस्ट रिज और साउथ-वेस्ट फ्लैंक से नीचे उतरने के लिए गाइडबुक में दिए गए विवरण में एक खड़ी ढलान वाली खाई से नीचे उतरने के लिए 'तीन लाल एबसेल पॉइंट' का ज़िक्र है। जब मुझे लगा कि मैंने सबसे ऊपर वाला पॉइंट ढूंढ लिया है, तो मैंने पहली और आखिरी बार अपनी रस्सियाँ निकालीं, कुछ मीटर तक सुरक्षित महसूस करके मुझे खुशी हुई। लेकिन जब मैं रस्सियों के निचले सिरे पर पहुँचा, तो वहाँ कोई लाल एबसेल पॉइंट नहीं था। मुझे एहसास हुआ कि ऊपर के दोनों पॉइंट गहरी बर्फ में दब गए होंगे। मैंने अपनी रस्सियों को समेटा और फिर से चलना शुरू किया।
मैं एक गहरी खाई के शिखर पर पहुँचा, सावधानी से नीचे देखा और उतरने के सबसे सुरक्षित तरीके पर विचार करने लगा। मैं बहुत ज़्यादा बाईं ओर नहीं जाना चाहता था क्योंकि इससे मैं ग्लेशियर के ऊपर की चट्टानों पर पहुँच जाता। दाईं ओर का रास्ता बेहद खड़ी ढलान वाला था। लेकिन मुझे पता था कि मुझे उस खाई के तल तक पहुँचना ही है। नीचे दूर तक पैरों के हल्के निशान थे। इसलिए, सावधानी से नीचे उतरते हुए, क्रैम्पोन बर्फ और कीचड़ को चीरते हुए नीचे की चट्टानों पर पहुँचे, मैं टेढ़े-मेढ़े रास्ते से बाएँ और दाएँ गया और अंत में खाई के तल तक पहुँच गया।
अब पैरों के निशान ऊपर की ओर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे और यह जानकर तसल्ली मिली

कि हाल ही में कोई और भी उस पहाड़ पर गया था।
ढलान थोड़ी कम हुई और जैसे ही मैं बाईं ओर उतरने लगा, मुझे बर्फ में कुछ नीले रंग का पड़ा हुआ दिखाई दिया। पता चला कि वह एक गोर-टेक्स जैकेट थी। यह सोचकर मुझे हंसी आ गई कि स्प्रेवे द्वारा प्रायोजित होने के बावजूद, मुझे जिन चीजों की जरूरत थी, उनमें से एक जैकेट भी मिल गई! मैंने अपना बैग उतारा और उसे ढक्कन में डाल दिया।
अब मैं दाईं ओर जा रहा था और फिर बाईं ओर मुड़ रहा था, एक प्राकृतिक रेखा का अनुसरण करते हुए जिसे मैं अस्पष्ट रूप से पहचान सकता था।

पांच या शायद दस मिनट बाद, मेरे नीचे बर्फ में कुछ और पड़ा था - एक हेडटॉर्च और बिस्कुट का एक खाली पैकेट, जिसे देखकर मुझे हंसी आ गई। यहाँ के पक्षी कोई भी मौका नहीं छोड़ते! थोड़ा और नीचे एक कमरबंद पड़ा था। जैसे ही मैंने उसे उठाया, मुझे एहसास हुआ कि वह खुले सिक्कों से भरा हुआ था और जब मैंने ज़िप खोली, तो बटुआ स्पेनिश पेसेटा के नोटों से भरा हुआ था! यह साफ तौर पर फेंका हुआ सामान नहीं था। या तो मुझे कोई इसे ढूंढ रहा होगा, या मुझे इसे पुलिस को सौंपना पड़ेगा। एक बार फिर इन फालतू चीजों को अपने बैग में भरकर मैं नीचे की ओर चल पड़ा, यह सोचने की कोशिश करते हुए कि आखिर कोई जैकेट क्यों गिराएगा। खैर, यह तो आसान था; अगर वह सिर्फ बैग के ढक्कन के नीचे रखी होती, तो आसानी से गिर सकती थी। लेकिन कमरबंद, हेडटॉर्च और बिस्कुट का पैकेट खोना थोड़ा ज्यादा रहस्यमय था।
जैसे-जैसे मैं ढलान पर आगे बढ़ता गया, मुझे यह एहसास हुआ कि कोई पर्वतारोही फिसल गया था। उसके बैग की जेब खुली हुई थी, कुछ सामान बाहर गिर गया था; ऐसे इलाके में गिरने से वह काफी नीचे आ गया था, और वह इतना घबराया हुआ या थका हुआ था कि अपना सामान लेने वापस नहीं जा सका।
इस निष्कर्ष पर पहुँचने के कुछ ही सेकंड बाद और भी सामान सामने आ गया। इस बार एक बिल्कुल नया हार्नेस, जो बैग से आधा बाहर निकला हुआ था, एक क्रैम्पॉन और गोर-टेक्स ओवर-ट्राउजर की एक जोड़ी। एक बार फिर सामान लादने के बाद, मैं आगे की स्थिति को लेकर चिंतित हो गया। क्या मैं नीचे संघर्ष कर रहे उस व्यक्ति को पकड़ पाऊँगा या मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगा?
जब मैं चट्टान के एक खड़ी ढलान वाले हिस्से के नीचे एक बड़े टूटे हुए किनारे पर दाईं ओर चल रहा था, तो अचानक मुझे ग्लेशियर पर बहुत नीचे दो आकृतियाँ दिखाई दीं। (बाद में पता चला कि वे दो बिल्कुल अनजान लोग थे जो पश्चिमी ढलान पर खतरनाक रूप से देर से चढ़ाई कर रहे थे।)
वे बर्फ में बने एक पतले रास्ते के किनारे बैठे थे, इसलिए मुझे ठीक से पता नहीं था कि वे किस दिशा में जा रहे हैं, लेकिन मुझे लगा कि आखिरकार मुझे लापता कड़ी मिल गई है। तो वे दो लोग थे। ज़ाहिर है, एक फिसल गया होगा, काफी दूर चला गया होगा लेकिन सामान लेने के लिए वापस नहीं लौटा होगा। किसी अज्ञात कारण से वे सीधे नीचे की ओर चले गए; शायद किसी का हाथ टूट गया हो?

सबसे आसान रास्ते का अनुसरण करते हुए मैं बाईं ओर नीचे उतरने लगा, तभी एक बेहद गहरी खाई के नीचे मुझे कुछ चमकदार दिखाई दिया। अब क्या! घबराकर मैं सोचने लगा कि नीचे उतरकर इसे ठीक करूँ या सीधे नीचे उतरता रहूँ। जाहिर है, यह और भी सामान था और क्या मैं इसे ढोने की परेशानी उठाना चाहता था?

सावधानी से, मैं ढलान की ओर मुड़ा और नीचे उतरने लगा। एक काराबिनर टाइटेनियम आइस स्क्रू में लगा हुआ था और उसके ऊपर एक आइस एक्स थी।

एक कठिन दिन की गर्मी

हाथ की रस्सी में अभी भी एक दस्ताना फंसा हुआ था। गिरने की कल्पना करके मैं कांप उठा, और यह सोचकर भी कि कोई कुल्हाड़ी को पकड़ने की बेताब कोशिश कर रहा होगा और उसका हाथ दस्ताने से फिसल जाएगा। मैं बैठ गया, पानी निकाला, थोड़ी देर सोचा और फिर, भारी बैग से लदा हुआ, कुल्हाड़ी पीठ पर लिए, मैं फिर से नीचे उतरने लगा।

अब मैं मंज़िल के करीब पहुँच रहा था। आइगरग्लेशियर स्टेशन साफ़ दिखाई दे रहा था और मैं लोगों को ग्लेशियर के किनारे पर इधर-उधर घूमते हुए देख सकता था। पश्चिमी ढलान के पथरीले हिस्से पर दाईं ओर बढ़ते हुए, मुझे पत्थरों के ढेर दिखने लगे - मैं लगभग मंज़िल तक पहुँच ही गया था। बस एक और चौड़ा दायाँ रास्ता चट्टानों के ऊपर से पार करना था, फिर बाएँ मुड़कर ग्लेशियर की ओर नीचे उतरना था और घर पहुँच जाना था।

मैं धीरे-धीरे गुनगुना रही थी और अब खुशी से चिल्लाने का मन कर रहा था। अचानक मेरे भीतर से एक आवाज़ आई। नहीं, अभी नहीं। यह सोचकर कि यह मेरी भीतरी सतर्क आवाज़ है जो मुझे सुरक्षित स्थान पर पहुँचने तक जश्न न मनाने के लिए कह रही है, मैं निडर होकर चुपचाप चट्टानी रास्ते पर आगे बढ़ती रही।

मैं एक मोड़ पर मुड़ा और एक छोटी सी चिमनी से नीचे उतरने ही वाला था कि तभी बाईं ओर मेरी नज़र फिर से किसी चीज़ पर पड़ी। और सामान, इस बार एक लाल रंग का बैग। मैं उसकी ओर बढ़ा और तब मुझे एहसास हुआ कि वहाँ सिर्फ़ एक खाली और फटा हुआ बैग ही नहीं था, बल्कि उससे एक शरीर भी जुड़ा हुआ था; एक आदमी, जिसके पैरों में अभी भी उसके बड़े-बड़े पहाड़ी जूते बंधे हुए थे, मेरे नीचे बेसुध पड़ा था।

जिस छोटी सी पत्थर की सीढ़ी पर मैं खड़ी थी, उसमें एक छोटा सा उभार था, जिसके नीचे उसका सिर, अगर बचा भी था, तो छिपा हुआ था और दिखाई नहीं दे रहा था। मुझे नीचे जाकर यह देखने की कोई इच्छा नहीं थी कि वह कैसा दिख रहा होगा; उसकी आँखें मुझे हमेशा के लिए परेशान करती रहेंगी।

यह देखने की कोई ज़रूरत नहीं थी कि वह ज़िंदा है या नहीं। मैं तुरंत समझ गया कि वह मर चुका है; जिस तरह वह लेटा था, उसके शरीर का रंग, उसका आधा नंगा सीना, हल्के कपड़े, फटे-पुराने कपड़े। कोई हलचल नहीं, कोई आवाज़ नहीं। मैंने अंदाज़ा लगाने की कोशिश की कि वह कितनी दूर गिरा होगा। वह ज़रूर नीचे, नीचे, नीचे लुढ़कता हुआ चट्टान के इस समतल हिस्से तक पहुँचा होगा जहाँ वह आकर रुका था।

मैं बैठ गई और रोने लगी। शायद आम तौर पर मैं इसे संभाल लेती, लेकिन उस समय मैं

मानसिक और शारीरिक रूप से थक चुकी थी। मैं तब तक रोती रही जब तक मेरे गम ने मुझे होश में नहीं ला दिया। लेकिन मैं क्या करती? मैं अकेले इस आदमी को नीचे नहीं ला सकती थी। मदद लाने का मतलब उसे वहीं छोड़ना होता। यह मुझे गलत लगा - मुझे लगा कि पहाड़ से उसे सुरक्षित नीचे लाना मेरा फर्ज है। लेकिन कैसे?

फिर एक विचार और तर्क आया। अगर मैं आइगरग्लेशियर स्टेशन पर लोगों को देख और उनकी आवाज़ें सुन सकता था, तो यह मान लेना अनुचित नहीं था कि मैं

इससे लोगों का ध्यान आकर्षित हो सकता था। मैंने हाथ हिलाना और चिल्लाना शुरू कर दिया। चिल्लाया और हाथ हिलाया। फिर इस सब की निरर्थकता से थककर, बैठ गया और फिर से रोने लगा।

जब मैं शांत हुई तो खड़ी हो गई और फिर से हाथ हिलाने लगी। तभी सफलता मिली! जुंगफ्राऊ के पीछे से एक हेलीकॉप्टर सही दिशा में आता हुआ दिखाई दिया। मेरे हाथ हिलाने की आवाज़ और तेज़ हो गई और मैं खुशी और राहत से रो पड़ी। लेकिन हेलीकॉप्टर मेरी तरफ नहीं आ रहा था। वह सीधे आइगरग्लेशर के ऊपर से होते हुए ग्रिंडेलवाल्ड की ओर बढ़ता रहा। मैं कुछ पल बैठी रही और सोचा कि शायद वह मुड़ जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मैं फिर से फूट-फूट कर रोने लगी। यह सब व्यर्थ था। आइगरग्लेशर पर मुझे लगा कि लोग इकट्ठा होकर देख रहे हैं। लेकिन हेलीकॉप्टर कहाँ था?

मैंने ध्यान से सुना। फिर पिघले पानी की धारा की हल्की-सी आवाज़ - एक ऐसी आवाज़ जो हमेशा के लिए मेरी याद दिलाती रहेगी - दूर से आती हेलीकॉप्टर के ब्लेडों की आवाज़ में बदल गई, और मेरे नीचे पहाड़ी के ऊपर से एक हेलीकॉप्टर सीधे आइगरग्लेशियर की ओर उड़ता हुआ आया। मैं खुशी से उछल पड़ा - आखिरकार उन्होंने मुझे देख ही लिया! राहत के आँसू बह निकले।

पल भर के लिए मेरा दिल बैठ गया, जब हेलिकॉप्टर मुड़ा और रेलवे ट्रैक के किनारे उतरा। नीचे काफी हलचल थी। नारंगी रंग के सूट पहने लोग अपने सामान के साथ बाहर निकल रहे थे, फिर एक बार फिर, रोटर चलने लगे और हेलिकॉप्टर ग्लेशियर की ओर बढ़ने लगा, फिर धीरे-धीरे पहाड़ की ढलान पर चढ़ता हुआ अंदर की ओर मुंह किए हुए था। वे जाहिर तौर पर कुछ खोज रहे थे, लेकिन उन्होंने मुझे नहीं देखा था।

मैं खड़ा हो गया और जैसे ही हेलीकॉप्टर मेरे नीचे चट्टानी टीले के पीछे से ऊपर आया, मैंने बेतहाशा हाथ हिलाया। लाल रंग के उस यंत्र का अगला हिस्सा मेरे सामने उठा और मैं नकाबपोश और कान ढके पायलट और पर्यवेक्षक को देख सका। रोटर ब्लेड की ताकत से पिघला हुआ पानी चारों ओर उड़ रहा था। मैंने अपनी आँखें ढँक लीं और नीचे मौजूद शरीर की ओर इशारा करते हुए हाथ हिलाया। उन्होंने सहमति में सिर हिलाया, सीधे मेरे ऊपर उठे और एक सुसज्जित पर्वतीय गाइड हेलीकॉप्टर के अंदर से नीचे उतर आया।

मुझे लगा जैसे वह मुझे सांत्वना दे रहा हो, उसने मुझे बाहों में भर लिया। लेकिन वह मेरी दाहिनी बांह को हिला रहा था और मेरा हाथ झटक रहा था। हेलीकॉप्टर के शोर के बीच वह चिल्ला रहा

था, 'शानदार, शानदार!'
मैं असमंजस में खड़ा था। तभी मुझे याद आया कि उसी सुबह एक अकेला हेलीकॉप्टर नॉर्थ फेस के ऊपर से उड़ता हुआ मिट्टेलेगी रिज को पार कर गया था। शायद किसी ने मुझे देख लिया था और अब वह मेरी चढ़ाई पर मुझे बधाई दे रहा था। लेकिन मेरे लिए सबसे ज़रूरी था वह थका-हारा आदमी जिसकी मैं पिछले आधे घंटे से रखवाली कर रहा था; हालाँकि वह समय मुझे बहुत लंबा लग रहा था। मैं बस यही चाहता था कि हम दोनों वहाँ से निकल जाएँ।
78
एक कठिन दिन की गर्मी
मेरे नए दोस्त ने आखिरकार शव को पहचान लिया और टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में चिल्लाकर कहा, 'हम तुम्हें नीचे ले जाएंगे।' एक और आदमी को हमारे बगल में उतारा गया। उसने भी मुझसे हाथ मिलाया और फिर शव की स्थिति का मुआयना करने लगा; वह एक पुलिस अधिकारी था। फिर से केबल नीचे आई और मैं ऊपर चला गया।
आइगरग्लेशर पहुँचकर मैंने अपना तनाव कम करना शुरू किया, अपना हार्नेस और वाटरप्रूफ सूट उतारा, अपना बैग खोलकर उसमें रखी सारी चीज़ें ज़मीन पर दो ढेरों में निकाल दीं। मुझे पता था कि मेरा सामान क्या है। बस अंदर से कुछ ऐसा था जो बाकी सामान से छुटकारा पाना चाहता था। जब मैं अपना सामान वापस बैग में भर रहा था, गहरी सोच में डूबा हुआ था, तभी मुझे एक लंबा, सांवला पर्वतारोही रास्ते पर आता हुआ दिखाई दिया। दिन ढलने के बाद पर्वतारोहियों का वहाँ होना थोड़ा मुश्किल था।
मैंने स्पेनिश के अपने कुछ शब्द बोलकर उससे बात करने की कोशिश की; लेकिन वह न तो अंग्रेजी बोलता था और न ही फ्रेंच, इसलिए हमने कोशिश छोड़ दी। तभी उसने सामान और कपड़ों का ढेर देखा। स्टेशन के दो पुर्तगाली कर्मचारियों ने अनुवाद करने की कोशिश की, और मैंने समझाने की कोशिश की। मैं उसे पूरी सच्चाई बताना चाहता था, लेकिन इशारों और हाव-भाव से बुरी खबर सुनाना संभव नहीं था। तभी अचानक घटनाओं ने उसका सस्पेंस खत्म कर दिया। स्विस डॉक्टर के रेडियो पर घंटी बजी। उसने कहा, 'वे अब शव नीचे ला रहे हैं।' कुछ ही सेकंड बाद हेलीकॉप्टर ऊपर था और उसके नीचे, एक तार पर लटका हुआ, धीरे-धीरे घूम रहा था, एक बड़ा ठोस क्षैतिज थैला।
स्पेनिश लड़के ने ऊपर देखा और फूट-फूटकर रोने लगा। मैं उसे दिलासा देना चाहता था। पर कैसे? मैं खुद को परेशान और लाचार महसूस कर रहा था। सुन्न होकर मैंने पहाड़ पर मौजूद पुलिसकर्मी से वादा किया कि मैं अगले दिन ग्रिंडेलवाल्ड पुलिस स्टेशन जाकर बयान दूंगा।
जब मैं ट्रेन का इंतज़ार करते हुए स्टेशन मास्टर से बात कर रहा था, तो घटनाक्रम जल्द ही स्पष्ट हो गया। दोनों स्पेनिश पर्वतारोही आइगरग्लेशियर के पास एक पड़ाव के बाद उस सुबह काफी जल्दी आइगर के पश्चिमी ढलान पर चढ़ाई के लिए निकल पड़े थे। जैसे-जैसे वे चढ़ते गए, फ्रांसिस्को थकता गया और पीछे छूटने लगा, इसलिए उन्होंने फैसला किया कि जुआन कार्लोस अकेले ही आगे बढ़े जबकि फ्रांसिस्को आराम करे और फिर आइगरग्लेशियर में जुआन कार्लोस के लौटने का इंतज़ार करे। दिन बीत गया और दोपहर 3:30 बजे तक वह इतना चिंतित हो गया कि उसने नियमित हेलीकॉप्टर जांच का अनुरोध किया।

इस बीच जुआन कार्लोस चढ़ाई जारी रखे हुए था। बढ़ती गर्मी में उसने अपनी गोर-टेक्स जैकेट और ऊपरी पतलून उतारकर अपने बैकपैक के ढक्कन के नीचे रख ली। जब वह फिसलकर गिरा, तो पश्चिमी ढलान पर लुढ़कता हुआ उसका बैकपैक उभरी हुई चट्टानों में फंस गया और उसका सामान उसी हालत में बिखर गया जैसा मैंने उसे पाया था।

79

एलिसन हार्ग्रीव्स

तब तक हेलिकॉप्टर, पायलट, सहायक, गाइड, पुलिसकर्मी और डॉक्टर गायब हो चुके थे। आखिरी ट्रेन आधे घंटे में आने वाली थी। फ्रांसिस्को और मैं इंतजार करते रहे और फिर साथ में ग्रिंडेलवाल्ड के लिए रवाना हो गए।

जब मैं कैंपसाइट में दाखिल हुआ तो शाम के 7:30 बज रहे थे। मुझे स्नेह की सख्त ज़रूरत थी। वहाँ कोई नहीं था। इसलिए मैंने अपना बैग वहीं रख दिया और भारी पहाड़ी बूट पहने हुए, जो मुझे सबसे अलग दिखा रहे थे, मैं नए शौचालय की ओर चल पड़ा। वहाँ भी कोई नहीं था। मैं बच्चों के खेल के मैदान में चला गया। टॉम और केट रस्सी वाले झूले पर मग्न थे। मैं उन्हें परेशान न करने की इच्छा से, लेकिन गले लगाने की तीव्र इच्छा से, उन्हें देखने के लिए दीवार पर बैठ गया।

जेबी: मैंने एलिसन को आखिरी बार लगभग डेढ़ बजे देखा था जब वह शिखर के पास गायब हो गई थी। दोपहर के भोजन के बाद मैं बच्चों को खुले में बने स्विमिंग पूल में ले गया और उम्मीद कर रहा था कि वह ज़्यादा से ज़्यादा शाम 5 बजे तक वापस आ जाएगी। हालांकि, हमने उससे यह भी बात की थी कि अगर वह थकी हुई हो तो वह क्लीने शेइडेग में ही रुक जाएगी और सुबह नीचे आ जाएगी। चाय के बाद, मैंने बच्चों के खेलते समय हाथ-मुँह धोए और जब मैं लौटा तो एलिसन का बैग तंबू के बाहर देखकर हैरान रह गया।

टॉम ने मुझे देखा, कूदकर नीचे आया और मुझे गले लगाने के लिए दौड़ पड़ा। अपने भाई को कूदते देख केट को आश्चर्य हुआ कि इतनी हलचल किस बात की है और वह भी आकर टॉम और मेरे साथ शामिल हो गई। हम सब साथ में टेंट की ओर वापस चले गए, जेबी से मिलने के लिए।

अगले दिन जेबी, टॉम, केट और मैं, अपने मिलनसार हैंसेन-मैग्नस बेटों के साथ, अल्पीग्लन के लिए ट्रेन में सवार हुए और अपने पड़ाव स्थल पर वापस जाकर अपना बाकी सामान इकट्ठा करने में बहुत अच्छा समय बिताया, इससे पहले कि हम बारिश में जंगल के रास्ते ग्रिंडेलवाल्ड वापस चले गए।

उस दोपहर मैंने पुलिस स्टेशन जाकर अपना बयान दर्ज कराया। मैंने कुछ दिन आराम किया और स्विट्जरलैंड से होते हुए एक लंबी ड्राइव और घाटी में खूब सारा सामान खरीदने के बाद, हम एक बार फिर शैमोनिक्स लौट आए।

80

एलिसन हार्ग्रीव्स

8

चामोनिक्स अंतराल

पहाड़ों में आग लगी हुई है।

टॉम बैलार्ड, 4½

वसंत और शुरुआती गर्मियों के हिसाब से मौसम बहुत अच्छा था। लेकिन शैमोनिक्स में लोगों की भीड़ भी बहुत ज़्यादा थी। इतनी भीड़ थी कि सब कुछ हद से ज़्यादा हो गया था। कैंपसाइट पूरी तरह से भरे हुए थे और शुक्रवार को एक कैंपसाइट से कारों और कारवां की कतार सड़क पर दूर तक फैली हुई थी, जहाँ तक नज़र नहीं जा रही थी। धीरे-धीरे रॉक क्लाइंबिंग की ओर लौटते हुए, हमने घाटी की चट्टानों का दौरा किया और एक पार्किंग स्थल से दूसरे पार्किंग स्थल पर जाते हुए, शांतिपूर्वक भीड़ से बचते हुए पैसे भी बचाए।

पेटिट ड्रू के उत्तरी हिस्से पर दोपहर बाद तक बहुत कम धूप पड़ती है और वह हठपूर्वक बर्फ और हिम से ढका रहता है। निशे हिमक्षेत्र कम नहीं हो रहा था और बर्फ अभी भी इतनी नीचे तक आ गई थी कि कुछ प्रमुख चट्टानी ढलानों को ढक लिया था।

लेस हाउचेस में मौसम का पूर्वानुमान देखते समय हमारी मुलाकात स्कॉटलैंड में स्की उपकरण के कारोबार में मेरे अच्छे दोस्त इयान 'स्पाइक' साइक्स से हुई। उनकी कार कहीं खो गई थी और हमने उसे ढूंढने में उनकी मदद की। अंकल पाइक के अचानक आने से बच्चे बेहद खुश थे और उनकी खुशी तब और बढ़ गई जब उन्होंने उन्हें चिप्स और आइसक्रीम खिलाने की पेशकश की, जो उन्होंने लगभग पांच महीनों से नहीं खाई थी! जब स्पाइक हमें रात के लिए तय जगह (गैलार्ड्स के नीचे एक पार्किंग) तक वापस ले जा रहे थे और शैमोनिक्स की मुश्किलों से निपट रहे थे, तो हम उन्हें रिवर्स गियर की सुविधा के बारे में चिढ़ाकर उनका ध्यान भटका रहे थे। हम घाटी के फलों का भरपूर आनंद ले रहे थे, सचमुच, लेस हाउचेस में चट्टान के पीछे जंगली बिलबेरी और घाटी में जंगली रसभरी तोड़ रहे थे।

लेस बोइस के जंगल। अब मेरे लिए कुछ क्लासिक अल्पाइन रॉक रूट्स पर चढ़ाई करने का समय था ताकि अगली बड़ी चढ़ाई के लिए मैं खुद को तैयार कर सकूं। घाटी में इतनी भीड़भाड़ होने के कारण, हमने पहाड़ों में और ऊपर जाने का फैसला किया ताकि टॉम और केट को पहली बार रात में खुले में रात बिताने का अनुभव मिल सके।

जैसा कि इसे करने वाले हर व्यक्ति को पता है, एक रात के लिए बाहर जाने में उतना ही सामान चाहिए होता है जितना छह रातों के लिए बाहर जाने में!

दुर्भाग्यवश, बच्चों के साथ यात्रा करते समय आवश्यक मात्राएँ एक समान नहीं होतीं; दो बच्चों के साथ एक रात के लिए शिविर लगाना छह लोगों के लिए सामान ढोने जैसा लगता है!

पहाड़ों में रात बिताने के लिए सामान कम करना नामुमकिन था। बच्चों और हमें, दोनों को गर्म रहना था। सबसे पहले, हर किसी को एक स्लीपिंग बैग चाहिए था, वो भी अच्छी तरह से भरा हुआ, और कंप्रेस करने के बाद भी उसका वजन लगभग एक बैग के बराबर था! हमने तय किया कि हम एक-एक बच्चे को बिवाक बैग में सुलाएंगे, और दो गोर-टेक्स बिवाक बैग भरने के बाद, खाने की योजना बनाने का समय आ गया। आम तौर पर बिवाक में मैं खाने के मामले में काफी मितव्ययी रहता हूँ, क्योंकि मैं ज्यादा वजन नहीं उठाना चाहता, यह जानते हुए कि घाटी में कुछ खाने को मिल जाएगा और मैं आसानी से गुजारा कर लूंगा। लेकिन बच्चों के साथ मामला अलग था; टॉम और केट को अच्छे से खाना चाहिए था, और इतनी ऊंचाई और ठंड में तो और भी

ज्यादा; हमें ढेर सारा खाना ले जाना था।
दो दिन और दो रातों के खाने का हिसाब लगाते-लगाते सामान का ढेर बढ़ता चला गया! बिस्कुट, अंडे, दूध, अनाज, हॉट चॉकलेट, चीनी, अतिरिक्त कपड़े, अतिरिक्त डायपर; जो भी सोच सकते हैं, सब कुछ हम ले गए। हमारे बड़े-बड़े थैले और हैंडबैग चोरी हो जाने के बाद, हमारे पास कुछ छोटे थैले ही बचे थे, और केट को भी साथ ले जाना था, इसलिए यह सफर काफी मुश्किल भरा होने वाला था!
रात-सुबह की बारिश के बाद, हमने ज़रूरत से ज़्यादा खाना और सामान पैक किया और ला फ्लेगेरे जाने वाली केबल कार पकड़कर आइगुइल्स रूज पर्वतमाला की ओर चल पड़े। जेबी और मैं सामान के बोझ से जूझ रहे थे, इसलिए केटी धीरे-धीरे उनके बगल में चल रही थी, जबकि टॉम एक फ्रांसीसी लड़के और उसके पिता के साथ दूर निकल गया, और फिर लेक ब्लैंक पर ही दिखाई दिया। एक सुरक्षित और सुंदर जगह ढूंढकर, हमने टॉम और केट को उनके सारे अतिरिक्त कपड़े पहनाए, उन्हें डाउन स्लीपिंग बैग और बिवाक बैग में डाला और कड़ाके की ठंड में रात बिताने के लिए वहीं रुक गए।
हम भोर होते ही उठ गए ताकि सूर्य की किरणें मोंट ब्लैंक पर पड़ते देख सकें। कड़ाके की ठंड के कारण हमारे कैंप बैगों पर बर्फ की एक परत जम गई थी, लेकिन उसके बाद आई बेहद खूबसूरत धूप वाली सुबह में बच्चे बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़ों पर खेलते रहे, जबकि मैं कुछ बारीक काम करने के लिए गायब हो गया।
82
एक कठिन दिन की गर्मी
मैंने एगुइल डे ला पर्सिवरेंस (2901 मीटर) के दक्षिणी अरेट इंटीग्रल पर रॉक क्लाइम्बिंग की, फिर पश्चिमी अरेट से नीचे उतरा और एगुइल डेस चामोइक्स (2902 मीटर) की पूर्वी रिज तक चढ़ाई की। पुरानी बर्फीली घाटियों से तेजी से नीचे उतरते हुए मैं जल्द ही परिवार के पास वापस आ गया।
अगले दिन सुबह बादल छाए हुए थे। आराम से नाश्ता करने के बाद हमने लेक ब्लैंक के किनारों का भ्रमण किया, और नीचे उतरते समय मैंने एगुइल डे ल'इंडेक्स (2595 मीटर) के दक्षिण-पूर्वी एरेट पर चढ़ाई की, जिसके बाद हम वापस ला फ्लेगेरे और पर्किन्स की ओर उतर गए।
सप्ताह के बाकी दिन भी मौसम अस्थिर रहा, दोपहर और/या सुबह के समय भीषण गर्मी पड़ती थी, जिसके बाद अक्सर बारिश या तूफान आ जाता था। मैं अब भी ड्रू पर्वत के उत्तरी भाग पर चढ़ाई करने के लिए उत्सुक था, लेकिन मुझे डर था कि ये बारिशें निचली छायादार चट्टानों की दरारों से बर्फ हटाने में मदद नहीं करेंगी।
मैं लेस गैलैंड्स की चट्टानों पर अपनी फिटनेस बनाए रखता था। अब तक टॉम और केट चढ़ाई करने में काफी माहिर हो चुके थे। तल के पास जहाँ भी बोल्ट लगे होते, वे अलग-अलग चौड़ाई, रंग और लंबाई की रस्सियाँ उधार लेकर हार्नेस बनाते, फिर कुछ काराबिनर लगाकर चढ़ाई शुरू कर देते। टॉम के लिए सबसे बढ़िया रास्ता यह था कि वह कई रस्सियों को आपस में जोड़कर बोल्ट से जोड़ दे, ऊपर एक काराबिनर लगाए और दूसरा सिरा नीचे उससे जोड़ दे। उछल-कूद करके और अपने पैरों को ज़मीन से ऊपर उठाकर वह कुछ हद तक रस्सियों पर चढ़ता और कुछ

हद तक हवा में लटकता रहता था - बहुत मज़ेदार, लेकिन नैतिकता के लिहाज़ से थोड़ा संदिग्ध! दूसरे जोड़ीदार पर्वतारोहियों की नकल करते हुए, वे नीचे से रस्सी देकर मेरी 'मदद' करने के लिए काफी उत्सुक रहते थे, लेकिन चूंकि वे आमतौर पर तीस सेकंड के भीतर ही अपना ध्यान खो देते थे और फिर रस्सी को नीचे खींचने लगते थे, इसलिए मैंने उन्हें ऐसा करने से मना कर दिया! अगर छोटे-छोटे पत्थर होते तो उन्हें बोल्डरिंग की नकल करना बहुत पसंद होता। केट का ज़रूरत से ज़्यादा उत्साह और निडरता मुझे, एक अति-सुरक्षात्मक माँ होने के नाते, बहुत चिंतित कर देती थी! लेकिन अगर उनके पास खेलने के लिए उपकरण होते, जिनमें कभी-कभार बड़े-बड़े पहाड़ी जूते और क्रैम्पोन के साथ प्रयोग करना भी शामिल था, तो उनकी खनक और रंग सब मिलकर वास्तविकता का एहसास दिलाते थे। मैं अक्सर लंबी दौड़ या चढ़ाई से लौटती और केट बेफिक्री से पूछती, "क्या आप पहाड़ों पर गई थीं?", और जब मैं हाँ कहती, तो वह पूछती, "कौन सा?" और मैं इशारा कर देती, भले ही उसे कुछ पता न होता!

कुछ दिनों बाद, स्टीव और एलेक्स हॉलैंड नाम के कुछ दोस्त यूके से आ गए। शैमोनिक्स में उमस और गर्मी बहुत ज़्यादा थी, वे आराम करने आए थे और उन्हें वहाँ आराम नहीं मिलने वाला था। हमने गर्मियों की गतिविधियों के किस्से सुनाए और आगे की योजना बनाई। टॉम और केट बहुत खुश थे; दादा-दादी ने उन्हें गर्व महसूस कराया था, और जैसे ही स्टीव और एलेक्स ने अपना सामान खोला, एक बैग में ढेर सारी नई चीज़ें निकलीं।

83

एलिसन हार्ग्रीव्स

उन दोनों के लिए रेगिस्तानी बूट, नए सैंडल और नए वेलिंगटन बूट, रंग भरने वाली किताबें और क्रेयॉन, दादी माँ की बुनाई का बढ़िया सामान, और चादरों और तौलियों का अतिरिक्त स्टॉक! तो सब खुश थे। कल हम इस अफरा-तफरी से निकलेंगे। शैमोनिक्स हमारा मिलन स्थल था, लेकिन यह सिर्फ एक पड़ाव था, शनिवार को हम इटली के स्वादिष्ट व्यंजनों और आइसक्रीम का आनंद लेने के लिए दक्षिण की ओर रवाना होंगे!

84

9

पिज़ बैडीले – 3308 मीटर -

एक शानदार चढ़ाई त्रासदी से धूमिल हो गई।

रिचर्ड कैसिन

बोंडो और प्रोमोंटो के बीच पुरानी सड़क से पिज़ बैडिली की घुमावदार उत्तरी रिज और शानदार उत्तरी ढलान साफ़ दिखाई देती है। एक नई, खूबसूरती से निर्मित सड़क का निर्माण कार्य अभी पूरा हो रहा है, जो इन गांवों को पूरी तरह से बाईपास कर देगी और इन्हें घूमने के लिए और भी सुखद बना देगी। पिज़ बैडिली नाम का अर्थ है पर्वतीय फावड़ा, और वास्तव में पूरी उत्तरी ढलान एक विशाल फावड़े के ब्लेड की तरह दिखती है, शिखर वह जगह है जहाँ हैंडल होना चाहिए! पिज़ बैडिली (जिसे तब सीमा डी त्सिंगेल कहा जाता था) पर पहली चढ़ाई 1867 में डब्ल्यू.ए.बी. कूलिज ने फ्रांकोइस और हेनरी देवौआसौद के साथ मिलकर की थी। उन्होंने उस मार्ग से चढ़ाई की जो अब सैन मैरिनो के ऊपर मासीनो के स्नानगृह से दक्षिण मुख से उतरने का

मार्ग है। 1892 में क्रिश्चियन क्लकर ने स्पष्ट और आकर्षक उत्तरी रिज पर अकेले चढ़ाई का प्रयास किया। इसके बाद रिज पर कई प्रयास हुए, जिनमें से कुछ में संदिग्ध तकनीकों का इस्तेमाल किया गया, जब तक कि अंततः 1923 में वाल्टर रिश और अल्फ्रेड ज़ुर्चर (जिन्होंने आगे चलकर आइगर के उत्तरी मुख पर लौपर मार्ग की पहली चढ़ाई की) ने इस पर चढ़ाई नहीं कर ली।

पिज़ बैडिली का अब तक अछूता उत्तरी चेहरा अब चुनौती का इंतज़ार कर रहा था। 1937 तक कई इतालवी दल इस चुनौती को स्वीकार करने की कोशिश करते रहे, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। उसी साल जुलाई में महान रिकार्डो कैसिन (ग्रैंड्स जोरासेस के वॉकर स्पर पर पहली चढ़ाई करने वाले), गिनो एस्पोसिटो और विटोरियो रत्ती सियोरा हट में रुके हुए थे और इलाके के कुख्यात तूफानों के शांत होने का इंतज़ार कर रहे थे। हट के बाहरी शौचालय में एक प्रतिद्वंद्वी जोड़ी, मारियो मोल्टेनी और ग्यूसेप्पे वाल्सेची, शरण लिए हुए थे। आखिरकार, दोनों टीमों ने चढ़ाई शुरू की, लेकिन दोनों ने अलग-अलग समय पर शुरुआत की। उन्होंने चढ़ाई की...

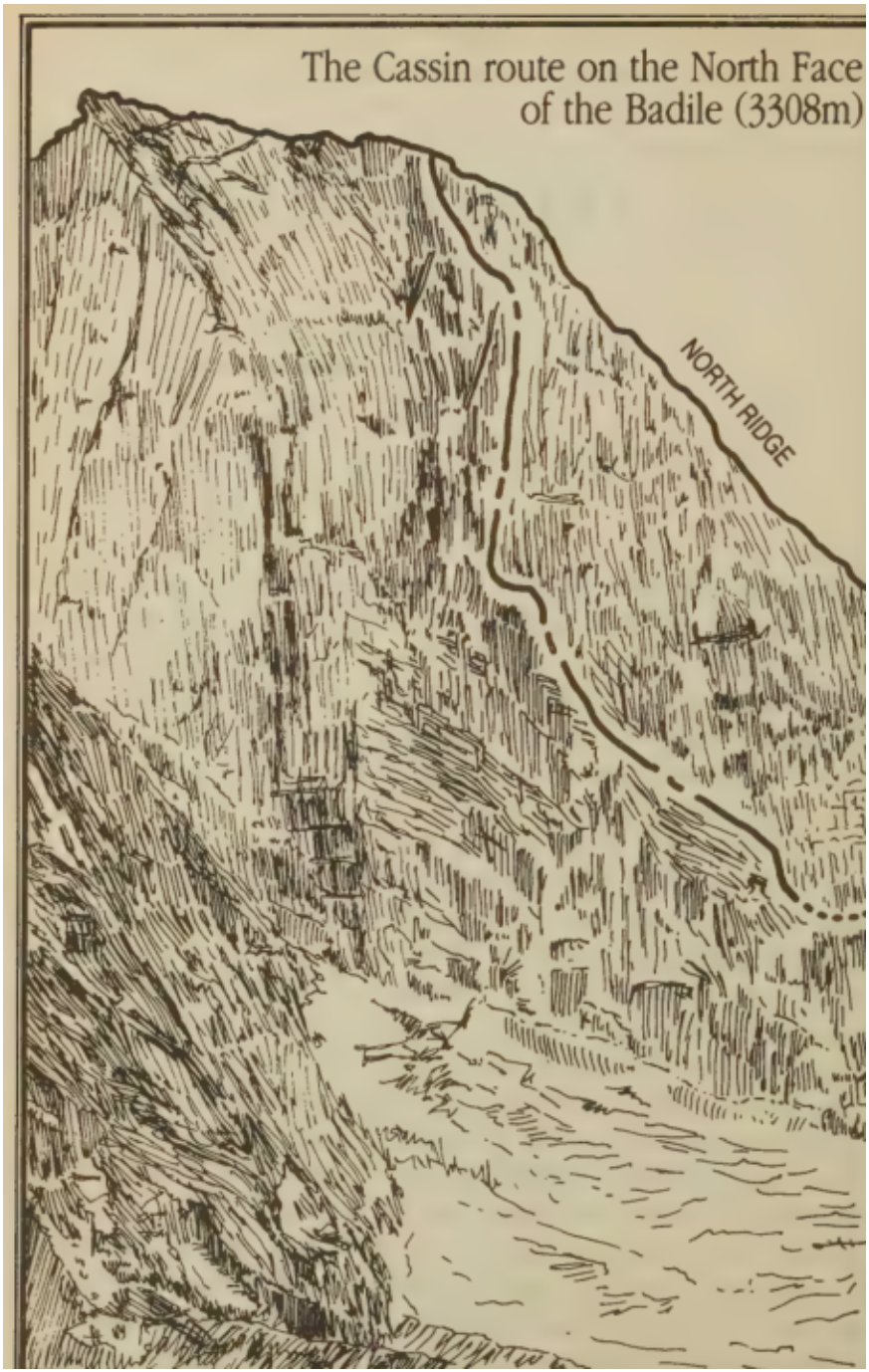

एक कठिन दिन की गर्मी

दिनभर लगातार काम चलता रहा और जब कैसिन और उनके साथी अपना पड़ाव लगा रहे थे, तभी मोल्टेनी और वाल्सेची भी उनके साथ शामिल हो गए।

अगली सुबह मोल्टेनी ने पूछा कि क्या वे पाँच लोगों की रस्सी से बंधी टीम के रूप में चढ़ाई कर सकते हैं। कैसिन अनिच्छा से सहमत हो गया और वे चढ़ाई पर निकल पड़े। उनका दिन कठिन था और थकी हुई टीम ने रात 9 बजे अपना दूसरा पड़ाव तैयार करना शुरू किया। मौसम बिगड़ता जा रहा था और कैसिन को मोल्टेनी और वाल्सेची की शारीरिक क्षमता की चिंता सता रही थी। एक भयंकर तूफान आ गया और जल्द ही वे सब पूरी तरह भीग गए। तूफान थम गया, आसमान साफ हो गया और तापमान गिर गया। सुबह तक उन्हें आगे चढ़ाई करनी पड़ी, कम से कम खुद को गर्म करने के लिए। उन्हें चढ़ाई कठिन लगी और कुछ घंटों बाद मोल्टेनी और वाल्सेची को साथ चलने में कठिनाई होने लगी और उन्हें लगातार सहायता की आवश्यकता पड़ने लगी। कहने की जरूरत नहीं है कि मौसम और बिगड़ने लगा और दोपहर के भोजन तक बारिश शुरू हो गई। तापमान गिरने लगा। कैसिन ने आगे जो हुआ उसका वर्णन किया: 'बारिश ओलों में बदल गई: हमारे चेहरे ओलों से टकरा रहे थे, जबकि बर्फीली हवा ने हमारे भीगे हुए हाथों और पैरों को जमा दिया।'

अचानक ओले गिरने बंद हो गए और बर्फ़बारी शुरू हो गई, जिससे पूरा इलाका बर्फ़ से ढक गया। हमें हर हाल में शिखर तक पहुंचना था: ऐसी परिस्थितियों में शिखर पर रात बिताना हम सबके लिए घातक साबित हो सकता था।

वे शाम 4 बजे शिखर पर पहुँच गए, लेकिन असली संघर्ष तो अभी शुरू ही हुआ था। 'बिजली हमारे चारों ओर कड़क रही थी और हम बर्फ से सफेद पड़ गए थे।' इससे भी बुरी बात यह थी कि मोल्टेनी और वाल्सेची की हालत तेजी से बिगड़ रही थी।

हमने मौत को टालने के लिए हर संभव प्रयास किया: हमने मोल्टेनी के होठों पर अपनी सारी कॉन्यैक उड़ेल दी; जब उसमें आगे बढ़ने की ताकत नहीं बची, तो मैंने उसे सहारा देने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। बिना किसी आह के वह ज़मीन पर गिर पड़ा, फिर कभी नहीं उठा।

हम एक पल के लिए मौन में रुक गए। हमारी अंतरात्मा ने हमें मजबूर किया कि हम बेचारे मोल्टेनी के अवशेषों को अपने साथ ले जाएं और एक क्षण के लिए, भावना ने तर्क पर विजय प्राप्त कर ली: मैंने उसे अपने कंधों पर लादकर नीचे जाने की कोशिश की, लेकिन उन बेकाबू हवाओं में यह असंभव सा लग रहा था। मेरी मदद के लिए रुके एस्पोसिटो की सलाह पर, मैंने शव को एक बड़े पत्थर के पास रख दिया, ताकि वह तूफान से थोड़ा सुरक्षित रहे।

फिर हम रत्ती और वाल्सेची से मिले, जिन्हें इस त्रासदी की कोई जानकारी नहीं थी। हमने वाल्सेची से कुछ नहीं कहा, ताकि उनकी दयनीय स्थिति में उन्हें और अधिक परेशान न करें। लेकिन जब एक अप्रत्याशित बाधा ने रास्ता रोक दिया और हम सब एक साथ जमा हो गए, तो वाल्सेची ने मोल्टेनी को ढूंढना शुरू किया और उसे न देखकर समझ गए कि क्या हुआ होगा।

87

एलिसन हार्ग्रीव्स

एक चट्टान के पास खड़े होकर वह चुपचाप रो रहा था। अचानक, वह ज़मीन पर गिर पड़ा। हमने उसे उठाने की व्यर्थ कोशिश की, उसे उस सुन्नता से बाहर निकालने की कोशिश की जिसने उसे घेर लिया था, लेकिन वह भी बिना कुछ कहे हमारी बाहों में बेजान पड़ा रह गया।

बचे हुए लोगों के पास अपने तीसरे पड़ाव को सहने और सुबह वाल्सेची के शव को पहाड़ से नीचे

ले जाने के अलावा और कोई चारा नहीं था।
हम बावन घंटे से उस चट्टान पर थे, चौंतीस घंटे चढ़ाई करते रहे और बारह घंटे तक तूफान ने लगातार हमें बुरी तरह से प्रभावित किया। अगले दिन हम बचाव दल के साथ बैडीले पर्वत पर वापस गए, जो घाटी से हमारे दोस्तों के शवों को निकालने के लिए आया था।
क्या शानदार चढ़ाई थी, क्या हालात थे! कैसिन और उनकी टीम ने जिस तरह से अपने दिवंगत साथियों का साथ दिया और उनके अवशेषों को बरामद करवाया, उसके लिए हम सभी को प्रशंसा व्यक्त करनी चाहिए। आधुनिक पेशेवर पर्वतारोही अतीत के उस्तादों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।
खराब मौसम में, दो भयानक पड़ावों के साथ, गैस्टन रेबुफ़ैट और बर्नार्ड पियरे ने 1949 में दूसरी चढ़ाई की। इस चढ़ाई ने एक क्लासिक के रूप में अपनी पहचान बनाई। दुनिया भर के पर्वतारोही शानदार ग्रेनाइट शिलाओं और चढ़ाई की चुनौतीपूर्ण प्रकृति से आकर्षित हुए।
1952 में, अपनी पीढ़ी के सबसे प्रतिभाशाली पर्वतारोही और सर्वकालिक महानतम पर्वतारोहियों में से एक, हरमन बुहल साइकिल से बोंडो पहुंचे और फिर सीधे पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। उन्होंने लिखा, 'मैं रेंगता हुआ, हांफता हुआ और खुद को सहारा देते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया।' उन्होंने मात्र साढ़े चार घंटे में अकेले ही यह चढ़ाई पूरी कर ली। पर्वतारोहण जगत दंग रह गया!
इस क्षेत्र में शीतकालीन पर्वतारोहण एक दुर्लभ और अनमोल अनुभव है। दिसंबर 1967 में, मिशेल डारबेले, जिन्होंने आइगर पर्वत पर 1938 के मार्ग पर पहली एकल चढ़ाई की थी, डेनियल ट्रॉयलेट और कैमिला बोर्निसन के साथ स्विट्जरलैंड से इटली की टीम के साथ पहुंचे, जिसमें एलेसांद्रो गोगना (ग्रैंड्स जोरासेस पर वॉकर स्पर की पहली एकल चढ़ाई), पाओलो अरमांडो और जियानी कैल्काग्नो शामिल थे। उन्होंने मिलकर पर्वत के तल पर स्थित एक बर्फ की गुफा से रस्सियाँ बाँधीं, मौसम ठीक होने पर क्रिसमस के लिए घर चले गए और 29 दिसंबर को अपना अधूरा काम पूरा करने के लिए वापस लौटे। उन्होंने आगे बढ़ते हुए 2 जनवरी, 1968 को शिखर पर पहुँच गए। वर्षों से पर्वत पर और भी चट्टानी मार्ग बनाए गए हैं, जिससे अच्छे मौसम में अब दर्जनों स्थानों पर चढ़ाई की जा सकती है। लेकिन पर्वत के नीचे स्थित छोटा सा ग्लेशियर अभी भी एक चुनौती बना हुआ है।
88
एक कठिन दिन की गर्मी
ढलान इतनी सूख गई है कि यह लगभग अगम्य है और उत्तरी ढलान और इसकी चढ़ाई के लिए उत्तरी रिज के निचले हिस्से से ही आगे बढ़ना पड़ता है।
ब्रेगाग्लिया क्षेत्र के बारे में मेरा ज्ञान बहुत कम था। मैंने पिज़ बैडिली के बारे में केवल सुना था और पत्रिकाओं में उसकी तस्वीरें ही देखी थीं, इसलिए मुझे यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि वहां क्या देखने को मिलेगा। शानदार नॉर्थ रिज पर हुई उस महान और बेहतरीन चढ़ाई को सत्तर साल हो चुके थे और अब मैं नॉर्थ फेस के महान क्लासिक मार्ग - कैसिन रूट - पर अकेले चढ़ाई करने की उम्मीद कर रहा था।
दक्षिणी ब्रेगाग्लिया के छोटे से गाँव बोंडो का शिविर स्थल शैमोनिक्स से बिलकुल अलग था। यह एक बड़ा समतल मैदान था, जिसके एक कोने में मोबाइल शौचालय और एक तरफ पानी की

नाली थी। उन्होंने हमें बताया कि सर्दियों में इस मैदान में पानी भरकर स्थानीय लोगों के लिए स्केटिंग रिंक बनाया जाता था। हालाँकि सुविधाएँ बहुत ही साधारण थीं, शिविर स्थल साफ-सुथरा और स्वास्थ्यवर्धक था, और शैमोनिक्स के व्यस्त मौसम के बाद बोंडो का यह शांत गाँव बेहद रमणीय था। हम स्थानीय सहकारी समिति से ताज़ा दूध, दही, अंडे और पनीर ले सकते थे, वह जगह इतनी साफ थी कि आप ज़मीन पर बैठकर भी खा सकते थे, और हम ऊपर ग्लेशियरों से नीचे गिरती बर्फीली नदी में तैर और नहा सकते थे।

हमारे लिए एक और फर्क यह था कि हमारा पारिवारिक कैंपिंग यूनिट सौ प्रतिशत बड़ा हो गया था! शैमोनी से हमारे साथ आए स्टीव और एलेक्स की अच्छी संगति के साथ-साथ, हमें स्पाइक और उसके एक पुराने स्कॉटिश दोस्त इयान 'सड्स' सदरलैंड से दोबारा मिलकर बहुत खुशी हुई। वे मैटर-हॉर्न पर चढ़ाई करने से पहले एक वार्म-अप रॉक रूट करने के लिए ब्रेगाग्लिया आए थे। शाम को पास्ता खाते हुए उनके साथ मौसम के पूर्वानुमान और अगले दिन की अपनी-अपनी योजनाओं पर चर्चा करना बहुत अच्छा लगा।

मैं दोपहर में दौड़ने के लिए निकला ताकि पिज़ बैडिली के उत्तरी हिस्से को करीब से देख सकूँ। धूप वाला दिन अचानक मूसलाधार तूफान में बदल गया, और जैसे-जैसे मैं ऊपर की ओर दौड़ता गया, मुझे पाँच झरनों के अविश्वसनीय दृश्य दिखाई दिए जो प्रभावशाली सफेद स्तंभों की तरह पहाड़ से नीचे गिर रहे थे।

मैंने अगले दिन पहाड़ की चोटी तक जाने का फैसला किया, लेकिन मुझे समझ आ गया कि बच्चों को वहाँ ले जाना ठीक नहीं होगा। स्टीव मेरे साथ सियोरा हट तक आया, जहाँ हमारी मुलाकात स्पाइक और सड्स से हुई, जो फ्लैट आयरन पर एक शानदार दिन की चढ़ाई करके लौटे थे।

हिमनदी के झरने के प्रचुर जल स्रोत के पास अपने तंबू लगाने के बाद, मैं चट्टानों से भरी ढलान को पार करके वहाँ के वातावरण का अंदाजा लगाने के लिए निकल पड़ा।

उत्तरी ढलान की ओर बढ़ते हुए। जैसे ही मैं चट्टानों को पार करते हुए और उनके चारों ओर घूमते हुए ढलान के नीचे स्थित ग्लेशियर की ओर बढ़ा, मुझे उफनती हुई पिघली हुई पानी की धारा के किनारे डेरा डाले हुए तीन जंगली से दिखने वाले चेक लोग मिले। उन्होंने गर्व से बताया कि वे उत्तरी ढलान से लौटने वाले अपने दो दोस्तों का इंतजार कर रहे हैं और उन्होंने मुझे क्षितिज पर स्थित एक दर्रे के दाईं ओर एक चट्टान पर डेरा डाले हुए पर्वतारोहियों को देखने के लिए अपनी दूरबीन उधार दी।

कल के लिए मौसम का पूर्वानुमान अच्छा था और परसों के लिए खराब, इसलिए मैंने स्टीव के साथ मूल योजना के अनुसार प्रशिक्षण मार्ग पर जाने के बजाय अगले दिन जाने पर विचार करना शुरू कर दिया। स्टीव इस बारे में उदार थे। उन्होंने कहा कि मेरी चढ़ाई पहले होनी चाहिए।

गुरुवार, 10 अगस्त

मुझे अच्छी नींद नहीं आई। टेंट ढलान पर था, मौसम का मुझे ठीक से पता नहीं था और ग्रेनाइट की चट्टानों पर चढ़ने की मेरी तकनीक भी कुछ खास अच्छी नहीं थी। हालाँकि मैंने बिग थ्री पर अकेले चढ़ाई की थी, लेकिन अभी तक मैंने किसी लंबी और बड़ी चट्टानी चढ़ाई अकेले नहीं की थी।

सुबह के 6 बज रहे थे और आसमान साफ हो रहा था। मैं स्लीपिंग बैग से कूदकर निकला और मौसम स्टेशन देखने के लिए सियोरा हट की ओर भागा। दबाव स्थिर था। कल का पूर्वानुमान और भी बेहतर था - लेकिन अगर बदल गया तो?

मैं जल्दी से वापस एमएसआर स्टोव के पास गया और नाश्ते के दौरान स्टीव और मैंने मौसम पर चर्चा की। मैंने जाने का फैसला किया। जितनी तेज़ी से हो सके, मैं उत्तरी रिज से नीचे की ओर जाने वाली पहाड़ी की ओर चल पड़ा।

सुबह 8:30 बजे तक मैं दर्रे पर पहुँच गया था और पसीने से भीगी हुई अपनी शॉर्ट्स और टी-शर्ट को सूखी टी-शर्ट और ट्राउजर से बदल रहा था। फिर, अपना स्लीपिंग बैग, खाना और स्की पोल एक बड़े पत्थर के नीचे छोड़कर मैं चल पड़ा।

जब मैं पहुंचा, तो स्पाइक और सड्स, सियोरा हट में एक आरामदायक रात बिताने के बाद, चट्टानी जूते पहन रहे थे। मैंने भी ऐसा ही किया और उनके पीछे-पीछे चढ़ाई के पहले आसान हिस्से से होते हुए उत्तरी रिज के आधार पर स्थित एक दर्रे तक गया।

हमने बातचीत की और तस्वीरें एक-दूसरे को दिखाईं। फिर अलविदा कहकर मैं एक ढलान से नीचे उतरकर उत्तरी ढलान की शुरुआत की ओर बढ़ा। सबसे पहले मुझे सर्दियों के बाद चट्टान पर जमी बर्फ के एक बड़े ढेर को पार करना था। मेरी समस्या यह थी कि चिकने तले वाले रॉक बूट पहनकर उससे नीचे कैसे उतरूँ।

और वह भी सिर्फ एक हल्की बर्फ काटने वाली कुल्हाड़ी से। बर्फ के ढेर के पीछे बर्फ चट्टान से पिघलकर अलग हो गई थी, जिससे एक बड़ा अंतर बन गया था। बर्फ के ढेर का ऊपरी हिस्सा चट्टान से काफी दूर था और लटका हुआ था।

एक कठिन दिन की गर्मी

मैंने बर्फ की कुल्हाड़ी को उसके बाहरी किनारे पर गाड़ दिया और सावधानी से चट्टान की ओर पीठ करके दूसरी तरफ खाई में उतर गया। चट्टानी जूतों में बर्फ में पैर जमाना आसान नहीं था, जब तक कि मैं दूसरी तरफ की चट्टान तक न पहुँच जाऊँ। तभी एक पैर जमाने की जगह टूट गई और बर्फ की कुल्हाड़ी से फैली हुई बाहों के भार से फिसलते हुए, मेरी छाती कुल्हाड़ी के शाफ्ट पर लगे नुकीले हिस्से से टकरा गई। हताशा में, मैंने फिर से बर्फ में पैर मारे, खुद को खाई में गिरने से बचाया, जिसकी गहराई का मुझे अंदाजा नहीं था, और आखिरकार चट्टान पर चढ़ गया। कांपते और दर्द से कराहते हुए, मैंने अपने जूते सुखाए और लड़खड़ाते हुए रैंप के बाकी हिस्से पर पहुंचा, एक कुल्हाड़ी साथ ले जाने के लिए आभारी था लेकिन बर्फ के औजारों और क्रैम्पोन की एक जोड़ी न होने पर कोस रहा था!

आसान दरारों से होते हुए पहले डायड्रे के आधार तक पहुँचे। कुछ आइसोस्टार और फ्रूस्ली पी। फिर, सुबह 10:00 बजे के काफी बाद, जाने का समय हो गया।

मैंने मार्ग का विवरण निकाला और यह समझने की कोशिश की कि ऊपर दिए गए कोनों में से मुझे ठीक किस कोने पर चढ़ना है। गाइड ने 'अच्छी तरह से खूंटियों से चिह्नित खुली किताब जैसी चढ़ाई' के बारे में बताया था। मुझे वह रास्ता दिख रहा था जो मुझे सही लग रहा था, लेकिन मुझे कोई खूंटी नहीं दिख रही थी! मैंने चट्टान पर बने खांचों और कोनों को गिना और उन्हें अपने हाथ में मौजूद मार्ग विवरण से मिलाकर यह तय किया कि यही सही रास्ता है।

नीचे से देखने पर यह अटपटा और मुश्किल लग रहा था, लेकिन एक बार जम जाने के बाद, मुझे चट्टान की ठोस पकड़ का आनंद आने लगा क्योंकि मैंने हाथों और उंगलियों से दरार को पकड़ते हुए, पैरों के लिए मजबूत सहारे का इस्तेमाल किया। यहाँ से रास्ता तिरछे बाईं ओर ऊपर की ओर पतली, ठोस दरारों से होते हुए एक और दरार तक जाता था।

यहाँ मेरी मुलाकात उस दल से हुई जिससे मुझे उस दिन आगे बढ़ना था, वे धीरे-धीरे दूसरी चट्टान के ऊपर अपना रास्ता बना रहे थे। एक पल रुककर मैंने आगे बढ़ने के तरीके सोचे, तभी चट्टान मेरे ऊपर लटकी हुई थी और नीचे से कटी हुई थी। मैं लड़खड़ाते हुए बाईं ओर, फिर ऊपर की ओर बढ़ा, और इस तरह चेक टीम की ओर बढ़ा, जिन्होंने पुराने ज़माने के लाल नायलॉन के रेनकोट पहने हुए थे। वे मेरे आने पर बहुत खुश हुए और उनकी बधाई और दोस्ती की गर्मजोशी से उत्साहित होकर, मैं ऊपर की नाजुक चट्टानों पर चढ़ गया।

एक बार फिर मैं एक और दल के पीछे था, इस बार एक लड़का और एक लड़की, जिन्हें मैंने कल शिविर स्थल पर देखा था। उनका स्वागत कुछ खास अच्छा नहीं था और मैंने उनके नेता के अगले पड़ाव के बाद सुरक्षित होने का कुछ देर इंतजार किया। मैंने 'माफ़ कीजिए' कहा और आगे बढ़ गया। जब मैं उस जगह पहुँचा जहाँ मुझे लगा कि कैसिन और उनके दल का कोई पड़ाव होगा, तो मैंने एक बार फिर अपने मार्ग का विवरण देखा। फिर, सुखद सपाट दरारों पर चलते हुए, मैं एक बार फिर ऊपर और बाईं ओर चढ़कर उस जगह पहुँचा जिसे स्नोपैच कहा जाता था। पहाड़ के मध्य भाग में स्थित यह संरचना शुष्क गर्मियों और कम सर्दियों के कारण वर्षों से धीरे-धीरे कम होती जा रही थी और अब केवल पाले से टूटी हुई बर्फ के ढीले ढेर के रूप में ही दिखाई दे रही

थी।
91
एलिसन हार्ग्रीव्स
चट्टानें। मेरे बाईं ओर दूर मुझे पत्थर गिरने की सरसराहट और फिर उसके गिरने की तेज़ आवाज़ सुनाई दी, और मैं एक पल के लिए रुका ताकि यह सुनिश्चित कर सकूं कि कोई पत्थर मेरी ओर तो नहीं आ रहा है।
बर्फ के टीले के ऊपर चट्टान खड़ी हो जाती है, एक सपाट ढलान एक खड़ी कोने, एक चिमनी और एक दरार में जाकर खत्म होती है। मेरे ऊपर दो और पर्वतारोहण दल थे, दो लोग अभी-अभी ऊपरी दरार पर चढ़ना शुरू ही कर रहे थे और जल्द ही नज़र से ओझल हो जाएंगे, लेकिन उनके नीचे तीन लोगों का एक दल था जो मुश्किल में लग रहा था। एक उपयुक्त जगह ढूंढकर, मैंने अपना बैग उतारा और बैठकर पानी पिया और आगे क्या होने वाला है, इस पर विचार करने लगा।
लीडर चढ़ाई पूरी कर चुका था और चिमनी के ऊपर उसे बेले से बांध दिया गया था। उसका दूसरा साथी चिमनी के चारों ओर के खड़ी ढलान वाले हिस्से में प्रवेश करने ही वाला था और तीसरा साथी चढ़ाई शुरू करने वाला था। मुझे उम्मीद थी कि ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा। लेकिन जैसे ही दूसरा साथी छटपटाने, कराहने और चिल्लाने लगा, यह स्पष्ट हो गया कि वह खुश नहीं था; हालाँकि उसकी गतिविधि की गति तेज़ थी, लेकिन उसकी प्रगति ऊपर की ओर बहुत धीमी थी और उसका साथी थोड़ा शर्मिंदा लग रहा था! बहुत चिल्लाहट, बहुत इंतज़ार (लगभग एक घंटे तक) के बाद आखिरकार वह बाहर निकला और ऊपर चढ़ गया, संभवतः वह खुद को और अपने बैग को चिमनी में फंसा बैठा था और उसे अपनी समस्या से उबरने का कोई तरीका निकालना पड़ा था।
मैंने तब तक इंतज़ार किया जब तक तीसरा आदमी चिमनी से पूरी तरह दूर नहीं हो गया और फिर मैंने खुद चढ़ाई शुरू कर दी। खड़ी लेकिन चुनौतीपूर्ण दरार चढ़ाई ने मुझे डर्बीशायर के फ्रॉगैट के ग्रिटस्टोन किनारे पर स्थित महान क्लासिक, ग्रीन क्रैक की याद दिला दी, बस यहाँ उल्टा था। और, खुद को भी उसी तरह फंसाने से बचने के लिए सावधानी बरतते हुए, मैंने छत के नीचे बने अंडरकट होल्ड्स को पार किया, कोने से घूमकर ऊपर चढ़ गया। तीनों की टीम अभी भी लेज पर थी और मुझे आगे जाने देने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। मैं तेज़ी से आगे बढ़ा और अगले फ्लेक और ग्रूव सिस्टम में प्रवेश कर गया।
अब ढलान फिर से कम हो गई और एक और सुखद स्लैब चढ़ाई के बाद, एक ट्रैवर्स बाईं ओर ले गया जहाँ से बाईं ओर नीचे की ओर बहती हुई एक शानदार खाई और नीचे ग्लेशियर दिखाई दे रहा था। फिर आगे, आसान ज़मीन पर एक बढ़िया चट्टान तक पहुँचे जहाँ दो लोगों की टीम टिकी हुई थी। यहाँ से रास्ता साफ़ था; एक बारीक बर्फ़ और दरार वाली रेखा ऊपर और दाईं ओर जा रही थी। मैंने आसानी से दरार का पीछा किया और फिर वह एक कोने की चिमनी में बदल गई। पीछे की बर्फीली दरार में एक पैर और हाथ फंसाकर मैंने ऊपर की ओर बढ़ना जारी रखा। चिमनी अब चौड़ी हो गई थी और कुछ समय के लिए मैं दोनों तरफ की दीवारों का इस्तेमाल कर पा रहा था, लेकिन जल्द ही मुझे यह तय करना पड़ा कि कौन सी तरफ बेहतर है। पूरी पिछली दीवार

पानी से भरी हुई थी, जो जैसे ही मैंने अपने हाथ सिर के ऊपर उठाए, मुझ पर बहने लगी; मैं पूरी तरह भीग गया था! लेकिन यह कोई समस्या नहीं थी; मुझे पता था कि मैं अपने लक्ष्य के करीब हूँ और यह मुझे अब नहीं रोक पाएगा।

92

एक कठिन दिन की गर्मी

खाई के पिछले हिस्से में एक छत के ऊपर कुछ मुश्किल करतब दिखाने के बाद मैं उस जगह पर था जहाँ कैसिन की मूल रेखा बाईं ओर मुड़ती थी और वहाँ से एक संकरी घाटी प्रणाली में रस्सी के सहारे उतरकर शिखर तक पहुँचना आवश्यक था।

मैंने थोड़ा कठिन लेकिन अधिक सरल और तार्किक मार्ग का अनुसरण करते हुए सीधे अपनी यात्रा समाप्त करने का निर्णय लिया। चिमनी रेखा का अनुसरण करते हुए कुछ और मीटर आगे बढ़ने पर, मुझे बाईं ओर तिरछी दिशा में पत्थरों की एक रेखा दिखाई दी और मैं उस पर चढ़कर एक हवादार छोटी चट्टान पर पहुँच गया।

यहां से मुझे शिखर सिर्फ पचास मीटर ऊपर दिखाई दे रहा था। शिखर के ठीक नीचे मुझे अपने सामने वाली आखिरी टीम के दो लोग दिखाई दिए। आगे की चालों का आकलन करते हुए, मैं सावधानी से चट्टान पर चढ़ने लगा। यह एक खूबसूरत चढ़ाई थी, आधारशिला पर स्थित ग्लेशियर से 800 मीटर दूर महीन ग्रेनाइट की शिलाओं पर चढ़ाई करना मुझे बेहद रोमांचक लग रहा था। जैसे ही मैं शिलाओं से निकलकर कई छोटे-छोटे टुकड़ों और चट्टानों पर चढ़ते हुए शिखर की ओर बढ़ा, मेरी मुलाकात उन दो स्विस लड़कों से हुई जिन्हें मैंने पहले देखा था। अपनी चढ़ाई से उत्साहित होने के साथ-साथ मेरी चढ़ाई से भी वे सचमुच खुश थे, उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और मुझे बधाई दी। मेरे पहुंचते ही बादल घिर आए और हम नम धुंध में घिर गए। मैंने नीचे की ओर चढ़ाई कर रही बाकी दो टीमों के बारे में सोचा।

हमने उतरने के लिए एक साथ मिलकर काम करने का फैसला किया और रस्सियों के दोनों सेटों का इस्तेमाल करते हुए तेजी से नीचे उतरे। जल्द ही हम उत्तरी रिज से काफी नीचे आ गए। कोहरे से नीचे उतरते हुए, जिसने चट्टान पर उगी काई को चमकदार हरे/पीले रंग में निखार दिया था, हम उतर रहे सड्स और स्पाइक से मिल गए। दर्रे पर पहुँचकर हमने अपनी रस्सियाँ समेट लीं और अलविदा कहा। स्विस लड़कों ने मुझे जश्न के तौर पर एक बियर पिलाई, लेकिन वे और चढ़ाई के लिए सियोरा हट लौट रहे थे, इसलिए हमें अलग होना पड़ा। मैं जंगल और खड़ी ढलानों से होते हुए, सैस फुरा हट के पास से गुज़रते हुए, बोंडो के शांत चारागाहों की ओर नीचे उतर गया।

जेबी: एलेक्स बच्चों के साथ टहल रही थी तभी सड्स और स्पाइक पसीने से तरबतर, लेकिन उत्साहित होकर वहाँ आ गए। सड्स चिल्लाया, 'उसने कर दिखाया! वह ठीक है और रास्ते में है।' एलेक्स रास्ते से आगे बढ़ जाता है और मैं चूल्हे जला देती हूँ। एलिसन गरमागरम आती है। मैं सबके लिए ढेर सारा पास्ता और कई तरह की चाय बनाती हूँ, जबकि एलेक्स एलिसन को नदी किनारे ले जाता है ताकि उसे तैरने और नहाने के लिए एक तालाब दिखा सके। लगता है बहुत ठंड रही होगी। कितनी बढ़िया रात थी! बच्चे हमारी गोद में सो जाते हैं और बड़े लोग सुबह तक बातें करते रहते हैं। बोंडो, चाम की चहल-पहल से कितना अद्भुत रूप से अलग है!

अगले दिन स्पाइक और सड्स ज़र्मेट और मैटरहॉर्न के लिए रवाना हो गए और हमने बोंडो में आराम से दिन बिताया। टॉम और केट नदी किनारे पानी से चिकने हुए ग्रेनाइट के पत्थरों पर चढ़े, हमने साफ़ बर्फीले तालाबों में तैराकी की और स्थानीय दही के साथ चाय के लिए जंगली रसभरी तोड़ी। स्टीव और एलेक्स लेयसिन में एक दोस्त से मिलने चले गए और मुझे यह हिसाब लगाने का समय मिल गया कि स्प्रेवे के लिए आईएसपीओ व्यापार मेले के लिए म्यूनिख जाने से पहले मेरे पास जो तीन सप्ताह का समय था, उसमें मैं अपने बिग सिक्स में से आखिरी दो को कैसे पूरा करूँ।

हम इटली के करीब थे, इसलिए सबसे सही तरीका यही होता कि हम डोलोमाइट्स की तरफ गाड़ी चलाकर जाते, वहाँ की चट्टानों से थोड़ा अभ्यास करते और सीमा ग्रांडे डी लारेडो पर कोमिसी रूट से चढ़ाई करते। फिर हमें ड्रू रूट पर चढ़ाई पूरी करने के लिए शैमोनिक्स वापस आना पड़ता। लेकिन हाल ही में धूप खिली होने के कारण ड्रू रूट पर चढ़ाई के लिए मौसम अनुकूल होना चाहिए था। अगर सितंबर में तूफानी मौसम शुरू हुआ, तो मौसम फिर से प्रतिकूल हो सकता था। मैं सही मौका चूकना नहीं चाहता था, और अगर मैं सीधे ड्रू रूट पर चढ़ाई कर लेता, तो म्यूनिख से पहले सीमा ग्रांडे रूट पर चढ़ाई करने का अच्छा मौका मिल जाता। अपनी चढ़ाई पूरी करके वहाँ से निकलना कितना अच्छा होता, यह जानते हुए कि इसके बाद मुझे फिर से अकेले चढ़ाई करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। तो मैंने फैसला कर लिया। शुक्रवार, 13 तारीख थी और ड्रू रूट मुझे बुला रहा था। हमने अपना सामान पैक किया और काम पर वापस चल दिए।

10

द ड्रू – 3733 मीटर

ड्रस पर्वतमाला एक बेदाग पर्वत है। देखने में यह काल्पनिक पर्वत का साक्षात उदाहरण है, एक अकेली, नंगी चट्टान का उभार।

गुइडो मैग्नोन

शैमोनी घाटी से ड्रस पर्वतमाला आसानी से दिखाई देती है और रैक रेलवे के शीर्ष पर स्थित मोंटेनवर्स से पेटिट ड्रू का पश्चिमी भाग एक पसंदीदा, हालांकि चुनौतीपूर्ण दृश्य प्रस्तुत करता है। इसके दो शिखर हैं, ग्रैंड ड्रू (3754 मीटर) और पेटिट ड्रू (3733 मीटर), जो ब्रेश डेस ड्रस नामक एक छोटे से दर्रे से अलग हैं। दोनों शिखरों पर पहली बार 1870 के दशक के अंत में चढ़ाई की गई थी, और पहली शीतकालीन चढ़ाई 1928 में दोनों को पार करते हुए की गई थी। पेटिट ड्रू के प्रभावशाली पश्चिमी भाग को असंभव मानकर नजरअंदाज कर दिया गया और ध्यान इसके उत्तरी भाग पर केंद्रित हो गया।

पेटिट ड्रू के उत्तरी भाग पर विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यक कौशल मुक्त चट्टानी पर्वतारोहण की नई विकसित हो रही तकनीकें थीं, और 1930 के दशक में इस कला के अग्रणी प्रतिपादकों में से एक पेरिस के पर्वतारोही पियरे एलेन थे, जिन्होंने फॉन्टेनब्लू के प्रसिद्ध बोल्डरों पर अपनी कला को निखारा। (पीए के नाम से मशहूर प्रसिद्ध रॉक बूट्स उन्हीं का आविष्कार थे।) शुरुआत

में उन्हें पेटिट ड्रू के लिए एक उपयुक्त साथी खोजने में कठिनाई हुई, लेकिन अंततः उन्होंने रेमंड लीनिंगर के साथ साझेदारी की। इसी बीच, दुर्जेय रेमंड लैम्बर्ट के नेतृत्व में चार स्विस गाइडों का एक दल सबसे पहले पहुंचा और नीश तक चढ़ाई की, जो कभी न पिघलने वाली बर्फ का एक टुकड़ा था जो चट्टान के मध्य में एक मार्गचिह्न की तरह स्थित था।

उसी गर्मी में एलेन और लीनिंगर आल्प्स पर्वतमाला की ओर रवाना हुए और 31 जुलाई 1935 को उन्हें अपना मौका मिल गया। केवल एक पड़ाव के साथ, वे 1 अगस्त को शिखर पर पहुँच गए। संकीर्ण सोच न रखने वाले एलेन ने उस चुनौती की कठिनाई को स्वीकार किया जिसे बाद में 'द 2000' के नाम से जाना गया।

एक कठिन दिन की गर्मी

लैंबर्ट दरार। बाद में पर्वतारोहियों ने पाया कि एलेन दरार पर बिना किसी सहायता के चढ़ाई करना भी कठिन है, और उन्होंने इससे बचने के लिए विभिन्न वैकल्पिक उपाय खोजे हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पेटिट ड्रू पर ध्यान केंद्रित करने का केंद्र इसकी खड़ी पश्चिमी ढलान की चुनौती पर चला गया, हालांकि उत्तरी ढलान पर अभी भी नए मार्ग जोड़े जा रहे थे और यह पूरे

यूरोप के शीतकालीन पर्वतारोहण के अग्रणी नामों के बीच लोकप्रिय हो गया।
पहले आम तौर पर डू पर्वतमाला तक पहुँचने का रास्ता मॉन्टेनवर्स के सामने स्थित मेर डे ग्लेस से खड़ी चढ़ाई करके तल तक जाना होता था। लेकिन हाल के वर्षों में एक मान्यता प्राप्त और अधिक स्वीकार्य तरीका यह है कि ग्रांड्स मोंटेस टेलीफेरिक से उसके शीर्ष स्टेशन तक जाया जाए, फिर दक्षिण और पश्चिम की ओर ढलान से उतरकर एक घाटी से गुजरा जाए जो एगुइल वर्टे के नैंट ब्लैंक फेस के आधार पर ग्लेशियरों के ऊपर पहुँचती है। यहाँ से आप डू के उत्तरी फेस के आधार की ओर उतरते हैं। इसी कारण से मैंने पहले कभी डू पर चढ़ाई नहीं की! मुझे मॉन्टेनवर्स से ऊपर तक की थका देने वाली चढ़ाई का विचार कभी पसंद नहीं आया और, क्योंकि मेरी पिछली अधिकांश अल्पाइन यात्राएँ ऑफ-सीज़न में हुई थीं जब सुविधाजनक यांत्रिक चढ़ाई परिवहन बंद होते हैं, इसलिए मैंने हमेशा डू को किसी और दिन के लिए टाल दिया।
डू पर्वत श्रृंखला का नज़ारा बेहद शानदार है, यह किसी पहाड़ की तरह नहीं, बल्कि चट्टान में तराशी गई एक खूबसूरत आकृति की तरह दिखती है। इसने हमेशा मुझे विशेष रूप से आकर्षित किया है। आल्प्स की अपनी दूसरी यात्रा पर, इयान पार्सन्स और मैंने कई बेहतरीन रॉक क्लाइम्बिंग रूट्स बनाए, लेकिन हाल के वर्षों में मैं शैमोनिक्स की क्लासिक रॉक क्लाइम्बिंग से दूर रहने लगा और आल्प्स की विशाल चोटियों पर चढ़ाई करने लगा। इसी वजह से, शैमोनिक्स के ग्रेनाइट पर सबसे आनंददायक चढ़ाई के लिए ज़रूरी तकनीकों और कौशलों का मेरा अभ्यास छूट गया था। एक दोस्त ने बताया कि उसने एक पुराने पर्वतारोही से बात की थी जिसे भयानक चिमनियों और दरारों की स्पष्ट यादें थीं। इस बात ने मेरा ध्यान केंद्रित कर दिया!
मैंने गैस्टन रेबुफ़ैट की किताब "द मोंट ब्लैंक मैसिफ़: द 100 फ़ाइनेस्ट रूट्स" में मार्ग का विवरण पढ़ा और उनकी इस टिप्पणी को बार-बार पढ़ता रहा कि पेटिट डू के उत्तरी भाग पर चढ़ाई के लिए सबसे अच्छा विकल्प वही टीम हो सकती है जो शैमोनिक्स की मुश्किल दरारों पर चढ़ाई करने में माहिर हो। कठोर ग्रेनाइट से बनी ये दरारें, टुकड़े और शिखर खूबसूरती से तराशे गए हैं। लेकिन इनसे निपटने का कौशल न होने पर, मुझे पता था कि ये मुश्किल साबित हो सकते हैं!
नॉर्थ फेस पर पहली सोलो चढ़ाई महज तेईस साल पहले की गई थी। यह सोलो पर्वतारोहियों की पसंदीदा सूची में कभी भी लोकप्रिय मार्ग नहीं बन पाया, इसलिए इस पर चढ़ाई की संख्या बहुत कम रही है। क्लासिक छह नॉर्थ फेस में से एक।
97
एलिसन हार्ग्रीव्स
यह शायद अकेले करने के लिए सबसे कम लोकप्रिय पर्वतारोहियों में से एक है, और जब मैंने खुद को तैयार किया तो यह समझना आसान हो गया कि ऐसा क्यों है!
पर्किन्स और उनका परिवार शैमोनिक्स लौट आए थे। अगस्त का महीना था और सप्ताहांत था - बहुत व्यस्त और बहुत गर्म। बोंडो की शांति और सुकून के बाद, यह सब कुछ बहुत ज़्यादा था। मैं पर्किन्स के साथ रहने से तंग आ चुकी थी, चाहे वह कितना भी आकर्षक क्यों न हो! अभी शनिवार की सुबह थी, छुट्टियों पर आए लोगों के लिए बदलाव का समय था, तो शायद हमें किसी जगह पर जगह मिल जाए? एक बार फिर, हम लेस ड्रस कैंपग्राउंड की शांति में लौट आए और एक ऐसी जगह ढूंढ ली जहाँ हम पर्किन्स से बात कर सकें।

मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार मंगलवार तक गरज के साथ बारिश होगी और मौसम बदलता रहेगा, लेकिन उसके बाद थोड़ा बेहतर होगा! हमने चट्टानों पर चढ़ाई की, धूप सेंकी और अपने पत्रों और दोस्तों से बातचीत की।

सोमवार को हमने अर्जेंटियर में जाकर सबसे पहले टेलीफेरिक का समय पता किया और मैंने अगले दिन की तैयारी शुरू कर दी। मैंने कल पेटिट ड्रू के उत्तरी भाग पर स्थित एलेन-लीनिंगर मार्ग से चढ़ाई करने का फैसला किया था।

मेरा बैग पैक था। मुझे थोड़ी बेचैनी होने लगी, यह बहुत भारी लग रहा था। मुख्य रूप से चट्टान पर चढ़ाई के लिए, मैंने अपने आरामदायक असोलो ला रेज रॉक शूज़ में चढ़ने की उम्मीद की थी, लेकिन मार्ग की शुरुआत तक पहुँचने के लिए एक बर्फीली खाई और ग्लेशियर से होकर गुजरना पड़ता था। लंबी उतरने की यात्रा में भी ग्लेशियर पार करने थे, इसलिए मुझे चढ़ाई के दौरान अपने असोलो प्लास्टिक बूट पहनने होंगे और फिर चट्टान पर चढ़ाई के दौरान उन्हें साथ ले जाना होगा। यही बात मेरी कुल्हाड़ियों और क्रैम्पोन पर भी लागू होती थी। ड्रू के उत्तरी भाग जैसी चढ़ाई के लिए दो पर्वतारोहियों की रस्सी का सामान्य तरीका यह है कि आगे वाला पर्वतारोही अपना बैग लेकर चढ़ता है जबकि दूसरा उसका बैग उठाता है। दुर्भाग्य से, अकेले चढ़ाई करने का विकल्प चुनने के कारण मुझे यह सब खुद ही संभालना होगा।

मुझे तीन बातों को लेकर थोड़ी घबराहट थी: पहुँचने का तरीका, चढ़ाई और उतरना। शुरुआत में तो ये सब काफी विस्तृत लग रहा था। लेकिन ये सब मेरे लिए बिल्कुल नया था। मैंने घंटों तक बार-बार तस्वीरें, विवरण और नक्शा देखकर जितना हो सके उतना याद करने की कोशिश की थी। मैंने अपने साथ ले जाने वाले सामान की जाँच की और जितना हो सके उतना कम सामान हटा दिया; यहाँ तक कि मैंने अपने बैकपैक के बैक सपोर्ट से मिश्र धातु की पट्टियाँ भी निकाल दीं। वजन और कम करने के लिए, मैंने अपनी गाइड बुक से विवरण और तस्वीरें काटकर तीन प्लास्टिक स्लीव में अलग-अलग कर दीं - पहुँचने का तरीका, मार्ग और उतरना। फिर मैंने नक्शे को इतना छोटा कर लिया कि चारपौआ से रास्ता ढूंढने में मुझे आसानी हो।

मैंने उसे भी मोड़कर प्लास्टिक के कवर में रख दिया। शायद इस तरह से चीजों को कम करने से कुछ खास फायदा नहीं हुआ, लेकिन मानसिक रूप से मुझे बहुत अच्छा लगा।

मंगलवार, 17 अगस्त

मैं सुबह करीब 5:30 बजे उठा और बाहर देखा। चारों ओर घने बादल छाए हुए थे, जिन्होंने लेस वर्टेस को ढक रखा था। मौसम को क्या हो रहा था?

फिर भी मौसम का पूर्वानुमान अच्छा था। सुबह 6 बजे तक हालात थोड़े बेहतर लगने लगे। दिन की शुरुआत के साथ मेरा मन अधिक सकारात्मक हो गया और मैंने नाश्ता करना जारी रखा। सुबह 6:20 बजे मैंने जेबी को अर्जेंटियर और ग्रांड्स मोंटेस तक लिफ्ट लेने के लिए जगाया। नींद में डूबे बच्चों को पर्किन्स की गाड़ी में बिठाकर हम चल पड़े और सुबह 6:50 बजे तक मैं टेलीफेरिक स्टेशन के दरवाजे पर खड़ा होकर कामगारों और पहले केबिन के आने का इंतजार कर रहा था। जब तक यह आया, लोबुचे और कांगटेगा से मेरा एक पुराना दोस्त, मार्क ट्विग्ट भी आ

गया था, जो एक अमेरिकी है और फिलहाल चामोनिक्स में रहता है। वह उठ खड़ा हुआ था क्योंकि वह एगुइल सैंस नोम पर चढ़ाई करने के लिए उत्सुक था।

हमने टेलीफेरिक पर बातचीत की और साथ में उतरने वाले संकरे रास्ते की ओर चल पड़े। उसे बेहद खराब और अस्थिर सूखी हालत में पाकर हम रस्सी के सहारे नीचे उतरे, फिर आखिरी हिस्से को पार करते हुए नीचे की ओर ढीले पत्थरों के ढेर तक पहुँचे जो खतरनाक तरीके से टिके हुए थे। नैंट ब्लैंक ग्लेशियर पर उतरते हुए और उसे पार करते हुए, हम एगुइल सैंस नोम के आधार की ओर बढ़े, जहाँ मैंने मार्क को ऊपर जाने के लिए छोड़ दिया, जबकि मैं ग्लेशियर से नीचे उतरता हुआ और बर्जश्रंड को पार करते हुए ड्रस ग्लेशियर तक पहुँच गया। अब मैं आखिरकार उत्तरी ढलान के आधार की ओर बढ़ रहा था।

मौसम ठंडा, धुंधला और निराशाजनक लग रहा था। सबसे मुश्किल तो शुरुआत ही लग रही थी। बर्फ चट्टान से काफी दूर तक फैली हुई थी, और उससे जुड़ती हुई बर्फ की एक पतली सी पट्टी चट्टान पर लगभग दस मीटर और आगे तक जाती थी, और अंत में एक खड़ी चट्टानी मोड़ पर जाकर खत्म हो जाती थी। मुझे इस पहले हिस्से को क्रैम्पोन पहनकर ही चढ़ना होगा; रॉक शूज़ में बर्फ पर चढ़ना नामुमकिन था और मुझे इस बेहद मुश्किल दिखने वाले मोड़ को बूट्स में ही पार करना होगा।

पतली, सख्त बर्फ में क्रैम्पोन और कुल्हाड़ी गाड़ते हुए, मैं लड़खड़ाते हुए ऊपर चढ़ा और चोटी पर पहुँचकर अपनी कुल्हाड़ी एक तरफ रख दी। एक गहरी साँस लेकर मैंने ढीली, गीली चट्टान पर किसी तरह सहारा बनाने की कोशिश की ताकि आगे बढ़ सकूँ।

99

एलिसन हार्ग्रीव्स

छोटे से छज्जे से होते हुए कोने से ऊपर एक खांचे में घुस गया। वह खांचा ढीला था और उसमें ग्रेनाइट के छोटे-छोटे सख्त कंकड़ बिखरे हुए थे। मैंने दरारें साफ कीं और फिर अपने हाथ अंदर डालकर ऊपर चढ़ने की कोशिश की। ठंड लग रही थी।

गंदा और फिसलन भरा रास्ता - मैं जल्द से जल्द ऊपर चढ़कर उससे बाहर निकलना चाहता था। चालीस मीटर ऊपर एक छोटी सी चट्टान पर मुझे दिन के पर्वतारोहियों का पहला समूह मिला। वे तीन बल्गेरियाई थे, दो लड़के और एक लड़की, जिन्होंने रात रास्ते के नीचे डेरा डाला था और मेरे आने से खुश नहीं लग रहे थे। और भी ज्यादा तब जब मैं उनसे आगे निकल गया और, चाहे मैं कितना भी सावधान रहा, अगले फिसलन भरे रास्ते से उन पर गिरने वाले छोटे-छोटे पत्थरों को नहीं रोक सका। वह रास्ता फिसलन भरा और भयानक था, पुरानी बर्फ और आंशिक रूप से जमे हुए टुकड़ों का मिश्रण था, लेकिन ढलान वाला नहीं था। मैं जल्दी ही ऊपर चढ़कर उससे बाहर निकल गया और एक उपयुक्त जगह ढूंढकर, कम से कम अपना बैकपैक, क्रैम्पोन और प्लास्टिक के जूते उतारकर उनकी जगह हल्के रॉक शूज़ पहन लिए। अब मेरे पैरों से बोझ हट गया था - लेकिन सारा भार मेरी पीठ पर आ गया था!

मैंने मार्ग का विवरण निकाला और ऊपर देखा। कई शिलाखंडों के बाद कुछ ढीले पत्थर दिखाई दिए। लगातार शुष्क गर्मियों के कारण पहाड़ के सूख जाने से डू पर्वत श्रृंखला में हुए हालिया चट्टान गिरने की घटनाओं को मैं भूल ही गया था। इनके ऊपर मार्ग कुछ दरारों और चिमनीनुमा

संरचनाओं की ओर बढ़ता है जो दाईं ओर एक पथरीली रेखा की ओर जाती हैं। दरारें बर्फीली तो नहीं थीं, लेकिन दुर्भाग्य से गीली थीं, और जैसे ही मैंने खुशी-खुशी अपना हाथ एक बड़े से बर्फ के ढेर में डाला, पानी के रिसने से मेरी मुस्कान एक कड़वी शक्ल में बदल गई।
अब चट्टान ठोस हो गई थी और आखिरकार मुझे सुरक्षा का एहसास हुआ, और मैं दाईं ओर चढ़ाई करने लगा। मैं उस बिंदु पर पहुँचा जहाँ खंभा ऊपर की चिकनी दीवार से एक अजीब दरार पर जुड़ता था। यह दरार देखने में बेहद खतरनाक लग रही थी! ग्रेनाइट का एक ठोस टुकड़ा पीछे की दीवार के समानांतर ऊपर उठा हुआ था, जिससे एक दरार बन गई थी जो मेरे लिए अंदर घुसकर चढ़ने के लिए मुश्किल से ही काफी थी। समस्या मेरे बैकपैक की थी। इसे पहने हुए मैं चिमनी की तरह ऊपर नहीं चढ़ सकता था और मुझे यह भी पक्का नहीं था कि चढ़ाई के दौरान मैं इसे संभाल पाऊँगा या नहीं।
मैंने एबसेल डिसेंट के लिए अपने साथ लाई हुई केयर्नगोर्म रस्सी निकालने का फैसला किया, उसका एक सिरा खुद से और दूसरा अपने बैग से बांध लिया। फिर इसे चट्टान से सटी हुई कगार पर सावधानीपूर्वक रखकर, मैंने रस्सी को ऊपर से इस तरह लपेट दिया कि वह आसानी से बाहर निकल सके। अब, अगर मेरा बैग गिरकर मुझे नीचे नहीं खींचता, और/या इसके विपरीत, ऊपर पहुँचने पर मैं एक सुरक्षित जगह ढूंढकर उसे ऊपर खींच सकता था। तो मैं तैयार था। मैं चिमनी में चढ़ गया, घुटनों और कोहनियों को सहारा दिया, और धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ने लगा। चोटों और खरोंचों से लथपथ, मैं जल्द ही ऊपर की कगार पर था और खुद को एक मौजूदा बेले पेग से क्लिप कर लिया और आगे बढ़ गया।

100
एक कठिन दिन की गर्मी
मेरे पीछे-पीछे रकसैक को ऊपर खींचकर ले जाओ, उसे चिमनी से दूर रखो ताकि वह ऊपर की ओर थोड़ी संकरी जगह पर फंस न जाए।
रस्सी को समेटकर और पीठ पर बैग वापस रखकर, अब प्रसिद्ध फिशर लैम्बर्ट के आधार तक पहुंचने के लिए एक खुले क्षैतिज किनारे का उपयोग करते हुए दाईं ओर जाने का समय था। एक ढलान वाली दरार से होते हुए एक छोटी सी, लेकिन थोड़ी मुश्किल चढ़ाई वाली छत तक पहुँचा और फिर आसान ढलान वाली चट्टान से होते हुए एक संकरी चिमनी तक। जैसे ही मैं दरारों के इस जाल का पीछा करते हुए नीच के निचले सिरे तक पहुँचा, मेरी मुलाक़ात जल्द ही दो अंग्रेज़ लड़कों से हो गई, जो चट्टान के तल पर रात बिता रहे थे। मैं कुछ देर उनके पीछे रुका और उनसे बातचीत की। फिर जैसे ही वे नीच को पार करने लगे, मैंने अपने कपड़ों के विशाल भंडार का फ़ायदा उठाने का फ़ैसला किया और एक बार फिर प्लास्टिक के बूट और क्रैम्पोन पहनकर धीरे-धीरे दाईं ओर बर्फ़ और हिमक्षेत्र के किनारे और नीचे की चट्टान के किनारे तक पहुँच गया। मेरे दाईं ओर चट्टान खड़ी ढलान पर खड़ी ग्रेनाइट की दीवारों के रूप में नीचे गिर रही थी।
उत्साहित होकर, मैं बाईं ओर मुड़ा, बर्फ़-चट्टान की एक और चढ़ाई पर आगे बढ़ा, क्रैम्पोन और बूट उतारे, रॉक शूज़ पहने और फिर से संकरी खाई और चट्टानों से होते हुए ऊपर बड़े चबूतरे तक चढ़ गया।

मार्ग के विवरण को एक बार फिर देखने का समय आ गया था। मैंने अगले कुछ हिस्सों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया और ठीक से तय किया कि मुझे कहाँ जाना है। अंग्रेज़ साथियों को चीयर करते हुए मैं बाईं ओर एक चिमनी में चला गया। फिर से खड़ी लेकिन ठोस ज़मीन पर, मैं खड़ी चिमनी पर चढ़कर एक डाइड्रे तक पहुँचा, जो बाईं ओर एक चबूतरे की ओर जाता था। एक और दरार, और फिर एक चौड़ी दरार से बचने के लिए बाईं ओर थोड़ा नीचे उतरा, और मैं सीधे निच के ऊपर एक अच्छी स्थिति में था। एक खड़ी दरार एक खड़ी दीवार के नीचे एक छोटे निच की ओर जाती थी। मैं बाईं ओर बढ़ा और चट्टानों की एक अस्पष्ट रेखा का अनुसरण किया। यह मुझे एक खुले कोने में एक लंबी खड़ी दरार के आधार तक ले गया। यह कठिन लग रहा था। यह वही मार्ग था जिसे पहले पर्वतारोहियों ने अपनाया था, प्रसिद्ध फिशर एलेन, और पीछे मुड़कर देखने पर यह सबसे अच्छा और सीधा मार्ग होता। हालाँकि, आजकल अधिकांश लोग छठी चढ़ाई पर खोजे गए एक अलग मार्ग को अपनाकर फिशर एलेन से बचते हैं, और मैंने भी ऐसा ही करने का फैसला किया। दरार के ठीक नीचे से गुज़रते हुए, मैं जल्द ही बोइट ऑक्स लेट्रेस (लेटर बॉक्स) में पहुँच गया। वहाँ पहुँचने के बाद, मुझे बस चट्टान के इस टुकड़े और चट्टानी दीवार के बीच से गुज़रना था, ताकि दूसरी तरफ उतरकर दाईं ओर एक कदम बढ़ाकर उस खड़ी चट्टान तक पहुँच सकूँ जो दाईं ओर ऊपर की ओर चुनौती, मार्टिनेटी दरार की ओर जा रही थी। यह सब बहुत आसान लग रहा था जब तक मैंने नीचे उतरना शुरू नहीं किया। जैसे-जैसे मैं नीचे उतरता गया, जगह और तंग होती गई। दीवारें मुझे घेरने लगीं और मेरा बैग फंस गया।

उनके बीच। जैसे ही मैंने खुद को छुड़ाने की कोशिश में छटपटाना शुरू किया, मेरे पैर चट्टान से अलग हो गए और मैं कुछ पल के लिए हवा में लटक गया, मेरा बैग फंसा हुआ था, लेकिन पैर फैले हुए थे! घबराहट को काबू में रखते हुए और स्थिति की गंभीरता पर हंसने का मन करते हुए, मैंने खुद को संभाला और सबसे अच्छा उपाय सोचने की कोशिश की। अब और नीचे उतरकर बोइट से बाहर निकलना नामुमकिन था, क्योंकि जितना नीचे जाता, दरार उतनी ही संकरी होती जाती और मैं उतना ही फंसता जाता। मुझे अपने पैरों और चट्टान के बीच संपर्क फिर से स्थापित करने की सख्त जरूरत थी। अपने बैग को ढीला करते हुए, मैंने ज़ोर-ज़ोर से हाथ-पैर पटके और धीरे-धीरे ऊपर चढ़कर खुद को छुड़ाने में कामयाब हो गया। अब बाहर निकलने का रास्ता यही था कि मैं चट्टान की दरार में मुंह करके, बैग को दरार के बाहर रखते हुए, हवा में तैरते हुए नीचे उतरूं। यह बहुत ही असुरक्षित था, लेकिन कम से कम इस बार मैं फंसूंगा नहीं। दांत पीसते हुए मैंने कोहनियों और घुटनों को दरार के ऊपर टिकाकर नीचे उतरने की कोशिश की। मुख्य समस्या यह थी कि अब मुझे यह दिखाई नहीं दे रहा था कि मैं कहाँ जा रहा हूँ और मुझे अपने पैरों से रास्ता टटोलना पड़ रहा था। कुछ और मीटर आगे बढ़ने पर मैं दाईं ओर एक चौड़ा पैर फैलाकर खड़ा हो सका और स्लैब के तल पर पहुँचकर राहत और सुरक्षा का अनुभव किया!

अगली पिच काफी कठिन होने वाली थी, लेकिन बोइट ऑक्स लेट्रेस से बाहर निकलकर राहत महसूस करने और एड्रेनालाईन के अच्छे प्रवाह के कारण, मैं भी तेजी से पिच के शीर्ष पर बैठा था और अपनी पिछली स्थिति की बेतुकीपन पर मुस्कुरा रहा था!

एक अजीब सी दरार और फिर एक खड़ी और कठिन दीवार, और मैं पश्चिम दिशा की ओर देखने वाले तीसरे बड़े चबूतरे पर पहुँच गया। मैंने उस विशाल चेहरे को नीचे देखने के लिए कुछ पल रुके। किसी और दिन के लिए हमेशा कुछ न कुछ बचा रहना चाहिए, मैंने खुद से वादा किया। यहां से चढ़ाई बाईं ओर और ऊपर की ओर थी, चट्टान अभी भी ठोस थी, लेकिन पहले से ज़्यादा टूटी हुई थी, जिसमें छोटी-छोटी दरारें थीं। मुझे पता था कि मैं मंज़िल के करीब पहुँच रहा हूँ। मेरी बाहें थोड़ी थकी हुई लग रही थीं, एड्रेनालाईन का प्रवाह कम हो चुका था, जैसे ही दोपहर के बादल छाने लगे, मैं ऊपर चढ़ता चला गया। मुझे दो डच लड़के मिले जो अमेरिकन डायरेक्ट के रास्ते वेस्ट फेस पर चढ़ चुके थे और फिर मैं शिखर पर पहुँच गया। फिर से कोई नज़ारा नहीं। मुझे चढ़ाई करने का मौका तो मिला था, लेकिन किसी अल्पाइन मनोरम दृश्य का आनंद लेने का नहीं। अगर मुझे और कुछ देखना है तो मुझे वापस आना होगा, मैंने खुद से कहा, वेस्ट फेस के बारे में सोचते हुए।

अब नीचे उतरने का समय हो गया था। डच लड़के भी पहाड़ पर नए थे, इसलिए हमने उतरने के रास्ते के नक्शे पर आपस में विचार-विमर्श किया और फिर से रस्सियाँ आपस में बाँटकर नीचे की लंबी सड़क पर चल पड़े।

यह मौसम एक चुंबक की तरह था। पूरी गर्मी में पहली बार इतना सुहावना मौसम था। हर किसी ने चढ़ाई करने के लिए पूरी जान लगा दी थी और जैसे ही हम नीचे उतरने लगे, बोनाटी पिलर से टीमें दिखाई देने लगीं।

Alison, a speck on the 500-metre North Face of the Cima Grande, above left.

Alison and the children walking near the Tri Cima, above right.

The Tri Cima di Lavaredo, below.

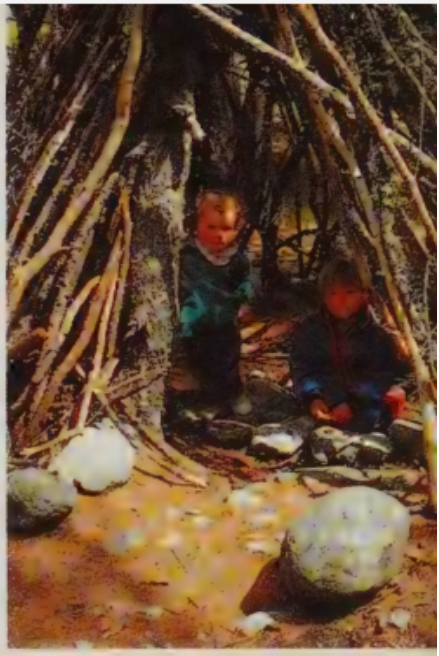

Alison, the day after completing the Big Six, enjoying the Dolomites with Tom and Kate.

Swallows and Amazons for ever!

JB and the faithful Perkins at Perkins' personal high point in the Auronzo Hut car park.

एक कठिन दिन की गर्मी

अमेरिका से आए डैन और डेव की एक बेहद दयनीय हालत वाली टीम भी थी, जो दो दिन के

सफर के बाद बेहद दुखी थे और पहले ही दिन अपना ज़रूरी बिवाक गियर वाला बैग खो बैठे थे! इसके बाद दो फ्रांसीसी पर्वतारोही भी हमारे साथ शामिल हो गए, जो चारपौआ हट में सोए थे और उन्होंने एक ही दिन में पूरा रास्ता तय कर लिया था, बाकी सभी टीमों को पीछे छोड़ते हुए, और फिर भी उसी रात मुश्किल से हट तक वापस पहुँच पाए थे! आराम से नीचे उतरने के बाद, फ्लेम्स डी पियरे के दर्रे पर पहुँचकर मुझे एहसास हुआ कि दिन के इस आखिरी समय में बिना बिवाक गियर के मैं खुद थोड़ा जोखिम में हूँ। इसलिए मैंने अपनी गति बढ़ाने का फैसला किया। अमेरिकियों को उनके द्वारा ऊपर जाते समय छोड़े गए गियर को उठाने के लिए और चढ़ाई से पहले बिवाक कर रहे सभी देशों के सैकड़ों अन्य पर्वतारोहियों को वहीं छोड़कर, मैं अंधेरा होने से ठीक पहले फ्रांसीसी पर्वतारोहियों से मिलने के लिए फ्लेम्स डी पियरे के पिछले हिस्से से नीचे उतर गया। मैंने थोड़ी देर रुककर अपने क्रैम्पोन और हेडलाइट लगाई, और फिर हम एक-दूसरे को देखते हुए गड्ढों से होते हुए एक साथ ग्लेशियर से नीचे उतरने लगे।

देखते ही देखते, पहाड़ी की तलहटी में झोपड़ी मेरे सामने आ गई। वाह! चाय पीने और चैन की नींद सोने का समय हो गया था, लेकिन नहीं, रखवाली करने वाली ने खाना बना लिया था और झोपड़ी पूरी तरह से भरी हुई थी। सब लोग पहले ही बिस्तर पर जा चुके थे और यहाँ तक कि फ्रांसीसी कुत्तों ने भी अपने-अपने बिस्तर ले लिए थे!

एक मिलनसार फ्रांसीसी गाइड ने मुझे कोक का एक कैन दिया और कुछ कंबल भी दिए। गार्ड ने मुझे भरोसा दिलाया, 'रात 2 बजे तक जगह मिल जाएगी।' तो, कम से कम आधी रात की नींद के वादे के साथ मैं ढलान से नीचे उतरकर एक समतल चबूतरे पर लेट गया, जो थोड़ा पथरीला था, लेकिन उसमें इतनी घास थी कि मैं अपने बैकपैक की चटाई और ओवरट्राउजर पर आराम से लेट सका। अपनी रस्सी को तकिए की तरह इस्तेमाल करते हुए, मैंने खुद को कंबलों से लपेट लिया और अपने साथ लाए बड़े पतले प्लास्टिक के बिवाक बैग में घुस गया। पहले तो बहुत अच्छा लगा। मैं थका हुआ था और लेटे हुए तारों को देखना और उपग्रहों और हवाई जहाजों के निशान देखना बहुत सुखद था। लेकिन यह सुख ज्यादा देर तक नहीं रहा, और जैसे-जैसे भूख और प्यास बढ़ती गई, वैसे-वैसे ठंड भी बढ़ती गई। ज़मीन सख्त लगने लगी और मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं झोपड़ी के दरवाजे को देखता रहा।

लगभग 1:40 बजे मुझे झोपड़ी में आवाज़ें सुनाई दीं; जल्दी उठने वालों में से पहले लोग उठ चुके थे। मैंने सोचा कि अभी अंदर जाकर बिस्तर के लिए जगह पक्की कर लूँ। अफसोस, केवल दो लोग ही उठे थे और पहले से ही बहुत भीड़ होने के कारण अभी भी कोई जगह नहीं थी। 'एक घंटे बाद आना,' चौकीदार ने मुझे सख्ती से कहा। मैंने सोचा, कोई चारा नहीं, झोपड़ी गर्म थी, ठंड में बाहर जाकर अपना टेंट दोबारा लगाने का तो सवाल ही नहीं था। मैंने एक छोटा सा स्टूल ढूंढा, उस पर बैठ गया, अपने कंधों पर कंबल ओढ़े और...

आराम से लेट गई! जब मैंने उसे जाने वाले पर्वतारोहियों के लिए टोस्ट और कॉफी तैयार करते देखा, तो मेरे मुंह में पानी आ गया! मेरा पेट पहले से कहीं ज़्यादा ज़ोर से गुड़गुड़ा रहा था और भूख से मेरा मुंह सूख रहा था। नाश्ते में सिर्फ़ पाँच घंटे बचे थे, लेकिन मुझे सच में नींद की ज़रूरत

थी।
रात के 2:30 बज रहे थे और जोश बढ़ता जा रहा था। पर्वतारोही अपने आरामदायक गड्ढों से बाहर निकले। जैसे ही जगह मिली, मैंने सबसे अच्छी जगह देखी और बिना बुलाए ही एक मुलायम गद्दे पर लेट गया और खुद को एक शानदार मुलायम रजाई से ढक लिया। उनके टोस्ट की स्वादिष्ट खुशबू पूरे कमरे में फैल रही थी और मैं गहरी नींद में सो गया।
मैं सुबह करीब 6 बजे उठा। उजाला हो चुका था और मुझे भूख लगी थी। सुबह का मौसम बेहद खूबसूरत था, आसमान एकदम साफ था और पहाड़ बेहद आकर्षक लग रहे थे। मैंने ऊपर डू की पथरीली ढलानों की ओर देखा और सोचा कि वहां मौजूद बाकी टीमें भी खूब मजे कर रही होंगी। आखिरकार गार्डियन फिर से खड़ी हुई, कॉफी बनाई और लोगों के बैठने की जगह तय करने लगी। मैंने पूछा कि क्या मेरे लिए भी पर्याप्त है। हममें से कुछ लोग मेज के चारों ओर बैठ गए और खूब सारी कॉफी और जैम और मक्खन से लदे टोस्ट के साथ कैफे औ ले (कॉफी) चट कर गए। खाने की कोई जल्दी नहीं थी। बातचीत करने के लिए काफी समय था और हर कोई यही चाहता था। मेरे बगल में बैठी खूबसूरत और शालीन फ्रांसीसी महिला ने पूछा कि क्या मैं भी झोपड़ी तक पैदल चलकर आई थी। 'नहीं,' मैंने जवाब दिया, 'मैं चढ़ाई कर रही थी।' लेकिन मेरा साथी कहाँ था? 'नहीं, मैं अकेली थी।' और आपने क्या चढ़ाई की? जब मैंने उन्हें बताया तो मेज पर सन्नाटा छा गया।
वे प्रभावित दिखे और मुझसे यह जानने की इच्छा जताई कि मैंने अकेले और कौन-कौन सी पर्वतारोहण की है - अचानक सबकी दिलचस्पी बढ़ गई! हालांकि कुछ लोग ऐसा दिखावा करते हैं कि ऐसा नहीं है, लेकिन पर्वतारोहण में बहुत प्रतिस्पर्धा होती है, इसलिए मैंने अब तक अपने 'बिग सिक्स' अभियान के बारे में किसे बताया था, इस बारे में मैं बहुत सतर्क था। अपनी बात गलत तरीके से बताने का कोई फायदा नहीं।
अब तक मुझे लग रहा था कि मैं अपने लक्ष्य के काफी करीब पहुँच चुकी हूँ। अगर कोई और भी अब इन छहों चोटियों पर अकेले चढ़ाई करने का विचार करे, तो भी उसे मेरी बराबरी करने में काफी मशक्कत करनी पड़ेगी। इसलिए मैंने समझाया कि हालाँकि मुझे पूरा यकीन था कि मेरी चुनी हुई किसी भी चोटी पर पहले किसी महिला ने अकेले चढ़ाई नहीं की थी, लेकिन जैसे-जैसे मैं इस प्रोजेक्ट में आगे बढ़ती गई, यह स्पष्ट होता गया कि शायद मैं ही हर चोटी पर अकेले चढ़ाई करने वाली पहली व्यक्ति हो सकती हूँ... डू चोटी पर तो निश्चित रूप से बहुत कम ही अकेले चढ़ाई हुई थी, जिससे संभावनाएँ काफी कम हो गईं।
अब लक्ष्य के करीब पहुँचकर, मैं चढ़ाई के बारे में खुलकर चर्चा करने और अपनी भविष्य की योजनाओं पर बात करने में खुश थी। सभी ने मेरा भरपूर हौसला बढ़ाया और उस प्यारी फ्रांसीसी महिला ने मुझसे वादा करवाया कि मैं एक किताब लिखूँगी। इसके बाद वह महिला अपना मेकअप पूरा करके मोंटेनवर्स लौट गई। यह सब कुछ थोड़ा अभिभूत करने वाला था।

एक कठिन दिन की गर्मी
मैं यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाया कि क्या पिछली रात खुलकर बोलने से मुझे पूरी रात की

नींद और कुछ खाने-पीने का मौका नहीं मिल जाता!
नीचे जाने का समय हो गया था। घास से ढकी ढलानों को काटकर एक नया, मनमोहक रास्ता बनाया गया था जो मेर डे ग्लेस तक जाता था। मैं डैन और डेव के साथ नीचे गया। हमने डैन की प्रेमिका के लिए फूल तोड़े और ताज़गी भरे, चमकीले झरनों का पानी पिया।
मोंटेनवर्स स्टेशन पर हम अलग हो गए, लड़के ट्रेन से शैमोनिक्स के लिए रवाना हुए, और मैं लेस बोइस तक अपनी लंबी और सुखद पैदल यात्रा के लिए निकल पड़ा।
जेबी: आज सुबह मौसम एकदम साफ़ है। लगता है वो नीचे उतर रही होगी, या कम से कम अपने इस बेहद ठंडे शिविर से निकल रही होगी। हम नाश्ता करने लगे और अचानक देखा कि शिविर में मौजूद सभी लोग दूरबीन से ड्रू पर्वत को देख रहे हैं। एक, दो, तीन हेलीकॉप्टर शिखर पर मंडरा रहे हैं। क्या कोई बड़ा बचाव अभियान चल रहा है? मैंने और बच्चों ने इस पर ध्यान नहीं दिया, और बाद में पता चला कि ये एक विज्ञापन की शूटिंग थी।
एलिसन बड़े ही शांत और खुशमिजाज अंदाज में शहर में दाखिल होती है। शायद उसे चाय या कॉफी चाहिए?
105
11
सीआईएमए ग्रांडे डि लावेरेडो - 2999 मी
मेरी इच्छा है कि किसी दिन मैं एक मार्ग बनाऊं और शिखर से पानी की एक बूंद गिराऊं और यही वह मार्ग होगा जो मुझे ले जाएगा।
एमिलियो कोमिसी
डोलोमाइट्स आल्प्स के किसी भी अन्य हिस्से से बिल्कुल अलग हैं और मैं एक बिल्कुल नए अनुभव की उम्मीद कर रहा था। सबसे पहले आपको पहाड़ों को दो नामों से देखने से बचना होगा क्योंकि अधिकांश चोटियों के दो नाम हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इस सीमावर्ती क्षेत्र को जर्मन या इतालवी दृष्टिकोण से देख रहे हैं। ट्रे सिमे डि लावेरेडो (ड्रेई ज़िनन) का मध्य क्षेत्र अब एक राष्ट्रीय उद्यान है जिसमें कई झोपड़ियाँ और चिह्नित रास्तों का जाल है, जिससे घूमना-फिरना बहुत आसान हो जाता है। आज यह कल्पना करना मुश्किल है कि प्रथम विश्व युद्ध में यह जादुई क्षेत्र कितना क्रूर युद्धक्षेत्र रहा होगा।
2999 मीटर की ऊँचाई पर स्थित सीमा ग्रांडे (ग्रोसे ज़िने) प्रसिद्ध पर्वत श्रृंखला की सबसे ऊँची चोटी है। उत्तर की ओर देखने पर, इसके बाईं ओर पुंटा फ्रिडा की पतली चोटी, सीमा पिकोला और सीमा पिकोलिस्सिमा तथा दाईं ओर छोटी सीमा ओवेस्ट स्थित हैं। भ्रम को और बढ़ाने के लिए, वास्तव में इस समूह में तीन नहीं बल्कि छह चोटियाँ हैं, और इसका पर्वतों के छद्म नामों से कोई लेना-देना नहीं है। सीमा ग्रांडे पर पहली बार चढ़ाई दक्षिणी ढलान से की गई थी, जो ऑरोंज़ो हट से आने वाले मुख्य मार्ग के ऊपर स्थित है। अब उतरने का मार्ग भी इसी पर आधारित है।
उत्तरी भाग 500 मीटर ऊंचा है और निचला आधा भाग समतल है।
107
एलिसन हार्ग्रीव्स

काफी सपाट। एकमात्र वास्तविक प्राकृतिक रेखा शिखर से चेहरे के ऊपरी आधे हिस्से को काटते हुए एक प्रमुख कोणीय प्रणाली है। चेहरे के निचले हिस्से में, लगभग इसके नीचे, दीवार से सटा हुआ कमज़ोर चट्टान का एक छोटा सा खंभा है। यह एक शुरुआत थी, और दूरदृष्टि वाले पर्वतारोही को बस इन दोनों को आपस में जोड़ने की क्षमता की आवश्यकता थी। लेकिन क्या वह जर्मन होगा या इतालवी? राष्ट्रीय प्रतिद्वंद्विता तीव्र थी और प्रत्येक प्रयास पर प्रेस द्वारा इसे और हवा दी जा रही थी।

इटालियंस में अग्रणी दावेदार रहस्यमय एमिलियो कोमिसी थे, जो बड़ी दीवारों पर चढ़ने के विशेषज्ञ थे और जिन्होंने इस अध्याय की शुरुआत में दिए गए उद्धरण के साथ 'डायरेटिस्सिमा' मार्ग की सटीक परिभाषा दी थी। 1933 की गर्मियों तक वे अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों से कहीं अधिक ऊँचाई पर पहुँच चुके थे और पिछले वर्ष हासिल की गई ऊँचाई को चिह्नित करने के लिए अपने चेहरे पर एक सफेद रुमाल छोड़ देते थे।

13 अगस्त को उन्होंने डिमाई भाइयों, एंजेलो और ग्यूसेप्पे के साथ मिलकर काम किया। इस बार सफलता उन्हीं की थी!

निचली 250 मीटर की दीवार उनकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा खड़ी थी। नापने पर पता चला कि यह आधार से बीस मीटर से भी ज़्यादा बाहर निकली हुई थी। इस हिस्से को पार करने के लिए उन्होंने पचहत्तर पिटॉन लगाए, दीवार पर रात बिताई और अगले दिन शिखर तक पहुँचने के लिए ऊपरी कोने वाले ज़्यादा आसान रास्ते पर चढ़ाई की। बेशक, इस्तेमाल किए गए पिटॉन की संख्या को लेकर आलोचनाएँ भी हुईं। लेकिन, इन विशाल उत्तरी चट्टानों के मामले में हमेशा की तरह, उन्होंने अपनी आलोचना घर पर आराम से बैठकर ही ज़ाहिर की।

इस मार्ग पर दूसरी बार चढ़ाई भी कोमिसी ने ही की थी, जब उन्होंने अगले वर्ष इसे अकेले ही साढ़े तीन घंटे में पूरा कर लिया था।

अंततः समय ने कोमिसी की उत्तरी ढलान पर चढ़ाई को सही साबित कर दिया है। यह न केवल जादुई छह सबसे बड़ी चढ़ाइयों में से एक के रूप में स्थापित हो चुकी है, बल्कि एक शानदार ढलान पर एक बेहतरीन रॉक क्लाइम्ब के रूप में दुनिया भर के पर्वतारोहियों द्वारा इसकी बहुत मांग है। और पर्याप्त कौशल वाले पर्वतारोहियों के लिए आज इसे बिना किसी पूर्व तैयारी के भी चढ़ा जा सकता है।

कोमिसी ने जिस तरह से पर्वतारोहण के बारे में लिखा, वह आज भी पर्वतारोहियों के बीच प्रासंगिक बना हुआ है।

वह पर्वतारोही जो शिखर तक पहुँचने का सबसे तार्किक और सबसे सुंदर मार्ग खोज लेता है, आसान ढलानों को नकारते हुए, फिर उसी मार्ग का अनुसरण करता है, अपनी नसों को चरम सीमा तक तनाव में रखते हुए, अपने आंतरिक संघर्ष को महसूस करते हुए और अपने पीछे की गहराई के खिंचाव और अपने चारों ओर अंतरिक्ष के भंवर पर काबू पाने के लिए आवश्यक प्रयास से अवगत होते हुए, वह पर्वतारोही कला की एक सच्ची कृति का निर्माण कर रहा होता है, कभी-कभी असाधारण गुणवत्ता की। आत्मा की एक रचना, मनुष्य की एक सौंदर्यबोध की भावना जो...

चट्टानों की दीवारों पर खुदे हुए ये शब्द हमेशा के लिए अमर रहेंगे, जब तक कि पहाड़ों में जीवन रहेगा।
यह बात उनकी स्वयं की एकल चढ़ाई पर भी निश्चित रूप से लागू होती है।
अब नीचे के रमणीय चरागाहों से भव्यतापूर्वक उभरती विशाल चट्टानी मीनारों को देखने की मेरी बारी थी। कोमिसी द्वारा पहली चढ़ाई को लगभग साठ वर्ष और इस पर्वतमाला पर पहली महिला चढ़ाई को पचास वर्ष हो चुके थे, और अब मैं ट्रे सीमा के मध्य भाग पर स्थित क्लासिक मार्ग - ग्रांडे - पर अकेले चढ़ाई करने का प्रयास करना चाहती थी।
पर्वतारोहण के शुरुआती दिनों में, चूना पत्थर मेरा पसंदीदा माध्यम था। मैंने अपनी सबसे अच्छी सहपाठी, बेब इंग्लैंड के साथ कई शामें और रविवार बिताए थे, हारबोरो और ब्रासिंगटन रॉक्स के मनमोहक, उंगलियों के आकार की दरारों वाले डोलोमाइटिक चूना पत्थर, क्रॉमफोर्ड के विलर्सले और वाइल्डकैट क्रैग्स की खड़ी ढलानों और स्टोनी मिडलटन की प्रसिद्धि का आनंद लेते हुए। इसकी सामान्य खड़ी ढलान मुझे परेशान नहीं करती थी, क्योंकि इसकी संरचना में आमतौर पर कई दरारें और चट्टानें होती थीं जो पकड़ने के लिए कई जगहें प्रदान करती थीं और मुझे चढ़ाई की जटिलता का आनंद आता था।
मुझे यह तो पता ही था कि डोलोमाइट्स एक अलग ही स्तर की पर्वतमाला हैं और मुझे स्पाइक की दोस्ताना चेतावनी याद आ गई। वह कुछ साल पहले उस इलाके में चढ़ाई कर चुका था और उसने सुझाव दिया था कि जब तक मैं उन विशाल पर्वतमालाओं पर चढ़ने के लिए तैयार न हो जाऊं, तब तक उनके आधार के आसपास टहलने का विचार टाल दूं। उसने सलाह दी थी, 'बस इधर-उधर मत घूमना और ऊपर मत देखना।'
हारबोरो पर कुछ बोल्डरिंग करने के अलावा, मैंने हाल के वर्षों में चूना पत्थर पर बहुत कम ध्यान दिया था, लेकिन फिर भी मुझे चढ़ाई करने में खुशी महसूस हुई, हालांकि शायद अपनी समग्र रॉक फिटनेस को लेकर थोड़ी चिंता थी।
एक लंबी चढ़ाई के बाद, मैं आमतौर पर कुछ दिन आराम करना और बच्चों के साथ खेलना पसंद करता हूँ। लेकिन समय कम होता जा रहा था। अब 20 अगस्त हो चुकी थी और मुझे सितंबर की शुरुआत तक म्यूनिख पहुँचना था। उससे पहले हमें डोलोमाइट्स पहुँचना था और मुझे अपनी 'बिग सिक्स' की आखिरी चोटी पर चढ़ना था। अब मुझ पर कुछ अतिरिक्त दबाव था। यह स्पष्ट हो गया था कि अगर मैं सीमा ग्रांडे पर कोमिसी मार्ग को चार घंटे से कम समय में चढ़ लेता, तो 'बिग सिक्स' की मेरी कुल चढ़ाई का समय चौबीस घंटे से कम हो जाता। यह एक आकर्षक लक्ष्य था।
तो हम धीरे-धीरे स्विट्जरलैंड से होते हुए आगे बढ़े और बर्न के बाहरी इलाके में स्थित पर्किन्स में एक शांतिपूर्ण रात बिताने के बाद, हमने ऑस्ट्रिया की ओर अपनी यात्रा जारी रखी, ब्रेनर दर्रे को पार किया और उत्तरी इटली के शांत कोने की ओर दक्षिण की ओर चल पड़े। अब ज्यादा दूर नहीं था। मिसुरिना के बाहरी इलाके में पहुँचकर हम पर्किन्स के रेडिएटर को ठंडा होने देने के लिए रुके, क्योंकि हमारे पास अभी भी

औरोंजो हट तक पहुंचने के लिए एक बहुत ही खड़ी टोल रोड है, जहां से आप ट्रे सिमे के लिए अपनी गाड़ी पार्क करते हैं।
हम आगे बढ़ते गए। सड़क ढलानदार थी और बढ़ती ही जा रही थी। ऊपर आसमान में मुझे एक इमारत की कांच की खिड़कियों पर सूरज की रोशनी दिखाई दी। लेकिन वह तो हमारी ऊंचाई से कहीं ज़्यादा ऊपर था, है ना? या फिर था भी? मोड़ बढ़ते जा रहे थे। क्या पर्किन्स इसे पार कर पाएगा? सबसे कम गियर में भी इंजन का तापमान बहुत ऊपर जा चुका था। मैं चुप था, यहाँ तक कि टॉम और केट भी शांत हो गए, संघर्ष में डूबे हुए। दो पूरे दिन पर्किन्स ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था, हमें यूरोप में खुशी-खुशी ले जा रहा था, अब उसकी सहनशक्ति की परीक्षा हो रही थी।
रात करीब 8.00 बजे हम पहुंचे और धीरे-धीरे ऑरोंजो हट के नीचे बने विशाल कार पार्किंग टेरेस पर रेंगते हुए 'कैम्पर वैन' लेवल के संकेतों का अनुसरण करने लगे।
2300 मीटर की ऊंचाई पर हवा हल्की और ताज़ा थी। चारों ओर हल्के बादल तैर रहे थे। लेकिन जैसे ही सूरज ढला, ऊंचे चट्टानी पर्वत शिखर दिखाई देने लगे और नज़ारा बेहद खूबसूरत था। वहां होना एक सुखद अनुभव था। दूर से आती गायों की घंटियों की मधुर ध्वनि सुनते हुए हम सो गए।
हम ट्रे सिमे के दक्षिणी किनारे पर ठहरे हुए थे, इसलिए अगली सुबह हमने पूर्व की ओर एक पथ-प्रदर्शक पैदल यात्रा शुरू की जो हमें फोर्सेला लारेडो तक ले जाएगी, जहाँ से हम वह देख सकेंगे जिसके लिए हम आए थे, यानी प्रसिद्ध उत्तरी ढलानें।
मौसम धुंध भरा और बादलों से घिरा था, लेकिन बीच-बीच में सूरज की किरणें फूटकर कुछ जादुई नज़ारे दिखाती थीं। विशाल चट्टानी चोटियाँ और मीनारें हरे-भरे अल्पाइन मैदानों से नाटकीय रूप से ऊपर उठती हुई दिखाई दे रही थीं। डोलोमाइट्स मेरी कल्पना से भी कहीं अधिक सुंदर थे। हम धीरे-धीरे औरोंज़ो हट के पास से घूमे और अल्पिनी चैपल के पास से चुपचाप निकल गए, जहाँ कई पर्यटक रविवार की प्रार्थना में लीन थे। लारेदो हट पर हमने अपने बैग पत्थरों और घास के बीच रखे, नाश्ता किया और दक्षिण-पूर्वी ढलानों पर रविवार को चढ़ाई कर रहे पर्वतारोहियों को देखा। फिर आगे बढ़ने का समय हो गया। हवा अब थोड़ी कम थी, लेकिन हम ट्रे सिमे के पूर्वी छोर पर स्थित फोर्सेला लारेदो दर्रे की ओर पहाड़ी पर चढ़ते चले गए। यहाँ से मुझे पहली बार सिमा ग्रांडे और सिमा ओवेस्ट के प्रसिद्ध उत्तरी भाग को देखने का मौका मिला।
ये मेरी छह सबसे बड़ी चोटियों में से आखिरी थी। और ये बहुत बड़ी और खड़ी चढ़ाई वाली थी! अगर मैंने पांचों चोटियाँ न चढ़ी होतीं, अगर मैंने इसे चढ़ने के लिए मानसिक रूप से तैयारी न की होती, तो मुझे लगता है कि मैं वापस लौट जाता और मना कर देता!
डोलोमाइट की चट्टानों पर चढ़ने का मेरा अनुभव बिल्कुल शून्य था। पिछले कुछ महीनों में मेरा रॉक क्लाइम्बिंग का स्तर बहुत ऊंचा नहीं था, और यहाँ आल्प्स की सबसे प्रभावशाली क्लासिक रॉक दीवारों में से एक थी। मैंने खुद को समझाया कि मैं

मैं इस दीवार पर चढ़ने के लिए इतनी दूर तक आया था और अब मुझे कम से कम एक बार

कोशिश तो करनी ही थी।
लेकिन पर्किन्स में दो दिन बंद रहने और पेटिट डू की तमाम कठिन दरारों और चिमनियों से उबरने के लिए मुझे चौबीस घंटे और चाहिए थे। इसलिए अगले दिन मैंने उस वाया फेराटा पर चढ़ाई की जो फोर्सेला लारेडो को लोकेटेली हट से जोड़ती है। मूल रूप से प्रथम विश्व युद्ध के दौरान इटली की रक्षा व्यवस्था के हिस्से के रूप में निर्मित, लोहे की सीढ़ियों और सुरंगों वाले ये हवादार रास्ते ऐसे दिखते हैं मानो तब से इनकी मरम्मत नहीं हुई हो, क्योंकि इनके किनारे मलबे से भरे हैं और तार जंग खा चुके हैं। लेकिन लोकेटेली हट के पीछे एक छोटी चोटी पर चढ़ने के बाद, मैं काफी तरोताजा महसूस कर रहा था। मैं अच्छी तरह से चल रहा था और ट्रे सिमे का एक और मनमोहक दृश्य देख लिया था।
मंगलवार 24 अगस्त
मैं सुबह करीब 5:30 बजे उठा, आसमान में बादल छाए हुए थे। रात में हल्की बारिश हुई थी और तेज़ हवा चल रही थी। मुझे मौसम को लेकर थोड़ी शंका थी, लेकिन बादलों को देखने के बाद मैं सुबह करीब 7:30 बजे उठा और पर्किन्स होटल से बाहर निकलकर शांति से बैठकर नाश्ता करने लगा। हालांकि आसमान लाल था, जिसे इंग्लैंड में अशुभ संकेत माना जाता है, लेकिन मौसम कुछ बेहतर लगने लगा था। साढ़े आठ बज गए थे और जाने का समय हो गया था।
फोर्सेला लारेडो पहुँचकर मैंने अपनी तैयारी शुरू की, हार्नेस कसी, हार्डवेयर क्लिप किए, अपनी केयर्नगोर्म 9 मिमी रस्सी को अल्पाइन स्टाइल में पीठ पर बाँधा, चाक बैग लगाया और कैसिन हेलमेट पहन लिया। मैंने आइसोस्टार और जॉर्डन फ्रूस्ली से अपनी ऊर्जा पूरी की और कुछ अतिरिक्त सामान, दस्ताने और हेडबैंड को अपनी कमर की थैली में रखा। मैंने अपना रकसैक बाँधा, उसे एक बड़े पत्थर के नीचे छिपाया और चल पड़ा।
जैसे ही मैं दर्रे से निकला, तीन और पर्वतारोही दिखाई दिए। मुझे चिंता हुई कि कहीं वे भी कोमिसी की ओर न जा रहे हों। मैं नहीं चाहता था कि वे मेरे ठीक पीछे, मेरी पूंछ पर हों। लेकिन दूसरी ओर, तीन लोगों की टीम इतनी धीमी गति से चलती कि उनका पीछा करना अच्छा विचार नहीं था! मैं ग्रांडे के आधार की ओर बढ़ते हुए इस समस्या पर विचार करता रहा। खुशी की बात यह थी कि जब मैं उस स्तंभ के नीचे रुका, जो चढ़ाई का आरंभ बिंदु है, तो वे मुझसे आगे निकल गए और सीमा ओवेस्ट पर एक दूसरे मार्ग की ओर बढ़ गए।
राहत महसूस करते हुए, मैंने अपना हार्नेस खोला और चढ़ाई के दौरान आखिरी बार शौचालय गया। फिर मैंने अपना विंडब्रेक उतारा और उसे अपने कमर बैग में रख लिया। अब रास्ता हवा से सुरक्षित था और

यह काम काफी मेहनत वाला होने वाला था। मैं तैयार था, शुरू करने का समय आ गया था। हमने अपनी अल्पाइन क्लब गाइड बुक एक दिन पहले खो दी थी, लेकिन सौभाग्य से जेबी ने कार पार्क में दो मित्रवत बर्लिन पर्वतारोहियों से एक जर्मन गाइड बुक उधार ले ली थी, और हमने संबंधित पृष्ठ का पता लगा लिया था जिसे मैंने एक बार फिर से पढ़ा, फिर उसे संभाल कर रख दिया और काम में जुट गया।

शुरुआती अस्सी मीटर तक चट्टान के आधार से सटे खंभे के किनारे-किनारे चढ़ाई करनी पड़ी। एक गहरी दरार कठिन चढ़ाई की शुरुआत में एक और चट्टान तक ले गई। मुझे दरार खतरनाक लगी, लेकिन मैं चढ़ाई जारी रखते हुए कठिन चढ़ाई के शुरुआती बिंदु तक पहुँच गया। दीवार की खड़ी ढलान स्पष्ट हो गई, लेकिन तीस मीटर की चढ़ाई और तय हो चुकी थी।

पहला मुश्किल हिस्सा काफी कठिन लग रहा था और अगर मेरे नक्शे पर भरोसा किया जाए तो ऐसा लग रहा था कि उसमें कुछ अहम कीलें गायब हैं। मैं कुछ और कदम चढ़कर उस जगह पहुँचा जहाँ से चढ़ाई बाईं ओर मुड़ रही थी। वह भी कठिन लग रही थी। मैं थोड़ी देर आराम करने के लिए नीचे उतरा, फिर वापस ऊपर चढ़ गया। बाईं ओर के कदम अभी भी कठिन लग रहे थे। मैं अपने अंदर से ऊर्जा आने का इंतज़ार कर रहा था।

मैं सोचने के लिए वापस चट्टान पर उतर गया। मैंने फैसला किया कि चूंकि चट्टान बहुत खड़ी थी, इसलिए मैं अपनी रस्सी को सुरक्षित रूप से नीचे खींच सकता था। इससे मुझे चलने-फिरने की अधिक स्वतंत्रता मिलेगी और रस्सी के एक सिरे को अपने सोलोइस्ट में क्लिप करके, मैं किसी भी चढ़ाई पर खुद को रस्सी के सहारे उतारने के लिए तैयार रहूंगा।

मुझे पूरी चढ़ाई को लेकर थोड़ा संदेह था। क्या पता बाकी हिस्सों से भी खूंटियां हटा दी गई हों? मैं अपनी सुरक्षा के लिए इधर-उधर लगी खूंटियों पर ही निर्भर था। मैं थोड़ा घबरा गया था। शुरुआत में थोड़ा समय लगा था, लेकिन इस बार, जब मैंने दोबारा शुरू किया, तो मुझे पता था कि भले ही मैं अभी सुचारू रूप से या अच्छी तरह से चढ़ाई नहीं कर रहा था, मैं आगे बढ़ता रहूंगा।

दबाव बढ़ता जा रहा था। मैं धीरे-धीरे चढ़ रहा था। समय तेज़ी से बीत रहा था। अगर मैं इसी धीमी गति से चलता रहा तो मैं अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर पाऊंगा। अभी बहुत कठिन चट्टानी चढ़ाई बाकी थी। मैंने बेले स्टांस पर क्लिप लगाई और एक बार फिर टोपोग्राफिक मैप का अध्ययन किया।

अगली दो पिचें एकाग्रता के चलते तेज़ी से पार हो गईं। इस तरह मैंने तीन पिचें पूरी कर ली थीं। अब आगे क्या? एक बड़ा खांचेदार कोना, जिसके पीछे एक दरार थी, देखने में मुश्किल लग रहा था, लेकिन चढ़ाई अच्छी रही। पकड़ मज़बूत थी और मैं ताकतवर था। आखिरकार लय वापस आने लगी थी। हर कदम के साथ चढ़ाई आसान होती जा रही थी, चट्टान नहीं, बल्कि मैं। यह मुश्किल होना ही था, लेकिन मुझे बहुत मज़ा आ रहा था। पिचें तेज़ी से पार होती गईं और मुझे लगा जैसे आखिरकार हालात बेहतर हो रहे हैं। मुझे लग रहा था कि मैं स्थिति को नियंत्रित कर रहा हूँ और अब मुझे किसी बात की चिंता नहीं थी।

कई कठिन चढ़ाइयाँ हैं। मैंने खुद से कहा, अपना समय लो, अपनी गति बनाए रखो और सावधानी से चढ़ाई का आनंद लो।

जेबी: मैंने और बच्चों ने आराम से नाश्ता किया। मैंने एलिसन का बैग पहाड़ी दर्रे से नीचे की ओर जाने वाले रास्ते के किनारे से लेने का इंतज़ाम किया था। केट भी टॉम की तरह चलना चाहती

थी। लेकिन उसके छोटे-छोटे पैर जल्दी थक गए और मैंने उसे अपने कंधों पर उठा लिया। टॉम हल्के कैसिन कुल्हाड़ी को छड़ी की तरह इस्तेमाल करते हुए आराम से चलता रहा। मौसम ठीक लग रहा था और जल्द ही हम पहाड़ी दर्रे पर पहुँच गए। बच्चे जानना चाहते थे कि मम्मी कहाँ चढ़ रही हैं। मैंने अस्पष्ट रूप से सीमा ग्रांडे के उत्तरी हिस्से की ओर इशारा किया। ठीक है। वे दीवारें बनाना चाहते थे। मैं तस्वीरें लेना चाहती थी और दूरबीन निकालना चाहती थी। बच्चों को पत्थरों को बाँटने के लिए झगड़ते हुए छोड़कर, मैं पहाड़ी दर्रे से नीचे भागी और जल्द ही एलिसन का बैग दिख गया। अब दूरबीन निकाल ली। वह छोटी सी दिख रही थी, लेकिन हमेशा की तरह, कठिन चढ़ाई पर तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। हम सूखी पत्थरों की दीवारें बनाने में जुट गए।

अब मैं नियंत्रण में था और फिर से खुश महसूस कर सकता था। मुझे पता था कि मैं अच्छी तरह से चढ़ाई कर रहा हूँ। मेरा आत्मविश्वास वापस आ गया और मैं तेज़ी से, बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ने लगा, और जल्द ही अंतिम खड़ी ढलानों को पार करते हुए पड़ाव स्थल की ओर बढ़ रहा था जहाँ ढलान कम हो गई थी। एक और छोटी सी चट्टान पर आराम करते हुए मुझे गैस्टन रेबुफ़ैट की कविता 'स्टारलाइट एंड स्टॉर्म' के बैंगनी अंश याद आए - 'आराम करने के लिए केवल एक चट्टान, वह भी छोटी सी...' देखते ही देखते मैं वहाँ पहुँच गया, एक विशाल लेकिन ढलान वाला पड़ाव स्थल। अब ढलान फिर से लंबवत से नीचे आ गई थी। चढ़ाई आसान हो जाएगी और मेरी गति बढ़ेगी, या नहीं? कठिन और खड़ी ढलान वाले निचले आधे हिस्से को पूरा करने में लगभग ढाई घंटे लगे थे। अब तेज़ी से आगे बढ़ने का समय था।

जेबी: मैं बीच-बीच में देखता रहा और टेलीफ़ोटो लेंस से तस्वीरें लेता रहा। बच्चे खेलते रहे और टॉम को अपने घर की छत के लिए कुछ पुरानी लकड़ियाँ मिल गईं। हवा तेज़ होने लगी और बादल घिरने लगे। हमने जल्दी दोपहर का खाना खा लिया। दर्रे पर ठंड बढ़ने लगी थी। एलिसन ने मुझे दो कारणों से बच्चों को नीचे ढलान पर न ले जाने के लिए विशेष रूप से कहा था। पहला, आवाज़ ऊपर उठती है और वह नहीं चाहती थी कि खेलते बच्चों का शोर उसे विचलित करे, और दूसरा, उसे इस बात की थोड़ी चिंता थी कि ढलान के ऊपरी हिस्से के पास पड़े ढीले पत्थर नीचे किसी पर गिर सकते हैं। मैंने दोनों बैगों को एक में पैक करने का फैसला किया और धीरे-धीरे नीचे उतरते हुए उसे दूसरी तरफ से देखता रहा।

पहाड़। एलिसन को ऊपर की ओर जाते हुए आखिरी बार तब देखा गया जब वह शिविर के किनारे से तेजी से निकलकर ऊपरी बड़े कोने में छिप गई।

आइसोस्टार का एक घूंट, स्थलाकृति का अध्ययन और फिर ऊपर स्थित विशाल छत और कोने की प्रणाली में प्रवेश करना।

मैं बाईं ओर ऊपरी कोने के पिछले हिस्से में गया और कोने के पिछले हिस्से पर चढ़ता चला गया। दूसरा कोना आ गया। मैं बाईं ओर एक गीली और फिसलन भरी चिमनी की ओर बढ़ा और फिर दाईं ओर एक और कोने में गया, लेकिन इस बार चट्टान कम थी। कहीं भी पिटॉन का निशान नहीं था! जैसे-जैसे मैं ऊपर चढ़ता गया, चट्टान ढीली और गीली होती गई। बारिश हो रही थी, बादल छाए हुए थे और पीछे की दीवार से पानी टपक रहा था।

यह एक भयानक गुफा जैसी जगह में ले जाता था, जिसके बाईं ओर एक विशाल छत थी और ऊपर एक चौड़ी, टपकती हुई लटकती हुई दरार थी जो चिपचिपी और अकल्पनीय लग रही थी।
जेबी: जब हम दर्रे से लारेडो हट की ओर नीचे उतर रहे थे, तभी बारिश शुरू हो गई और बादल और नीचे आ गए। टॉम ने बारिश के बारे में पूछा और मैंने और मम्मी ने बेपरवाही का नाटक किया। टॉम और केट हट के पास एक बड़े पत्थर पर बैठे थे और तभी ज़ोरदार बारिश शुरू हो गई। पर्यटक इधर-उधर भागने लगे, हमने अपने वाटरप्रूफ कपड़े पहन लिए।
मुझे लगा जैसे मैं एक बंद गली में आ गया हूँ। फिर भी मुझे अपनी रास्ता खोजने की क्षमता पर भरोसा था। यहीं कहीं से बाईं ओर लंबे रास्ते की शुरुआत होनी चाहिए थी और फिर रिंगबैंड से पहले सिर्फ़ दो पिच बाकी थीं, जो कठिन चढ़ाई के अंत में और शिखर से कुछ पिच नीचे स्थित एक विशिष्ट पथ है। मैंने टोपोग्राफिक मैप का ठीक-ठीक पालन किया था, इसलिए निश्चित रूप से मैं सही था। लेकिन क्या रास्ता छत के ऊपर से जाता है या नीचे से, शायद मैं बहुत ऊपर चढ़ गया था और मुझे उसके नीचे से जाना चाहिए था?
मैं लड़खड़ाते हुए बाईं ओर एक चट्टानी किनारे पर पहुँचा और नीचे और सामने देखा। चट्टान नारंगी रंग की, चमकीली और ढीली थी। मुझे जगह-जगह बिखरे हुए कुछ रस्सियों के फंदे और खूंटियाँ दिखाई दे रही थीं, लेकिन यह ठीक नहीं लग रहा था। नहीं। जहाँ मैं था, वही रास्ता होना चाहिए था। हालाँकि मैं उस रास्ते से भटक गया था, लेकिन कम से कम छत के ऊपर की चट्टान ठोस थी जिस पर चढ़कर आगे बढ़ा जा सकता था। इसलिए मैंने फैसला कर लिया। मैं छत के ऊपर से होकर आगे बढ़ूँगा, या अगर वह कोशिश नाकाम रही, तो कम से कम मैं उस गीले और फिसलन भरे खांचे-चिमनी सिस्टम में ऊपर चढ़ना जारी रख सकता था जिसमें मैं फंसा हुआ था। तेज़ बारिश हो रही थी। मैंने अपने असोलो ला जूतों के चिकने तलवों को साफ करने की कोशिश की।

मैंने एक बार फिर अपने ट्राउजर पर रॉक बूट्स पहने और ऊपर टपकती हुई दरार-चिमनी में चढ़ना शुरू किया। मैंने एक कदम बढ़ाया और मैं दृढ़ निश्चय पर था, लेकिन मुझे राहत भी मिली। चिमनी के किनारे पर मुझे कुछ चिपचिपे चाक के निशान दिखाई दिए, और मेरे ऊपर, दरार के अंदर, एक खूंटी भी थी। पानी की धारा में एक चमकदार खूंटी, मानो मेरे देखने का इंतजार कर रही हो। मैं ऊपर चढ़ता गया, जल्द ही छोटी सी छत को पार करके चिमनी से बाहर निकलकर ट्रैवर्स के किनारे पर पहुँच गया।
मानचित्र के अनुसार यह चढ़ाई IV + /AD स्तर की थी, इसलिए मैंने सोचा कि वहाँ बहुत सारे खूंटे होंगे जिनका मैं अनुसरण कर सकूँ। लेकिन नहीं, फिर से कोई खूंटे नहीं दिखे। शायद यह और ऊपर जाती हो। मैंने अपना फैसला कर लिया था, जहाँ मैं था वहाँ सब ठीक लग रहा था; खूंटे हों या न हों, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था। हालाँकि यह विशाल छत के किनारे के ठीक ऊपर बाईं ओर जाने वाली एक खुली चढ़ाई थी, लेकिन यह नीचे की खड़ी चढ़ाइयों से ज़्यादा जोखिम भरी नहीं लग रही थी। अब ज़ोरदार बारिश हो रही थी। मैं वहाँ रुकने वाला नहीं था। ऊपरी कोने का सिस्टम निचली दीवार जितना ढलानदार नहीं था और मुझे डर था कि मेरी रस्सी

कहीं फंस न जाए। हर किनारे पर पहुँचते ही मैं अपनी 9 मिमी की केयर्नगोर्म रस्सी को ऊपर खींचता, उसे फिर से लपेटता और सावधानी से इस तरह रखता कि उसका एक सिरा ऊपर रहे। चिमनी पर चढ़ते समय भी मैंने यही किया था। अब मुझे डर था कि जैसे-जैसे मैं चढ़ाई के अंत तक पहुँचूँगा और मेरे और किनारे के बीच रस्सी के वजन का चाप बढ़ता जाएगा, वह लिपटी हुई रस्सी को किनारे से खींचकर हवा में उछाल देगा और मुझे ज़ोर का झटका देगा। इस चिंता से बचने के लिए, मैंने रस्सी को ऊपर खींचा और चढ़ाई की शुरुआत में एक कील के पीछे रख दिया और आगे बढ़ गया।

जैसे ही मैं बगल की ओर बढ़ा, मेरा आत्मविश्वास एक बार फिर बहाल हो गया और निश्चित रूप से पहला छिपा हुआ पिटन खुद को प्रकट कर दिया और एक बार फिर मुझे पता चल गया कि मैं सही रास्ते पर हूं।

चढ़ाई शानदार थी! बिलकुल भी कठिन नहीं, बस एकांत का आनंद था और ट्रेवर्स के अंत में मुझे जो एकांत मिला, उसका मैंने भरपूर लुत्फ़ उठाया। रस्सी को जल्दी से समेटकर, मैंने उसे अल्पाइन शैली में अपने चारों ओर लपेटा और प्रसिद्ध रिंगबैंड तक पहुँचने के लिए अंतिम दो रमणीय पिचों को पूरा करने के लिए निकल पड़ा। पहले पर्वतारोही यहाँ से ढीली चट्टानों और नालों वाली पिचों से होते हुए शिखर तक जाते थे, लेकिन आजकल अधिकांश दल सबसे अच्छी चढ़ाई के अंत में यहीं रुक जाते हैं, फिर दक्षिण मुख की ओर ट्रेवर्स करते हुए नीचे उतरते हैं। मैंने अपनी रोलेक्स घड़ी पर नज़र डाली और राहत की एक सुखद अनुभूति हुई। हालाँकि ऊपर का यह हिस्सा धीरे-धीरे चढ़ रहा था, लेकिन इसे पूरा करने में एक घंटे से भी कम समय लगा। इस तरह मैंने पूरा रास्ता साढ़े तीन घंटे से भी कम समय में तय कर लिया था। अब मैं आराम कर सकता था। सारा दबाव हट गया था। मैं अपने लक्ष्य तक पहुँच गया था। अब बस सावधानी बरतनी थी और सुरक्षित नीचे उतरना था।

मैं दोपहर 2 बजे से ठीक पहले बारिश और बादलों के बीच रिंगबैंड पहुंचा था।

तेज़ हवा चल रही थी। वाह! अब निकलने का रास्ता। यह तो साफ़ था। एक समतल ज़मीन सीधे कोहरे में जा रही थी, जिस पर काफ़ी लोग चल चुके थे और इस रोशनी में भी, आसानी से रास्ता दिख रहा था, जैसे एक मीटर से पचास सेंटीमीटर चौड़ी कोई संकरी पट्टी हो, मानो किसी ने एक बड़ी छेनी लेकर पहाड़ की चोटी से लगभग पचास मीटर नीचे चारों ओर एक पट्टी तराशी हो। सावधानी से, मैं उस पर चलने लगा। यहाँ ज़रा सी भी चूक हुई तो 500 मीटर नीचे गिरना पड़ेगा। एक जगह मैं एक ऐसे हिस्से पर पहुँचा जहाँ छत के नीचे काफ़ी नीचा था और पट्टी ढह गई थी, इसलिए मुझे हाथों और घुटनों के बल चलना पड़ा। बिखरी हुई चाक से पता चला कि बाकी सब भी उसी तरह रेंग रहे थे। मैं छत के नीचे की खाई को पार करके रेंगता हुआ आगे बढ़ा।

अपने पैरों पर वापस खड़े होकर, मैं जल्द ही रिंगबैंड और उत्तर-पश्चिम रिज के सबसे पश्चिमी छोर पर पहुँच गया और बाईं ओर मुड़कर कम ढलान वाले दक्षिणी हिस्से की ओर मुड़ गया। तुरंत ही एक ठंडी हवा मुझे लगी। मैंने कॉपी किए गए टोपोग्राफिक मैप पर एक नज़र डाली। 'रिंगबैंड का अनुसरण करते हुए दक्षिणी हिस्से के केंद्र तक जाएँ, जब तक कि आप बिल्कुल शिखर के नीचे

न पहुँच जाएँ।' शायद अगर मैं एक हाथ दूसरे के आगे रख पाता तो मदद मिलती। ज़ाहिर है, बारिश अभी भी हो रही थी, शायद अब और तेज़! कुछ अच्छे, अच्छी तरह से इस्तेमाल किए गए बिवाक स्थलों से गुज़रते हुए, मुझे एक पत्थर का ढेर मिला जो उतरने के मार्ग की शुरुआत को चिह्नित कर रहा था। वहाँ एक बोल्ट और फिक्स्ड रस्सी लगी हुई थी, लेकिन कुछ देर नीचे उतरना ज़्यादा तेज़ लग रहा था, बीच की खाई प्रणाली से नीचे, जिस पर लाल और नीले रंग के निशान थे, एक बहुत ही चिकनी और इन परिस्थितियों में बहुत फिसलन भरी चिमनी तक। यह ग्रोहमैन-इनरकोफ़्लर दक्षिणी हिस्से की चढ़ाई का सबसे कठिन हिस्सा है और इसे ग्रेड III दिया गया है। मैंने अपनी 50 मीटर लंबी केयर्नगॉर्म 9 मिमी रस्सी पीठ से उतारी और रस्सी के सहारे नीचे उतर गया। दो और छोटी रस्सियों से उतरने और कुछ और पत्थरों के ढेर और लाल रंग की मदद से मैं नीचे उन चट्टानों से ढकी हुई कगारों तक पहुंचा जो दक्षिणी ढलान को एक तिहाई ऊंचाई पर काटती हैं।

पहाड़ की ओर मुंह करके खड़े होने पर सबसे स्पष्ट रास्ता बाईं ओर एक सीधी रेखा में जाता हुआ दिखाई दिया। जल्द ही मैंने पत्थरों के ढेर और रंग को खो दिया, लेकिन रेखा नहीं। लगभग न के बराबर दृश्यता वाली एक खड़ी दीवार के आधार पर मुझे एक सहारा मिला। मैं रस्सी से नीचे उतरा, ढीली ज़मीन पर बाईं ओर चलकर एक विशाल चट्टानी टुकड़े तक पहुँचा जहाँ पहले से ही स्लिंग लगे हुए थे, और फिर से रस्सी से नीचे उतरा। फिर एक छोटी चिमनी जैसी संरचना के शिखर तक नीचे उतरने के बाद मैं अंततः नीचे ढलान पर पहुँच गया। उतरते समय मुझे बिजली गिरने का डर था। मैंने डोलोमाइट के बिजली के तूफानों की कहानियाँ सुनी थीं, और उन्होंने ही मुझे दक्षिणी ढलान से नीचे उतरने के लिए प्रेरित किया था। लेकिन पहाड़ दयालु था। इसने एक और अकेले पर्वतारोही को अपनी पथरीली सतह पर जीवित रहने दिया और, हालांकि असंतोष से भरा हुआ था, इसने मुझे गुस्से में नीचे नहीं गिराया।

116

एक कठिन दिन की गर्मी

जेबी: हम पर्किन्स की ओर नीचे उतरे और अल्पी चैपल की छत के नीचे रुककर कुछ पीने का मन बनाया। दक्षिणी ढलान बादलों से ढकी हुई थी और बारिश और भी तेज़ हो रही थी। बच्चे पी रहे थे, तभी मैंने बादलों पर नज़र डाली। हवा के झोंके से कुछ देर के लिए बादल छंट गए और मुझे लगा कि उत्तर-पश्चिम रिज से घूमकर रिंगबैंड पार कर रही कोई छोटी सी आकृति है। शायद वो एलिसन ही थी, पर क्या मैं बस कल्पना कर रही थी? बादल फिर से घिर आए। पास में खड़े एक मददगार इतालवी ने बताया कि 2:10 बज रहे हैं। हम वापस पर्किन्स की ओर चल पड़े। मेरे कैसिन हेलमेट के नीचे मेरा सिर तो सूखा था, लेकिन मेरे पैर और तलवे पूरी तरह भीग गए थे। ज़ोरदार बारिश हो रही थी। मैं ढलान से उतरकर वापस मुख्य रास्ते पर आ गया था। भीगे हुए पर्यटक अलग-अलग दिशाओं में भाग रहे थे। मैं मूसलाधार बारिश में सड़क पर दौड़ता हुआ गया और जब जेबी ने मुझे पर्किन्स से देखा, तो मैंने उसे अंगूठा ऊपर करके इशारा किया - दो अंगूठे और चार उंगलियां। मैंने अपने छह सबसे बड़े मिशन पूरे कर लिए थे, और कुल चढ़ाई का समय तेईस घंटे पौने दो घंटे था।

गर्मी का वह दिन काफी कठिन रहा था।
117

***** अंत *****